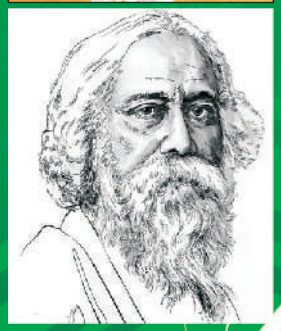

# मासिक शिविरा पत्रिका

वर्ष : 57 | अंक : 11-12 | मई-जून, 2017 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹15

सत्यमेव जयते

**प्रो. वासुदेव देवनानी**
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
प्राथमिक, माध्यमिक शिक्षा
एवं भाषा विभाग
राजस्थान सरकार, जयपुर

# धन्यवाद!

07 मई, 2017 विश्व कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर की जयन्ती है। आज ही के दिन सन् 1861 में उनका जन्म हुआ था। शिक्षा, साहित्य, संगीत, चित्रकला सहित विभिन्न कलाओं में रवीन्द्र बाबू सिद्धहस्त थे। उनकी कालजयी काव्य रचना 'गीतांजलि' को नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ था। विश्व का शिखर सम्मान नोबल पुरस्कार प्राप्त करने वाले वे प्रथम भारतीय थे। उस दौर में भारत के शिक्षा केन्द्रों में विख्यात शांति निकेतन की स्थापना उन्होंने ही की थी। भारत के राष्ट्र-गान 'जन-गण-मन अधिनायक जय हे' के रचयिता के रूप में बच्चा-बच्चा उन्हें जानता है। भारत माता के अमर सपूत महाकवि, शिक्षा मनीषी रवीन्द्रनाथ ठाकुर को सम्पूर्ण शिक्षा जगत की ओर से प्रणाम करते हुए मैं उनके पद चिह्नों पर चलने की अपील आज की पीढ़ी के शिक्षक महानुभावों से करता हूँ। वे शिक्षा प्रेमी और सही मायने में एक शिक्षक थे।

शिक्षा सत्र 2016-17 अपनी यात्रा पूर्ण कर अब अवसान की ओर है। पीछे मुड़कर जब मैं देखता हूँ तो प्रवेशोत्सव, नामांकन, जनसंपर्क, जन-सहयोग, शिक्षण, अधिगम, उत्सव-पर्व, खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम, परख-परीक्षाएँ, मिशन मेरिट, पी.टी.एम., स्वच्छता, दीपावली पर दीपदान, मध्यावधि व शीतकालीन अवकाश में कक्षाएँ लगाने जैसे अनेक कार्य दृष्टिपटल पर उभर आते हैं। शिक्षा विभाग के लिए यह वर्ष उपलब्धियों से सराबोर रहा है। मैं अपनी प्रसन्नता को व्यक्त करने के लिए इन्हें मात्र दोहरा रहा हूँ, आप और हम सब इनसे परिचित हैं। उत्कृष्टता की ओर हमारे कदम लगातार बढ़ते रहें, बस मैं यही चाहता हूँ।

ग्रीष्मावकाश दिनांक 10 मई, 2017 से शुरु हो रहा है जो 18 जून, 2017 तक रहेगा। इस प्रकार दस-ग्यारह माह तक चले शिक्षण-अधिगम यज्ञ की पूर्णाहुति होकर देशाटन एवं आराम के लिए हमारे शिक्षक-शिक्षार्थी प्रवृत्त होंगे। दरअसल यह समय स्वयं के लिए पुनर्बलन (Recahrge) करने का समय है। यह समीक्षा एवं नियोजन का समय भी है। हमने निवर्तमान हो रहे सत्र 2016-17 के प्रारंभ में क्या-क्या योजनाएँ बनाई थीं, क्या वादे किए थे, मन ही मन क्या संकल्प लिए थे और इन्हें पूरा करने में कहाँ तक सफल हो पाए, की ईमानदारी के साथ समीक्षा करनी चाहिए और अगले सत्र 2017-18 के लिए विस्तृत वस्तुनिष्ठ एवं स्पष्ट कार्ययोजना इस अवधि में बनानी चाहिए। जो समय पर समग्र चिंतन करते हुए अपनी योजनाएँ बनाकर उनकी क्रियान्विति की समयबद्ध रूपरेखा बनाते हैं तथा संकल्पबद्धता के साथ उस पर अमल करते हैं, सफलता निश्चय ही उनका वरण करती है। पश्चाताप व खेद प्रकट करना उनके खाते में रहता है जो समय की चाल को नहीं समझते तथा प्रमाद व लापरवाही में समय व्यतीत कर देते हैं। एक-एक क्षण बेशकीमती और अवर्णनीय फल देने की ताकत रखता है लेकिन आवश्यक यह है कि हम उसका पूर्ण सदुपयोग करें। समय का अपना एक विधान है जिसकी पालना करना हम सबका कर्त्तव्य है।

शिविरा पत्रिका के 57वें वर्ष का यह अन्तिम अंक है। अगला अंक जुलाई 2017 में प्रकाशित होगा। 'अपनों से अपनी बात' स्तम्भ के साथ हम हर महीने मिलते रहे हैं। मैं इस वर्ष की शानदार यादों को हृदय में संजोकर मेरी 'टीम एज्यूकेशन' के सभी महानुभावों-अधिकारियों, शिक्षकों, कर्मचारियों, छात्र-छात्राओं, अभिभावकों, जन प्रतिनिधियों एवं दानदाताओं के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करते हुए अगले सत्र में भी इसी लोक संग्रही-मंगलमयी उदात्त भावना के साथ कार्य करते रहने की अपेक्षा एवं अपील उनसे करता हूँ और मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप इसमें खरे उतरेंगे। हम जिस युग में जी रहे हैं, वह असाधारण युग है। इसमें जो जितनी साधना करेगा, उसे उतना फल मिलकर ही रहेगा। इसलिए हमें निरन्तर कर्मशील बने रहना चाहिए।

साथियों, किसी भी 'सिस्टम' में नियम एवं प्रक्रिया महत्त्वपूर्ण होती है। इसे 'ऑपरेट' करने का कार्य व्यक्ति करता है। इसलिए प्रत्यक्ष में व्यक्ति ही दिखाई देता है। ऐसे में व्यक्ति का 'रोल' बड़ा महत्त्वपूर्ण होता है। एक व्यक्ति के रूप में आप कितना बड़ा अथवा कितना उपयोगी अवदान कर सकते है, यह जरूरी नहीं है। जरूरी यह है कि हम सच्चे मनोभाव से उस पावन यज्ञ में आहुति दें और जो उत्तरदायित्व हमें मिला है उसका पूर्ण समर्पण एवं प्रतिबद्धता के साथ निर्वहन करें। रोशनी एवं ऊर्जा के मामले में सूरज एवं दीये का उनके आकार एवं क्षमता की दृष्टि से कोई साम्य नहीं है लेकिन भावना की योग्यता के बल पर सूरज के साथ माटी के दीये की तुलना की जाती है। माटी का एक दीया सूरज का विकल्प अपने मंगल भाव के कारण बन सकता है। इसी संदर्भ में रवीन्द्र बाबू की रचना के साथ मैं अपनी बात समाप्त करना चाहता हूँ-

सांध्य रवि ने कहा-
मेरा स्थान लेगा कौन,
सुनकर सारा जगत रह गया
निरुत्तर और मौन
तभी एक माटी के दिए ने
कहा बड़ी विनम्रता के साथ-
जितना हो सकेगा, मैं करूँगा नाथ।

ग्रीष्मावकाश 2017 के सुखमय होने की अनेकानेक शुभकामनाओं के साथ-

(प्रो. वासुदेव देवनानी)

> "जो समय पर समग्र चिंतन करते हुए अपनी योजनाएँ बनाकर उनकी क्रियान्विति की समयबद्ध रूपरेखा बनाते हैं तथा संकल्पबद्धता के साथ उस पर अमल करते हैं, सफलता निश्चय ही उनका वरण करती है।"

मासिक

# शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 57 | अंक : 11-12 | वैशाख-ज्येष्ठ-आषाढ़ २०७४ | मई-जून, 2017



प्रधान सम्पादक
**बी.एल. स्वर्णकार**

वरिष्ठ सम्पादक
**प्रकाश चन्द्र जाटोलिया**

सम्पादक
**गोमाराम जीनगर**

सह सम्पादक
**मुकेश व्यास**

प्रकाशन सहायक
**नारायणदास जीनगर**
**रमेश व्यास**



मूल्य : ₹ 15

**वार्षिक चंदा दर व शर्तें**

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 75
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 150
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 200
- मनीऑर्डर/बैंक ड्राफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।



**पत्र व्यवहार हेतु पता**
**वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका**
**माध्यमिक शिक्षा राजस्थान**
**बीकानेर-334 011**
दूरभाष : 0151-2528875
फैक्स : 0151-2201861
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in



शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **-वरिष्ठ संपादक**


## इस अंक में


**दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ**

- नवीन शिक्षा-सत्र : नवोत्साह 5

**आलेख**

- ढाई आखर प्रेम का.... 6
  **डॉ. शिवराज भारतीय**
- प्रताप का अभ्युदय : मेवाड़ का वरदान 9
  **प्रकाश वया**
- भारतीय इतिहास का स्वर्णिम अध्याय 11
  **विजय सिंह माली**
- प्रकृति और सामाजिक संदर्भ से दूर न हो शिक्षा 14
  **डॉ. दुर्गा भोजक**
- बढ़ता वैश्विक तापमान, घटती धरातलीय आर्द्रता और पर्यावरण संरक्षण 15
  **बल्लूराम मीणा**
- भारतीय संस्कृति में पर्यावरणीय संरक्षण 19
  **डॉ. गिरीशदत्त शर्मा**
- योग व खेलों में दक्षता बढ़ाना 20
  **मोहम्मद इदरीस खान**
- खुशहाल जीवन में योग का स्थान 33
  **सुभाष चन्द्र कस्वाँ**
- एक माँ का पत्र 34
  **डॉ. रेणुका व्यास 'नीलम'**
- नागार्जुन की यथार्थ चेतना एवं लोक दृष्टि 36
  **हेमन्त गुप्ता 'पंकज'**
- दिव्य विचार शिक्षकों के लिए ध्यान 38
  **तरुण कुमार सोलंकी**
- दोहा छंद एवं उसके प्रकार 39
  **मुहम्मद कुरैशी 'निर्मल'**
- जम्बूरी में हुआ महाकुंभ सा अहसास 41
  **राकेश टांक**

**रपट**

- डिजिटल एज्यूकेशन की दिशा में बढ़ता कदम 42
  **अमित शर्मा**
- जिसने हर किसी का मन मोह लिया 44
  **प्रकाश चन्द्र जाटोलिया**

**बोध कथा**

- 'यशोदा-माँ' का सम्मान 43
  संकलन : **प्रदीप कौशिक**

**इस मास का गीत**

- भारत के रणवीरों को जो 18
  संकलन : **सुमेरसिंह बारेठ**
- चेतावणी (मायड़ रो हेलो) 12
  **कन्हैयालाल सेठिया**
  संकलन : **जयप्रकाश राणा**
- झाँसी की रानी 13
  **सुभद्रा कुमारी चौहान** (साभार)

**स्तम्भ**

- पाठकों की बात 4
- शिविरा पञ्चाङ्ग : मई-जून, 2017 10
- आदेश-परिपत्र 21-32
- हमारे भामाशाह 50
- व्यंग्य चित्र : **रामबाबू माथुर** 48

**पुस्तक समीक्षा** 46-49

- दो फाड़ : कवि-बी.के. व्यास
  समीक्षक-**डॉ. रामरतन लटियाल**
- वक्त की ठण्डी रेत पर :
  कवयित्री-डॉ. कृष्णा आचार्य
  समीक्षक-**संजय आचार्य 'वरुण'**
- सेल्फियाए हैं सब :
  लेखक-प्रमोद कुमार चमोली
  समीक्षक-**डॉ. मदन गोपाल लढ़ा**


**मुख्य आवरण :**
**नारायणदास जीनगर, बीकानेर**

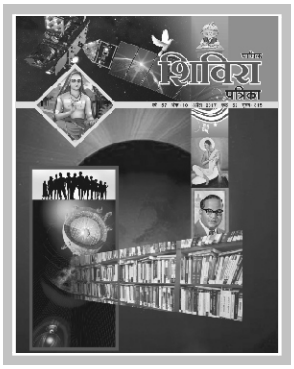


▼ *चिन्तन*

**धनार्जने यथा बुद्धेरपेक्षा**
**व्ययकर्मणि।**
**ततोऽधिकैवसापेक्ष्या**
**तद्यौचित्यस्य निश्चये।।**

**(प्रज्ञो., प्र.मं. अ.4. 54)**

**अर्थात्- धन कमाने में जितनी बुद्धिमता की आवश्यकता होती है उससे अनेक गुनी व्यय के औचित्य का निर्धारण करते समय लगनी चाहिए।**

## पाठकों की बात

- 'शिविरा' शिक्षा विभाग, राजस्थान की एक पुरानी तथा प्रसिद्ध पत्रिका है। सम्पादक मंडल के परिश्रम एवं अथक प्रयास से यह शिक्षा अधिकारी, शिक्षक, विद्यार्थी एवं अन्य अध्येताओं के लिए उत्तरोत्तर उपयोगी रूप ग्रहण कर रही है। अपने संक्षिप्त कलेवर में सामग्री वैविध्य का प्रयास 'गागर में सागर' भरने के समान है। अप्रैल, 2017 का अंक देखकर प्रसन्नता हुई। दिवस विशेष पर प्रकाशित गीत तथा 'इस माह का गीत' जैसे स्तम्भ हिन्दी की छंदोबद्ध रचनाएँ प्रस्तुत कर हिन्दी कविता के प्रति विशेष रुचि उत्पन्न कर रहे हैं। साहित्य, विज्ञान, चिकित्सा, शिक्षा तथा सामाजिक समस्याओं आदि पर सामग्री प्रकाशित होना उपयोगिता एवं विभिन्नता की दृष्टि से सराहनीय है।

  **गोपेश शरण शर्मा 'आतुर',** जयपुर

- अप्रैल शिविरा 2017 का अंक मिला। मुख पृष्ठ पर डॉ. अम्बेडकर, सूरदास जी, जगद्गुरु शंकराचार्य के चित्रों द्वारा आकर्षक सजावट के लिए धन्यवाद। साथ ही शहादत व वीरता के प्रतीक जलियाँवाला बाग का परिचय देश की आन, बान और शान में चार चाँद लगाने वाला था। श्रीमान् शिक्षामंत्री द्वारा विद्यालय पत्रिका प्रकाशन एवं निदेशक महोदय का दिशाकल्प प्रवेशोत्सव के द्वारा एक बार फिर से जन चेतना जाग्रति का आह्वान प्रेरणाप्रद लगा। श्री शशिकांत द्विवेदी 'आमेटा' द्वारा 'पुस्तकें भाग्य विधाता' लेख बहुत ही सारगर्भित एवं मन को आन्दोलित करने वाला लगा। लेखक ने अपने शिक्षक जीवन के कटु अनुभव द्वारा पुस्तकालय के सार्थक एवं प्रभावी उपयोग का मार्गदर्शन दिया जो समस्त राजस्थान के शिक्षकों के लिए पठनीय, अनुकरणीय है। पुस्तक समीक्षा में डॉ. विष्णुदत्त जोशी समीक्षित और कुरेशी साहब द्वारा अनुवादित 'राजस्थानी गीता मानस' एवं श्री एस.एन. शर्मा द्वारा 'शिक्षा और रोजगार' की समीक्षा मार्गदर्शक एवं प्रेरणाप्रद लगी। अति उपयोगी एवं सारगर्भित अंक, संकलन के लिए संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई एवं भविष्य में भी इसी प्रकार की अति उपयोगी जानकारी की आशा के साथ आपका हार्दिक आभार।

  **हजारीराम विश्नोई,** आऊ, जोधपुर

- 'अपनों से अपनी बात' का 22वाँ पुष्प सूंघा। इसका रसास्वादन किया। सुगंधित महक का अनुभव किया। बहुत अच्छा लगा। एक सद् वाक्य आता है-ऐसा काम करो जिसे लोग याद करें या ऐसा लिख जाओ जिसे लोग पढ़ें। 'सृजन के आयाम' आदरणीय श्री वासुदेव देवनानी शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) यही संकेतित कर रहे हैं कि बच्चों में सृजन के विभिन्न आयामों के प्रति अभिरुचि जाग्रत करें, ताकि वे भविष्य में श्रेष्ठ साहित्यकार, संगीतज्ञ, खिलाड़ी आदि बन सकें और आने वाली पीढ़ियाँ उन्हें याद करें। इस हेतु उन्होंने हर विद्यालय में विद्यालय पत्रिका प्रकाशित करने हेतु निर्देश व सुझाव दिया है। अब गेंद आदरणीय शिक्षकों के पाले में है। मंत्री महोदय का सकारात्मक सोच है कि यह स्तंभ एक मार्गीय न होकर द्वि मार्गीय हो। प्रशंसनीय सोच है। एक ही एक कहता रहे दूसरे पक्ष से न कोई प्रतिक्रिया न कोई शंका हो, तो वह असरकारी नहीं हो सकता। इस सुझाव व निर्देशन सम्बद्ध शंकाएँ आने वाली कठिनाइयाँ प्रस्तुत की जाए तो यह स्तम्भ बेहतर उपादेय होगा। इस ओर हम गौर करें और इस स्तम्भ को नया स्वरूप देने की ओर बढ़ें।

  **टेकचन्द्र शर्मा,** झुंझुनूं

- 'शिविरा' का अप्रैल 2017 का अंक नये आकर्षण व कलेवर के साथ समय पर उपलब्ध हुआ। **'अपनों से अपनी बात'** में हमारे माननीय शिक्षा मंत्री जी ने छात्र छात्राओं में सृजनशीलता विकसित करने के बहाने 'विद्यालय पत्रिका' प्रत्येक विद्यालय में प्रकाशित करने का आह्वान किया है। निःसन्देह विद्यार्थियों में रचनाशीलता व साहित्य के प्रति लगाव बढ़ेगा। 'पृथ्वी दिवस' पर प्रकाशित विशेष आलेख सम्पूर्ण पृथ्वी की जानकारी पाठकों के सामने रखने में कामयाब हुआ है। पृथ्वी दिवस पर स्वच्छ भारत निर्माण का आह्वान विद्यार्थी वर्ग के सहयोग से ही पूर्ण हो सकता है। पर्यावरण संरक्षण की शिक्षा व अपने ग्रह के बारे में जानने की जिज्ञासा और बलवती होगी। प्रत्येक दिवस पृथ्वी दिवस होना प्रासंगिक होगा। अम्बेडकर जयंती पर विशेष आलेख महामानव डॉ. भीमराव अम्बेडकर के महान कार्यों की याद दिलाता है। डॉ. साहब सामाजिक समानता के हिमायती थे। स्थायी स्तम्भ यथा आदेश परिपत्र, पुस्तक समीक्षा, चतुर्दिक, शाला प्रांगण से मासिक गीत भी अपनी नवीन पृष्ठ भूमि के साथ पाठकोपयोगी है। दिनों दिन शिविरा का रूप निखरता जा रहा है। पूरी टीम को बधाई। स्तरीय रचनाएँ ही साहित्यिक विकास में महत्त्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध करवाती है।

  **रामजीलाल घोड़ेला,** आडसर, बीकानेर

- शिविरा अप्रैल के अंक में मुझे सबसे अच्छा लेख जल संसाधन दिवस विशेष पर 'जल संसाधन रिक्तता का कारण है वन-विनाश' लगा। यह बात सत्य है कि बढ़ती विश्व जनसंख्या, बढ़ता जल उपयोग, बढ़ते भौतिक संसाधन वनों की कटाई की तरफ बढ़ रहे हैं। जिससे पर्यावरण असंतुलन बढ़ता ही जा रहा हैं। इसे रोकना बहुत जरूरी है अन्यथा तो विनाश दूर नहीं? हमें घर से ही जल संरक्षण की शुरूआत प्रारम्भ करनी चाहिए। शिक्षकों को भी अपने विद्यार्थियों को जल संरक्षण का महत्त्व एवं उसकी उपयोगिता के बारे में जानकारी देनी चाहिए। बच्चे जल संरक्षण में अहम भूमिका निर्वाह कर सकते हैं तभी कल हमारा सुरक्षित हो सकेगा। इन्हीं अपेक्षाओं के साथ।

  **स्नेहलता शर्मा,** जयपुर

सत्यमेव जयते

**बी.एल. स्वर्णकार**
**निदेशक, माध्यमिक शिक्षा**

**दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ**

# नवीन शिक्षा-सत्र : नवोत्साह

नवीन शिक्षा-सत्र के शुभारम्भ पर शिक्षा विभाग परिवार के सभी सदस्यों को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ!!! आप सभी के अथक प्रयासों और कठोर परिश्रम का ही सुफल है कि विद्यालय स्तर पर श्रेष्ठ परीक्षा परिणाम आए हैं।

नवीन शिक्षा-सत्र में प्रभावी रूप से प्रवेश प्रक्रिया प्रवेशोत्सव के प्रथम चरण 26 अप्रैल से आरम्भ हो गई है। अपूर्व उत्साह और उमंग के साथ विद्यालयों में नामांकन कार्य चल रहा है। संस्थाप्रधान, शिक्षक, अभिभावक सभी मिलकर श्रेष्ठ शैक्षिक वातावरण बना रहे हैं। प्रत्येक पढ़ने योग्य बालक-बालिका को विद्यालय में प्रवेश दिलाना और आनन्ददायी शिक्षा देना हमारा पहला उद्देश्य है। शाला विकास एवं प्रबंधन समिति (SDMC) के मार्गदर्शन और अभिभावक अध्यापक परिषद (P.T.A.) के प्रभावी प्रबोधन के बाद प्रत्येक विद्यालय स्तर पर **विद्यालयी पूर्व विद्यार्थी मंच** का गठन किया गया है। यह मंच अपने आत्मीय पूर्व विद्यार्थियों के साथ '**सखा संगम**' जैसे आयोजन कर विद्यालय को शैक्षिक, सांस्कृतिक, भौतिक और प्रत्येक दृष्टि से समृद्ध करेगा। विद्यालय भी अपने पूर्व विद्यार्थियों का सहयोग लेकर उनके प्रति सम्मान प्रकट कर स्वस्थ सकारात्मक वातावरण का निर्माण करेगा।

विद्यालयों में 10 मई से 18 जून तक ग्रीष्मावकाश रहेगा। विद्यार्थी अवकाश के समय का बेहतर उपयोग करें। पर्यटन, भ्रमण के साथ-साथ स्वास्थ्य का भी विशेष ध्यान रखें। शिक्षक ग्रीष्मावकाश में प्रशिक्षणों का भरपूर आनन्द लें, नई शिक्षण विधियों और नवाचार को अपनाकर अपने शिक्षण कौशल को पारंगति प्रदान करें। स्वाध्याय भी निरन्तर करते रहें।

प्रवेशोत्सव का दूसरा चरण माध्यमिक शिक्षा में 19 से 30 जून और प्रारम्भिक शिक्षा में 20 जून से 5 जुलाई तक रहेगा। प्रवेशोत्सव का दूसरा चरण भी प्रभावी हो, ऐसा प्रयास हम सभी को करना है। विद्यालयों में संस्थाप्रधान और विषय अध्यापकों की कोई कमी नहीं रहे ऐसी व्यवस्था नियमित डी.पी.सी. और काउन्सलिंग से पदस्थापन देकर निरन्तर की जा रही है।

रविन्द्रनाथ ठाकुर की जयन्ती 7 मई और भामाशाह जयन्ती 28 जून को है। महापुरुषों का जीवन चरित्र हमारी प्रेरणा बने, हम उनके बताए मार्ग को समझें; तदनुसार कर्त्तव्य का पालन करें। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून और अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून को है। पर्यावरण के प्रति संवेदनशील हो कर और योग के बल पर आगे बढ़ कर ही हम स्वस्थ सुखी जीवन की कल्पना कर सकते हैं।

**सभी के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामना के साथ...!**

**(बी.एल. स्वर्णकार)**

> "अपूर्व उत्साह और उमंग के साथ विद्यालयों में नामांकन कार्य चल रहा है। संस्था प्रधान, शिक्षक, अभिभावक सभी मिलकर श्रेष्ठ शैक्षिक वातावरण बना रहे हैं। प्रत्येक पढ़ने वाले बालक-बालिका को विद्यालय में प्रवेश दिलाना और आनन्ददायी शिक्षा देना हमारा पहला उद्देश्य है।"

## कबीर जयन्ती

# ढाई आखर प्रेम का....

❒ डॉ. शिवराज भारतीय

हिन्दी साहित्य की संत परम्परा के अग्रगण्य कवि कबीर एक कवि होने से पहले महान समाज सुधारक, युगद्रष्टा व क्रान्तिकारी अधिक थे। कबीर भक्ति आन्दोलन के ऐसे अनूठे व्यक्तित्व हैं जिन्होंने लोककल्याण, धार्मिक व सामाजिक सुधार एवं कर्म प्रधान समाज की पैरवी की, जाति-पाँति के कठोर बंधनों को तोड़ने का प्रयास किया, धर्मान्धता, रुढ़िवादिता पर प्रबल प्रहार करते हुए ढाई आखर प्रेम के पढ़ाने का प्रयास किया।

कबीर का जीवनवृत्त अनुश्रुतियों व किंवदन्तियों पर आधारित है। जनश्रुति के अनुसार वे रामानन्द जी के आशीर्वाद से जन्मे एक विधवा ब्राह्मणी के पुत्र थे। रामानन्दजी ने यह ध्यान न देते हुए कि उन्हें नमस्कार करने वाली स्त्री विधवा है, उसे पुत्रवती होने का आशीर्वाद दे दिया। लोकलाज के भय से ब्राह्मणी ने बालक को बनारस के समीप तालाब के किनारे छोड़ दिया जिसका लालन-पालन नीरु व नीमा नामक निःसंतान जुलाहा दम्पत्ति ने किया। कबीर पंथियों के अनुसार कबीर साहिब के कोई सांसारिक माता-पिता नहीं थे, उन्होंने आकाश से एक ज्योति के रूप में उतरकर बालक का रूप धारण कर लिया। परन्तु संत रविदास, गुरु अमरदास, रज्जब जी आदि सन्तों ने स्पष्ट लिखा है कि कबीर साहिब ने एक मुस्लिम जुलाहा परिवार में जन्म लिया। 'जुलाहा गर्भे उत्पन्नो साध कबीर' (रज्जब वाणी, साध महिमा), चेतन दास कृत ग्रंथ 'प्रसंग परिजात' में कबीर को नीरु-नीमा नामक जुलाहे की संतान व गुरु रामानंद का शिष्य बताया गया है। 'गुरु ग्रंथ साहिब' में कबीर व नानक के समकालीन होने का उल्लेख मिलता है। नाभादास कृत भक्तमाल के आधार पर कबीर के बारे में निम्नांकित दो जानकारियाँ मिलती है (i) कबीर सिकन्दर लोदी के समकालीन थे तथा सिकन्दर लोदी ने उन पर अत्याचार किए थे।

(ii) कबीर गुरु रामानंद के शिष्य थे।

कबीर का जन्म ज्येष्ठ सुदी पूर्णिमा सं.

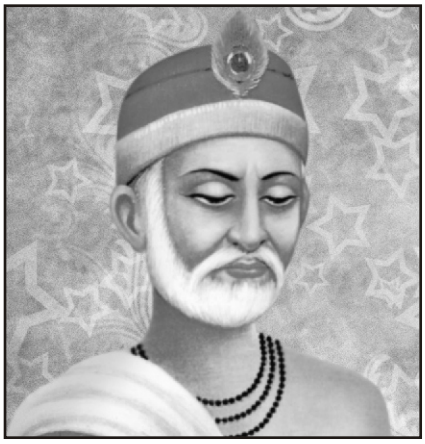

1455 माना जाता है। इस संदर्भ में एक उक्ति भी लोक प्रचलित है-

**चौदह सौ पचपन साल गए,**
**चन्द्रवार एक ठाठ ठए।**
**ज्येष्ठ सुदी बरसायत को,**
**पूरनमासी प्रकट भए।**

बचपन से ही कबीर दयालु और कोमल हृदय के थे। दूसरे को दुःखी देखकर उसकी हर संभव सहायता कर देते। सर्दी के दिनों में अपने पिता की सहायता करते काम-धंधे में सहयोग करते हुए बाजार में कपड़ा बेचने गए। रास्ते में ठण्ड से ठिठुरता एक गरीब वृद्ध मिला। कबीर ने वह सारा कपड़ा उसे ओढ़ा दिया। शाम को खाली हाथ घर लौट आए। अपने पिता की नाराजगी और डाँट चुपचाप सह ली।

कबीर गृहस्थ होते हुए भी फक्कड़ थे। उनकी पत्नी का नाम लोई था। पुत्र का नाम कमाल व पुत्री का नाम कमाली था। उन्होंने अपने कमाऊ पूत को भी कपूत कहने में गुरेज नहीं किया, जो हरि सुमिरन छोड़कर धनमाल के पीछे दौड़ लगा रहा था-

**बूढ़ा वंश कबीर का उपजा पूत कमाल।**
**हरि का सुमिरन छांडि के घर ले आया माल।।**

**जात-पाँत पूछे नहिं कोई-**

कबीर क्राँतिकारी थे। उनकी वाणी समाज की विषमताओं के बीच आज भी समानता का संदेश देती है। 'मैं कहता आंखन की देखी, तू कहता कागद की लेखी' कहकर उन्होंने हर उस कर्मकाण्ड का विरोध किया जो उन्हें बुरा लगा। वे मानवतावादी थे और मानव को मानव के रूप में ही स्थापित करना चाहते थे। जात-पाँत, ऊँच-नीच के भेदभाव के प्रबल विरोधी थे-

**एक जोति से सब उतपनाँ,**
**कौन बाम्हन कौन सूदा।।**

कबीर कहते हैं कि आत्मा की कोई जाति नहीं है, सभी जीव उस परम पिता की संतान हैं, परम ज्योति से उत्पन्न हुए हैं, न कोई उच्च है न कोई नीच, सब समान है। एक ही मिट्टी के बने पुतलों में से कोई खुद को एक जाति का कहता है तो कोई दूसरी किसी अन्य जाति का। कबीर कहते हैं-'बेगर बेगर नाम धराये, एक माटी के भांडे।' उन्होंने अपने जीवनकाल में कभी किसी व्यक्ति को जाति के आधार पर ऊँचा या नीचा नहीं माना। उनके अनुसार कोई भी मनुष्य नीचा नहीं है, अगर कोई नीचा है तो वही है जिसके हृदय में प्रभु की भक्ति नहीं है,-'कहै कबीर मद्धिम नहीं कोई, सो मद्धिम जा मुखि राम न होई।' जब स्वयं ईश्वर की ही कोई जाति नहीं है तो उसके भक्तों की क्या जाति हो सकती है। मनुष्यों को जात-पाँत के कीचड़ में नहीं डूबना चाहिए-

**जात नहीं जगदीश की, हरि-जन की कहाँ होय।**
**जात पाँत के कीच में, डूब मरो मत कोय।।**

ईश्वर को जाति से कोई लेना-देना नहीं है, जो उसका सुमिरण करता है वही उसको प्यारा है-

**'जात-पाँत पूछे नहीं कोई,**
**हरि को भजै सो हरि का होई।'**

**साध सिद्ध बड़ अंतरा-**

कबीर ने बाह्याडंबरों का प्रखर विरोध किया। साधु के वेश में असाधु का काम करने वालों की उन्होंने घोर निन्दा की। इच्छाओं के दास, वासनाओं के पुजारी साधु-नामधारियों की वेशभूषा को देखकर कबीर को बड़ा क्षोभ हुआ।

आचरण से असाधुओं की भर्त्सना करते हुए कबीर ने लिखा है–

**कबीर भेष अतीत का, करतूति करे अपराध।**
**बाहरि दीसे साध गति, मांहै भहा असाध।।**

कबीर ने सच्चे साधुओं की तुलना आम से व बहिर्मुखी साधुओं (असाधुओं) की तुलना बबूल से की है–

**साध सिद्ध बड़ अंतरा, जैसे आम बबूल।**
**वा की डारी अमी फल, या की डारी सूल।।**

**अपनी राह चलो भाई**–कबीर धार्मिक कट्टरता के भी विरोधी थे। उस समय जो संघर्ष समाज में चल रहा था। कबीर उसकी भयानकता को भली भाँति समझ चुके थे। उन्होंने हिन्दू-मुसलमानों को सामाजिक सद्भाव का संदेश दिया–

**कहे कबीरा दास फकीरा, अपनी राह चलो भाई।**
**हिन्दू तुरक का करता एकै ता गति लखी न जाई।।**

कबीर इन दोनों ही जातियों से अलग एक ऊँचे धरातल पर खड़े थे जहाँ से केवल मानवता के ही दर्शन होते थे। कबीर सबको मनुष्य और केवल मनुष्य ही मानते थे। उन्होंने इन दोनों कौमों को फटकारने में भी कोई कसर नहीं छोड़ी–

**'हिन्दुअन की हिन्दुआई देखी,**
**तुरकन की तुरकाई।**
**अरे इन दोउन राह न पाई।'**
**'जो तू तुरक तुरकनी जाया,**
**भीतर खतना क्यों न कराया**
**जो तू ब्राह्मन ब्राह्मनी जाया तो**
**आन बाट ते क्यों नहीं आया।'**

कबीर के युग में हिन्दू और इस्लाम ये दो सम्प्रदाय ही व्यापक प्रभाव वाले थे। इन दोनों की रूढ़ियों पर कबीर ने प्रहार किया। कबीर ने बगैर किसी झिझक के मूर्तिपूजा, तीर्थ यात्रा, उपवास, काया क्लेश, नमाज, रोजे आदि का विरोध किया।

**ब्रहमन गिआस करहि चउबीसा काजी महरमजाना।**
**गिआरह मास पास कै राखे एकै माहि निधाना।।**
**पाहन पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूं पहार।**
**ताते या चाकी भली, पीस खाए संसार।।**
**कांकर पाथर जोड़ के मस्जिद लई चिनाय।**
**ता चढ़ि मुल्ला बांग दे, क्या बहिरा हुआ खुदाय।।**

**निर्गुण राम जपहु रे भाई**

कबीर के राम लोक परम्परा के राम नहीं हैं, विष्णु के अवतार दशरथ सुत राजा रामचन्द्र नहीं है। कबीर के लिए राम नाम का मर्म दूसरा ही है– 'दशरथ सुत तिहुँ लोक बखाना, राम नाम का मरम है आना।' इसी प्रकार जिस राम नाम की महिमा कबीर ने की है वह मन, बुद्धि व इन्द्रियों की पहुँच से परे है। कबीर के राम अनुभव की वस्तु है, विद्या और तर्क से परे है। उस नाम को बोलकर या लिखकर नहीं समझ सकते–

**है कोई राम नाम बतावै,**
**वस्तु अगोचर मोहि लखावै।**
**राम नाम सब कोई बखाने,**
**राम नाम का मरम न जाने।।**

कबीर ने स्पष्ट कहा है कि चारों वेद, स्मृतियाँ, पुराण तथा व्याकरण कोई भी निर्गुण राम का पता नहीं बताता। उस अविगत की गति को कोई नहीं जानता–

**निर्गुण राम जपहु रे भाई,**
**अविगत की गति लखी न जाई**
**चारि वेद औ सुम्रित पुराना,**
**नौ व्याकरना मरम न जाना।**

कबीर के अनुसार काजी कुरान की व पण्डित वेद-पुराण व अन्य धर्मशास्त्रों की व्याख्या कर सकते हैं किन्तु उस अदृश्य अविनाशी नाम का ज्ञान उन्हें भी नहीं है–

**काजी कथे कतेब कुराना, पंडित वेद**
**पुराना।**
**वह अच्छर तो लखा न जाई,**
**मात्रा लगे न काना।।**

राम का नाम जपने का अभ्यास ही परमात्मा की सच्ची पूजा है। यह आत्मा को परमात्मा से जोड़ने वाला तार है। नाम जप ही वह मार्ग है जिस पर चलकर आत्मा को स्थायी शान्ति प्राप्त करके आनन्द धाम में पहुँच सकती है। शब्द के अभ्यास से ही मन पवित्र होता है। यही वह भक्ति या पूजा है जो मालिक के दरबार में मंजूर होती है। लोग इस आंतरिक पूजा को छोड़कर बहिर्मुखी पूजा में उलझे रहते हैं–

**जे पूजा हरि नाहीं भावै,**
**सो पूजनहार चढ़ावै।**
**निहि पूजा हरि भल मानैं,**
**सो पूजनहार न जानैं।।**

**बालम आओ हमारे गेह रे**

कबीर की भक्ति भाव धारा में भारतीय व सूफी काव्य परम्परा दोनों का सुन्दर मिश्रण है। सूफी प्रेम तत्त्व का सम्बन्ध दाम्पत्य भावना से है। कबीर साहिब ने अनेक पदों में अपने आपको 'राम की दुलहिन' 'राम की बहुरिया' कहा है। अपने विरह के पदों में वे एक पति से बिछुड़ी हुई दुलहिन के समान अपनी प्रेम की पीड़ प्रकट करते हैं–

**बालम, आओ हमारे गेह रे।**
**तुम बिन दुखिया देह रे।**
**सब कोई कहे तुम्हारी नारी,**
**मोकों लगत लाज रे।**

दिल से नहीं लगाया, तब लग कैसा सनेह रे।
है कोई ऐसा पर उपकारी, पिवसों कहै सुनाय रे।

**अब तो बेहाल कबीर भयो है,**
**बिन देखे जिव जाय रे।**

कबीर ईश्वर की प्राप्ति के लिए सच्चे प्रेम की अनुभूति ही आवश्यक मानते हैं। सच्चे प्रेम का प्रकटीकरण संयोग से न होकर वियोग से होता है। 'प्रेम पियारा मित्त' तो विरह की सच्ची वेदनानुभूति से ही प्राप्त होता है–

**कबीर हँसणा दूरि करि, करि रोवण सौं चित्त।**
**बिन रोयां क्यूं पाइये, प्रेम पियारा मित्त।।**

डॉ. शिवकुमार वर्मा ने इस संदर्भ में कहा है कि– ''कबीर की प्रियतम मिलन की आतुरता संसार के किसी भी प्रेम व्यापार से अधिक चुटीली है। संसार के विरही जनों के विरह का भले ही अन्त होता हो, परन्तु कबीर को सदा के लिए विरह व्यथा को झेलना है। रात्रि की समाप्ति के पश्चात चकवी के लिए चकवे से मिल सकना संभव है, परन्तु कबीर के लिए दिन-रैन दोनों समान है। उनके विरह का न अथ है न इति।''

**चकवी बिछुरी रैन की आई मिली परभाति।**
**जो जन बिछुरे राम से ते दिन मिले न राति।।**

कबीर की विरहणी आत्मा अपने प्रियतम राम का सुमिरण पपीहे की भाँति निस दिन मिलन की उत्कंठा लिए करती है–

**नैनां नीझर लाइया, रहट बहै निस काम।**
**पपीहा ज्यूं पीव करौं, कबहुँ मिलहुगे राम।।**

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कबीर की प्रेममूलक भक्ति भावना की विशेषताएँ इन शब्दों

में व्यक्त की है- ''इस प्रेम में मादकता नहीं है, परन्तु मस्ती है। कर्कशता नहीं है, परन्तु कठोरता है। असंयम नहीं है परन्तु स्वाधीनता है। अन्धानुकरण नहीं है, परन्तु विश्वास है। उज्जड़ता नहीं है, परन्तु अक्खड़ता है। इसकी प्रचण्डता सरलता का परिणाम है, उग्रता विश्वास का फल है, तीव्रता आत्मानुभूति का विवर्त है।'' कबीर की भक्ति भावना के जनसाधारण से अनुकूलन के सन्दर्भ में द्विवेदी जी लिखते हैं-''कबीरदास ने गुरु रामानन्द से शिष्यत्व ग्रहण करके जनसाधारण में उनकी शास्त्र सिद्धता का विश्वास पैदा किया और राम-नाम को अपनाकर जनसाधारण के परिचित भगवान से अपने भगवान की एकात्मकता स्थापित की।''

**गुरु गुन लिख्या न जाय**-भारतीय संस्कृति में गुरु-शिष्य परम्परा वैदिक काल से ही समाज जीवन में विशेष महत्त्वपूर्ण रही है। गुरु को परम ब्रह्म के समान मानने की परम्परा यहाँ के संत साहित्य का अनिवार्य तत्त्व है। कबीर की दृष्टि में गुरु की महिमा अनंत है, सतगुरु परम उपकारी है। कुमार्ग से सन्मार्ग की ओर ले जाने वाले गुरु ही हैं। गुरु ही प्रभु भक्ति का मार्ग प्रशस्त करते हैं-

**सतगुरु की महिमा अनंत, अनंत किया उपगार।**
**लोचन अनंत उघाड़िया, अनंत दिखावन हार।।**

सद्गुरु ही सच्चे शूरवीर है जिनका ज्ञान रूपी शब्द बाण अद्वितीय है। अहंकार को मिटाकर प्रेम तत्त्व प्रकट करने वाले सतगुरु ही हैं। शब्द रूपी बाण साधक की चंचल वृत्तियाँ समाप्त कर ईश्वर के प्रति अनुराग उत्पन्न करने वाला है।

**सतगुरु लई कमाण करि, बाँहण लाग्या तीर।**
**एक जु बाह्या प्रीत सूं, भीतर रम्या सरीर।।**
**सतगुरु सांचा सूरिवाँ, सबद जु बाहया एक।**
**लागत ही भै मिट गया, पड्या कलेजे छेक।।**

भवसागर में सब डूब जाते हैं, गुरु के ग्यान रूपी लहर की चमक ही डूबने से बचा सकती है। कबीर ने गुरु और परमात्मा को अभेद बताया है। यह जो शरीर है उसमें अंतर स्थापित करता है, जो साधक अपना अहंकार समाप्त कर गुरु शरण में आ जाता है, वही परमात्मा को प्राप्त करता है। सद्गुरु का मिलन ही अनिष्ट से बचा सकता है, जिस प्रकार कीट भोग लिप्सा के कारण दीपक में जलकर नष्ट हो जाता है। गुरु की कृपा से ही संसार की मोह वासना से बचा जा सकता है।

**माया दीपक नर पतंग, भ्रमि-भ्रमि इवैं पड़ंत।**
**कहै कबीर गुरु ग्यान थैं, एक आध उबरंत।।**
**गुरु गोविंद तौ एक है, दूजा यहु आकार।**
**आपा मेट जीवण मरै, तो पावै करतार।।**

शिष्य कच्ची मिट्टी के समान है गुरु ही उसे आकार देता है, उसके विकारों को दूर कर सद्गुणों को भरता है। गुरु अपने शिष्य को मनुष्य से देवता के समान निर्दोष और तेजस्वी बना देता है। जिस प्रकार साबुन कपड़ों को निर्मल बना देती है उसी प्रकार गुरु शिष्य के सभी अवगुणों को दूर कर देता है। सतगुरु की महिमा लिखते हुए कबीर अघाते भी नहीं है, उनके अनुसार यदि पूरी पृथ्वी कागज का रूप ले लेवे, सारी वनस्पति कलम बन जाए, सातों समुद्रों का उपयोग स्याही के रूप में करूँ तो भी अपने गुरु के गुणों का बखान लिखना सम्भव नहीं है-

**गुरु कुम्हार सिष कुंभ है, गढ़ि-गढ़ि काढ़ै खोट।**
**अंतर हाथ सहार दै, बाहिर बाहै चोट।।**
**सब धरती कागद करूँ, लेखनी सब बनराय।**
**सब समुँद की मसि करूँ, गुरु गुण लिख्या न जाय।।**

कबीर ने अयोग्य एवं मिथ्या गुरुओं से दूर रहने में ही भलाई माना है। अयोग्य गुरु और अज्ञानी चेला दोनों ही एक-दूसरे के नाश का कारण होते हैं। गुरु-शिष्य के मिथ्या लालच पर आधारित सम्बन्ध पत्थर की नाव पर सवार यात्री के समान मझधार में ही डुबाने वाले होंगे। कबीर लालच पर आधारित गुरु-शिष्य सम्बन्धों की निन्दा करते हुए लिखते हैं-

**ना गुरु मिला न सिष भया, लालच खेया दाव।**
**दून्यूं बूढ़े धार में, चढ़ि पाथर की नाव।।**
**जाका गुरु भी अंधला, चेला खरा निरंध।**
**अंधा अंधौ ठेलिया, दून्यूं कूप पड़ंत।।**

कबीर ने समाज सुधार और सामाजिक पुनर्निर्माण का मार्ग चुना जिसका आधार प्रेम और ज्ञान है। कबीर समन्वयवादी थे। उनके असाधारण व्यक्तित्व में ज्ञान, भक्ति, प्रेम और कर्म का समन्वय था। वे गृहस्थी रहते हुए भी संत थे। अपना पैतृक जुलाहा कार्य करते हुए भी एकांत प्रिय, अंतर्मुखी और साधु स्वभाव के थे, प्रभु भक्ति में लीन रहते थे। पंडा, पुरोहित, मौलवी आदि के महत्त्व और अस्तित्व को नकार कर कबीर ने हरि को भजने और उसकी कृपा को प्राप्त करने का सहज मार्ग (नाम सुमिरण) खोल दिया। ईश्वर के नाम पर चलने वाले हर तरह के पाखंड, भेदभाव और कर्मकांड का खंडन किया।

कबीर निरक्षर थे। स्वयं उन्होंने स्वीकारा है- 'मसि कागद छूयो नहीं, कलम गह्यो नहीं हाथ।' उनकी रचनाओं का संकलन उनके शिष्यों ने किया। उनके शिष्य धर्मदास ने 'बीजक' (कबीर बीजक) में कबीर की साखी, सबद, रमैनी आदि का संकलन किया। बाबू श्याम सुन्दरदास ने 'कबीर ग्रंथावली' में कबीर की रचनाओं का संकलन किया है।

कबीर की भाषा का कोई निश्चित रूप निर्धारित नहीं किया जा सकता। कबीर का जुड़ाव जन सामान्य से था। उन्होंने लोक भाषा को ही अपनाया। कबीर घुम्मकड़ प्रवृत्ति के थे इसलिए उनकी भाषा भोजपुरी, खड़ी बोली, राजस्थानी, अवधी, ब्रजभाषा, पंजाबी आदि भाषाओं का मिश्रण थी। उनकी भाषा में अरबी-फारसी के शब्दों का भी पर्याप्त मात्रा में प्रयोग हुआ है। विद्वानों ने कबीर की भाषा को सधुक्कड़ी भाषा की संज्ञा दी है।

कबीर की भक्ति भावना प्रेममूलक रहस्यवाद से अनुभूत है। उनकी भक्ति के सम्बन्ध में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है- ''ब्रह्म हिन्दुओं की विचार पद्धति में ज्ञान मार्ग का एक निरुपण था, उसी को कबीर ने सूफीयों के ढर्रे पर उपासना का ही विषय नहीं, प्रेम का विषय बनाया और उसकी प्राप्ति के लिए हठयोगियों की साधना का समर्थन किया। इस प्रकार उन्होंने भारतीय ब्रह्मवाद के साथ सूफियों के भावात्मक रहस्यवाद, हठयोगियों के साधनात्मक रहस्यवाद और वैष्णवों के अहिंसावाद तथा प्रगतिवाद का मेल करके अपना पंथ खड़ा किया।''

कबीर के दर्शन में प्रेम का संदेश निहित है। प्रेम के लिए एकाकार होने की आवश्यकता है। 'प्रेम गली अति सांकरी, जा में दो न समाहि।' प्रेम के लिए अहम को त्यागने की आवश्यकता है। प्रेम के लिए आठों पहर उसी में भीगे रहने की आवश्यकता है। प्रेम का नशा न तो क्षण में चढ़ता है और न ही क्षण में उतरता है। घट का अघट से प्रेम होने पर रोम-रोम पुलकित हो जाता है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में- ''वस्तुतः कबीर प्रेमाभक्ति के प्रचारक है, परन्तु उनके द्वारा प्रचारित प्रेम में गलदश्रु भावुकता या अन्ध श्रद्धा को स्थान नहीं है। वे सहज प्रेम के पक्षपाती थे। भगवान के प्रति सहज प्रेम से ही सहज समाधि सिद्ध होती है।'' कबीर के जीवनदर्शन का सार तत्त्व उनकी इस साखी में निहित है-

**पोथी पढ़ि पढ़ि जगमुआ, पण्डित भया न कोय।**
**ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पण्डित होय।।**

जीवन जगत के आडम्बरों से लड़ते और प्राणी मात्र को प्रेम का संदेश देते हुए कबीर ने एक सौ बीस वर्ष की अवस्था में धार्मिक नगरी काशी से दूर मगहर में देह त्यागना तय किया। मगहर को एक दुर्भाग्यपूर्ण नगर माना जाता था। लोगों का विश्वास था कि काशी में शरीर छोड़ना मोक्षदायक है इसके विपरीत मगहर में मरने वालों की गति भी नहीं होती। अनेक लोगों ने कबीर को समझाया भी। कबीर जी का स्पष्ट और दृढ़ मत था जिसका अभिप्राय यह था कि 'कठोर हृदय पापी यदि बनारस में मरेगा तो भी वह नरक से नहीं बच सकेगा, परन्तु परमात्मा के भक्त संत यदि मगहर में मरते हैं तो वे खुद ही मुक्त नहीं होते, बल्कि अपने साथ सब शिष्यों को भी तार देते हैं।' अपने निश्चय के अनुसार कबीर जी ने मगहर में ही अन्तिम श्वास ली।

धार्मिक कट्टरता के विरोधी कबीर ने अपने को न हिन्दू माना और न ही मुसलमान, किन्तु फिर भी उनके शिष्यों में उनके अन्तिम संस्कार को लेकर मतभेद हो गया। राजा वीर सिंह बघेला के नेतृत्व में हिन्दू शिष्य शव का अन्तिम संस्कार करना चाहते थे तो नवाब बिजलीखान के नेतृत्व में मुसलमान शिष्य उन्हें दफनाना चाहते थे। दोनों पक्षों में विवाद इतना गहरा गया कि झगड़े की नौबत आ गई। जनश्रुति के अनुसार जब उनके शव से कपड़ा हटाया गया तो वहाँ सुवास का संदेश देने वाले महकते पुष्प ही शेष थे। मानवता का महान संदेश देने वाले उस महामानव का अन्तिम समय भी जीवन-जगत के लिए एक उपदेश बन गया।

प्रधानाचार्य
रा.आ.उ.मा.वि. सोनड़ी
हनुमानगढ़ (राज.)
**मो : 9529804035**

## प्रताप जयन्ती

# प्रताप का अभ्युदय : मेवाड़ का वरदान

❐ **प्रकाश वया**

वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप ने अपने विराट और महनीय व्यक्तित्व से समकालीन राजनीति को नई दिशा देकर जिन जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठापना की, निश्चित रूप से बेमिसाल होकर वे मानव जाति के लिए कल्याणकारी साबित हुए हैं। स्वतंत्रता के परम आराधक उस कालजयी नर पुंगव ने स्वाभिमान और आजादी के साथ जीने को प्राणिमात्र का स्वभाव निरूपित करते हुए चोट करने वाली आसुरी शक्तियों के दमन और शमन के निमित्त राष्ट्र की संतति को मुस्तैदी के साथ खड़े होने का आह्वान कर राष्ट्र जीवन को नई दिशा और प्रेरणा देने का महनीय कार्य किया, जिसके कारण से मानवता के ध्वजवाहक 'प्रताप' का 'प्रताप' चतुर्दिक फैलकर जागरण का संदेश दे रहा था। जिस कालखण्ड के सापेक्ष व्युत्पन्न परिस्थितियों में 'नर-नाहर' का आविर्भाव धरा धाम पर हुआ, निश्चित रूप से भयावह होकर मानवीय परम्पराओं और मर्यादाओं को पलीता लगाने वाली थी, आम जन के धर्म, ईमान और आस्था को दांव पर लगाया जा रहा था, लोभ, लालच और स्वार्थ मनोवृत्ति को जगाकर उसकी आजादी और जमीर को खरीद कर कुचला जा रहा था, चारों और त्राहि-त्राहि मची हुई थी। ऐसे संक्रमणकाल में चराचर जगत के हलाहल का पान करने वाले भगवान एकलिंगनाथ के दीवान महाराणा प्रताप का अभ्युदय वीर प्रसूता मेवाड़ धरा के लिए वरदान साबित हुआ। राजसी वैभव और सुखों का तृणवत त्याग कर दृढ़ इच्छा-शक्ति और संकल्पित भाव से आजादी का बिगुल बजाकर स्वर्णिम इतिहास रचना, उसकी नियति बन गया।

''हूँ घोर उजाड़ां में भटकूं पर में माँ री याद रहे'' जैसे उदात्त भाव धरातल पर खड़े होकर आजादी का वह मशालची घटाटोप तमस को तिरोहित करने के लिए निकल पड़ा। उसके जोश और होश ने मेवाड़ी सरदारों में नव चेतना और स्फूर्ति का संचार किया। मेवाड़ की आन, बान और शान के रखवाले मेवाड़ी शेर ने अपने अपूर्व

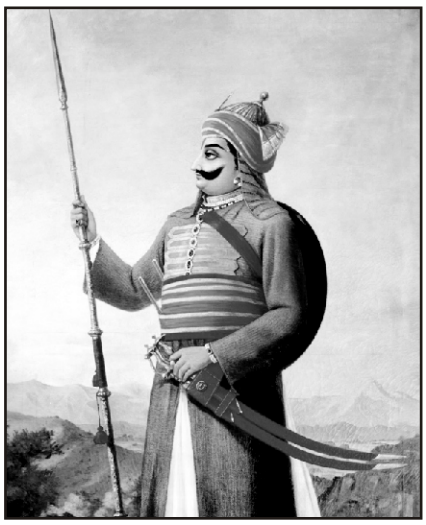

बुद्धि कौशल से दिल्ली के मुगल बादशाह-अकबर की रातों की नींद हराम कर दी इसलिए राजस्थान का मूर्धन्य कवि राष्ट्र की माताओं का आह्वान कर रहा है-

माई एहड़ा पूत जण, जेहड़ा राण प्रताप।
अकबर सूतो ओचके, जाण सिराणे सांप।।

देव दुर्लभ माँ भारती की पावन माटी का शृंगार गौरवशाली सांस्कृतिक विरासत ने बखूबी किया है, यहाँ की परम्पराएँ और मर्यादाएँ हमारी अनमोल थाती है। 'माता भूमि पुत्रोऽहम्' की उद्घोषणा कर इस राष्ट्र की संतति ने अनूठी और अप्रतिम मिसाल कायम कर इस धरा को 'माँ' के उच्चासन पर आरुढ़ किया हुआ है तथा वीर प्रसूता इस पावन धरा पर अविर्भूत नर रत्नों ने अपने खून के कतरों से इसका मनोहारी शृंगार करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है, इसीलिए त्याग, बलिदान और समर्पण इस माटी की ताशीर बन गई है।

आ धरती घणै-सपूतां री,
मरजादा रो सिणगार अठै।
इण मात भौम रै काज सूरमा,
शीश करै बलिहारी अठै।।
प्राणा सूं प्यारी आजादी,
खल देख उगटै खार अठै।
भारत वासी सगला भाई,

है समता रो अधिकार अठै।।

'पराधीनता सपनेहू सुख नाहि।' व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र के सापेक्ष जीवन के मूल्यों के मर्मज्ञ और सर्जक संत तुलसी ने इस शब्द रव के माध्यम से प्राणिमात्र के स्वभाव को प्रकट किया है, स्वतंत्रता हर जीव की नियति है तो पराधीनता अभिशाप। ''कहीं भली है कटुक निंबोरी, कनक कटौरी की मेदा से'' उन्मुक्त गगन की असीम ऊँचाइयों को छूने वाला विहंग पिंजरे में कैद होने की अपेक्षा सोने की कटोरी में रखे स्वादिष्ट व्यंजन का त्यागकर कड़वी निंबोरी से संतोष कर लेता है, क्योंकि उड़ना एवं आसमान की ऊँचाइयाँ छूना उसका स्वभाव है। ऐसी ही भाव सम्पदा को आत्मसात कर जिन्दगी जीने का अभ्यासी महामानव महाराणा प्रताप एक अलमस्त फकीरी धारण कर चल पड़ा, चलता रहा-चलता रहा, थका नहीं, हारा नहीं, झुका नहीं, रुका नहीं क्योंकि चलना उसकी नियति था, उसका मिशन था।

''हल्दी घाटी रो समर लड़यो, वो चेतक रो असवार कठै'' अरावली की उपत्यकाओं में अवस्थित हल्दीघाटी का जर्रा-जर्रा इस बात का साक्षी है कि देवाधिदेव भगवान एकलिंग नाथ का वो दीवान अपने आराध्य के मंगल आशीर्वाद की ऊर्जा प्राप्त कर आतताइयों को लोहे के चने चबाने के लिए मजबूर करने में सफल हो गया। वो कालजयी महाराणा प्रताप जिसने अपने व्यक्तित्व और कृतित्व से मेवाड़ की धरा को दुनिया में हमेशा-हमेशा के लिए पहचान देकर अपनी मातुश्री जयवंता बाई की पावन कुक्षि से आविर्भूत होकर उनके दूध की उज्ज्वलता को द्विगुणित कर दिया, उस प्रताप का 'प्रताप' चिर स्मरणीय रहने वाला है।'' जो दृढ़ राखै धर्म को ताहि राखे करतार'' जैसे आधारभूत जीवन मूल्यों को आत्मसात कर यावत जिन्दगी दहाड़ने वाला 'मेवाड़ी शेर' जब चतुर्दिक मुगल सैनिकों से घेर लिया गया तो उनके विश्वस्त सिपहसालार झाला मान ने चतुराई से महाराणा के सभी प्रतीक चिह्नों को धारण कर अपने मेवाड़ नाथ को बचाने व सुरक्षित निकालने में कामयाब हो गया, झाला मान का यह आत्मोत्सर्ग निश्चित रूप से प्रेरणास्पद होकर अभिवन्दनीय है। स्वामिभक्त झाला मान के बलिदान के साथ ही अश्वश्रेष्ठ 'चेतक' की स्वामिभक्ति भी चराचर जगत के लिए स्तुत्य और श्लाघनीय बन गई, नाले की छलांग के बाद चेतक की प्राणाहुति भी मानव जाति को अनूठी और विलक्षण प्रेरणा देकर इतिहास के पृष्ठों को स्वर्णिम आखर दे गई, अपने प्राण प्रिय चेतक का अंतिम साँस लेना उस शौर्य और पराक्रम के पुंज के लिए अतिशय हृदय विदारक था, परन्तु उस समय अनुज शक्तिसिंह के अन्तस में भ्रातृ प्रेम का उमड़ना और सहोदर अग्रज के चरणों में आकर गिर जाना, आलिंगन बद्ध होना निश्चित रूप से राम-भरत के मिलन सा अपूर्व नजारा प्रस्तुत कर रहा था, भ्राता द्वय की आँखों से अविरल बहती हुई अश्रुधारा एक ही रक्त पिण्ड अंशों की अंतरंगता को प्रकट करती हुई लग रही थी।

सच्चाई तो यह है कि एक राजा चतुर्वर्णों का धारक होता है तथा उसे कमोबेश चारों आश्रमों में जीवनयापन करते हुए राजधर्म का पालन करना होता है। एक प्रजावत्सल और लोक कल्याणकारी राजा अपने सुख-दुख की परवाह किए बिना अपनी सकल अन्तश्चेतना का समर्पण प्रजा के हितार्थ कर देता है। धीरोदात्त इस श्रेयपथगामी नर श्रेष्ठ ने भी अपने जीवन की हर साँस समष्टि के लिए कुर्बान कर दी, इसीलिए प्रताप जन-जन का लाड़ला, हमारा प्रेरणा पुंज और प्रणम्य युग पुरुष बनकर रह गया है।

इस महान पराक्रमी योद्धा ने अपने बुद्धि कौशल से साम्राज्यवादी नीति के पोषक मुगल सम्राट अकबर की रातों की नींद हराम करते हुए उसकी महत्त्वाकांक्षाओं पर लगाम लगाने में जो कामयाबी हासिल की उसने उसकी कीर्ति पताका की ऊँचाई को द्विगुणित कर दिया, स्वतंत्रता की जिजीविषा ने उस महामानव को सदा-सदा के लिए अमर बना दिया, सच्चाई तो यह है कि इस मलयरज में आविर्भूत इस धरती पुत्र ने अपने व्यक्तित्व और कृतित्व से मेवाड़ी, आन, बान और शान में चार चाँद लगाने का स्तुत्य और श्लाघनीय कार्य कर उसके अतीत, वर्तमान और भविष्य को शानदार, जानदार और चमकदार बना दिया, अस्तु।

प्राध्यापक
रामपुर बस स्टैण्ड,
नृसिंह वाटिका के सामने, भीण्डर, जिला-उदयपुर
**मो : 9413208719**

## शिविरा पञ्चाङ्ग : मई-जून, 2017

| मई 2017 | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रवि | | 7 | 14 | 21 | 28 |
| सोम | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 |
| मंगल | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 |
| बुध | 3 | 10 | 17 | 24 | 31 |
| गुरु | 4 | 11 | 18 | 25 | |
| शुक्र | 5 | 12 | 19 | 26 | |
| शनि | 6 | 13 | 20 | 27 | |

**मई 2017 ● कार्य दिवस-8, रविवार-4, अवकाश-19, उत्सव-2 ● 1 मई-**नवीन सत्र : 2017-18 प्रारम्भ। **26 अप्रैल से 9 मई-**प्रवेशोत्सव-प्रथम चरण का आयोजन। **4 मई-**सत्र 2016-17 के स्थानीय परीक्षा परिणाम की घोषणा। **5 मई-**अध्यापक-अभिभावक परिषद एवं SDMC की साधारण सभा की संयुक्त बैठक का आयोजन तथा ''विद्यालयी पूर्व विद्यार्थी मंच'' का विधिवत गठन। **7 मई-**रवीन्द्र नाथ टैगोर जयन्ती (उत्सव)। **6 से 8 मई-**पूरक परीक्षा का आयोजन। **9 मई-**पूरक परीक्षा परिणाम की घोषणा एवं प्रगति-पत्र का वितरण। **10 मई से 18 जून-**ग्रीष्मावकाश। **28 मई-**महाराणा प्रताप जयन्ती (अवकाश उत्सव) **नोट :-1.** संस्था प्रधान ग्रीष्मावकाश में मुख्यालय से बाहर हो, तो वह विद्यार्थियों को टी.सी. जारी करने हेतु मुख्यालय पर रहने वाले वरिष्ठतम शिक्षक को टी.सी. पर हस्ताक्षर करने हेतु अधिकृत करावें तथा इसका अनुमोदन संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी से कराकर संबंधित को पाबन्द करें, ताकि विद्यार्थियों को टी.सी. प्राप्त करने में कोई असुविधा न हों। **2.** राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा-द्वितीय स्तर (कक्षा-8 में अध्ययनरत विद्यार्थियों हेतु) का आयोजन। **3.** माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा विद्यार्थियों के लिए सृजनात्मक प्रतियोगिता का राज्य स्तरीय आयोजन।

| जून 2017 | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रवि | | 4 | 11 | 18 | 25 |
| सोम | | 5 | 12 | 19 | 26 |
| मंगल | | 6 | 13 | 20 | 27 |
| बुध | | 7 | 14 | 21 | 28 |
| गुरु | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 |
| शुक्र | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 |
| शनि | 3 | 10 | 17 | 24 | |

**जून 2017 ● कार्य दिवस-10, रविवार-4, अवकाश 16, उत्सव-1 ● 1 से 18 जून-**ग्रीष्मावकाश। **19 से 30 जून-**प्रवेशोत्सव-द्वितीय चरण का आयोजन। **21 जून-**अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस (उत्सव)। **24 जून-**SMC/SDMC की कार्यकारिणी समिति की बैठक (अमावस्या तिथि के अनुरूप) का आयोजन। **26 जून-**ईदुल फितर (अवकाश-चन्द्र दर्शनानुसार)। **28 जून-**भामाशाह जयन्ती (राज्य स्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह) एवं सत्रपर्यन्त कार्ययोजना का अनुमोदन।

**(समय-समय पर जारी संशोधन प्रभावी होंगे।)**

## 1857 की क्रान्ति दिवस

# भारतीय इतिहास का स्वर्णिम अध्याय

❒ विजय सिंह माली

भारत का इतिहास सतत् संघर्ष का इतिहास रहा है। हमने सदैव पराधीनता का, अधर्म का, अन्याय का, अत्याचार का प्रतिरोध किया है। अंग्रेज व्यापारी के रूप में इस देश में आए, धीरे धीरे इस देश के शासक बन बैठे। उन्होंने सोने की चिड़िया भारत को शोषण कर मिट्टी की चिड़िया में बदलने का हर संभव प्रयास किया। अंग्रेजों की राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक-सांस्कृतिक व सैनिक नीतियों ने यहाँ के हर वर्ग में असंतोष को जन्म दिया। इस असंतोष का प्रकटीकरण अंग्रेज विरोधी विद्रोहों में हुआ, इन छोटे क्षेत्रीय विद्रोहों को उन्होंने ताकत के बल पर दबा दिया लेकिन स्वधर्म और स्वराज्य की चिंगारी भारतीयों के मन में धधकती रही और 1857 में इसने विशाल ज्वाला का रूप धारण कर लिया।

1857 के स्वातंत्र्य समर के योजनाकार थे- रंगो बापूजी गुप्ते और अजीमुल्ला खां। रंगो बापूजी गुप्ते छत्रपति शिवाजी के वंशज सतारा के अपदस्थ शासक प्रताप सिंह के वकील के रूप में 1840 में इंग्लैण्ड गए। वहाँ वे 14 वर्ष तक रहे। 1854 में नाना साहब पेशवा का पक्ष रखने के लिए अजीमुल्ला खां इंग्लैण्ड गए। राजनीति के इन दो धुरंधरों की लंदन में मुलाकात हुई तो 1857 में स्वातंत्र्य समर का बीजारोपण हो गया। भारत आने के बाद रंगो बापूजी गुप्ते साधुवेश में तांत्या टोपे के साथ नाना साहब से मिले तब तक रूस आदि देशों से सहायता का आश्वासन लेकर अजीमुल्ला खां भी भारत आ गए। तीर्थाटन के बहाने पूरे देश में विचार-विमर्श किया। धन की प्रारम्भिक आवश्यकता पूर्ति के लिए नाना साहब ने इंग्लैण्ड की बैंक में जमा अपने पाँच लाख पौण्ड दो वर्ष की अवधि में धीरे-धीरे निकाल लिए। साधु फकीरों के माध्यम से जनजागरण अभियान चलाया गया। राजा, महाराजा, सामन्तों से पत्र-व्यवहार व व्यक्तिगत सम्पर्क किया गया। कमल और चपाती के माध्यम से आम जन व सैनिकों तक संदेश पहुँचाया गया और 31 मई 1857 को क्राँति करना तय किया

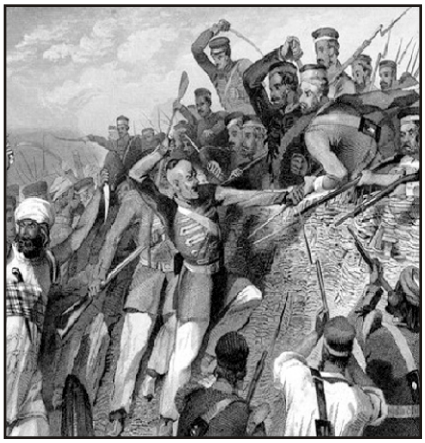

गया।

देशभक्ति की प्रबल भावना के ज्वार के चलते 29 मार्च 1857 को बैरकपुर में 34 वीं रेजीमेन्ट के 1446 नं. के सैनिक मंगल पांडे ने इस क्राँति को समय से पूर्व प्रारभ कर दिया। 8 अप्रेल 1857 को मंगल पांडे को फाँसी दे दी गई। 10 मई 1857 को मेरठ की छावनी में स्वातंत्र्य संघर्ष हुआ। सैनिकों व प्रबल जन मेंदिनी ने 'दिल्ली चलो' नारे के साथ दिल्ली कूच किया। 11 से 16 मई तक दिल्ली में स्वातंत्र्य सैनिकों ने अंग्रेजों को मार भगाया। बहादुरशाह जफर को अपना नेतृत्व स्वीकार करने का आग्रह किया जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया लेकिन जफर की वृद्धावस्था के कारण दिल्ली का वास्तविक शासन बेगम जीनत महल के हाथ में रहा। जफर ने गाजियाबाद के सेठ लाला मटोल चंद्र अग्रवाल के आग्रह पर गो हत्याबंदी की घोषणा की। सेठ रामजीदास गुडवाला ने भी जफर को आर्थिक सहायता प्रदान की। छः दिन तक दिल्ली क्राँतिकारियों से भरी रही। राजस्थान भी इससे अछूता नही रहा। 28 मई को नसीराबाद में दिन के 2 बजे क्राँति प्रारभ हुई। बक्तावरसिंह के नेतृत्व में सैनिकों ने संघर्ष किया। 31 मई को बरेली रूहेलखण्ड में खान बहादुर खान के नेतृत्व में क्राँति हुई। लखनऊ के मौलवी अहमदशाह ने बेगम हजरत महल के साथ मिलकर जनजागरण किया। बिठुर के पेशवा नाना साहब ने बिठुर का राज्य, कानपुर का सारा क्षेत्र जनजागरण करते हुए 25 जून तक पूरी तरह से स्वतंत्र करा लिया। नाना साहब के प्रमुख सहयोगी तांत्या टोपे ने कालपी मे अंग्रेजों से संघर्ष किया। झाँसी में रानी लक्ष्मीबाई ने क्राँतिकारियों के साथ मिलकर स्वराज्य का झंडा लहराया। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की सहयोगिनी झलकारी बाई अंग्रेजों का प्रतिरोध करती हुई वीरगति को प्राप्त हुई। झाँसी की रानी ने झाँसी छोड़ दिया तथा ग्वालियर पर अधिकार कर लिया। वहाँ के कोष प्रमुख अमरचंद्र बांठिया जो मूलत: बीकानेर निवासी थे, ने सारा कोष रानी को सौंप दिया। 18 जून 1858 को अंग्रेजों का प्रतिरोध करती हुईं रानी लक्ष्मीबाई वीरगति को प्राप्त हुई। बिहार भी इस संघर्ष में पीछे नही रहा। पटना में पीरअली का बलिदान हुआ। आरा जगदीशलुर में 80 वर्षीय कुंवरसिंह व उनके भाई अमरसिंह ने अंग्रेजों से संघर्ष किया। कुंवरसिंह वीरगति को प्राप्त हुए। कुंवरसिंह की स्मृति में भोजपुरी में कई गीत गाए गए।

बाबू कुंअरसिंह तोहरे राजबिनु,
अब न रंगडुबो केसरिया।

जैसे गीत आम जनता की जुबा पर चढ़ गये।

लखनऊ में उदाबाई, गढ़ मंडला में राजा शंकरशाह व रघुनाथ शाह ने, अयोध्या में अमीर अली व बाबा रामचन्द्रदास ने अंग्रेजों का वीरतापूर्वक प्रतिरोध किया। जनसाधारण से संवाद स्थापित करने के लिए अजीमुल्ला खां ने 'पयामे आजादी' नाम से समाचार पत्र निकाला जिसकी पहले अंक मे प्रकाशित गीत की पंक्तियाँ जुबा पर चढ़ गई-

आज शहीदों ने है तुमको अहले वतन ललकारा।
तोडो गुलामी की जंजीरे बरसाओ अंगारा।।

पंजाब भी इसमें अछुता नहीं रहा। पंजाब की तत्कालीन शासकीय रिपोर्टों से ज्ञात होता है कि स्वतंत्रता संग्राम के दौरान 386 क्राँतिकारियों को फाँसी दी गई, 2000 लोग मारे गए। दक्षिण भारत में भी लगभग 30 स्थानों पर क्राँति हुई।

महाराष्ट्र में रंगोजी बापू, आंध्रप्रदेश में सोनाजी पंत व रंगाराव पागे, कर्नाटक में रामचन्द्रराव व मुदुस्वामी, तमिलनाडु मे अन्नागिरी व कृष्णा ने, केरल में मुंगानूर व कुंदास्वामी मुदाली के नेतृत्व में अंग्रेजों का प्रतिरोध किया गया। रामगढ़ की रानी अवन्ती बाई, तुलसीपुर की रानी ईश्वरी कुमारी ने अंग्रेजों से संघर्ष किया।

28 मई 1857 को राजस्थान में नसीदाबाद की छावनी से क्राँति प्रारंभ हुई। 3 जून को सुबेदार गुरेसराम के नेतृत्व में नीमच की छावनी में क्राँति हुई। नीमच से आने वाले सैनिकों का शाहपुरा नरेश ने स्वागत कर सहयोग किया। 15 अक्टूबर 1857 को कोटा की नारायण पलटन व भवानी पलटन ने लाला जयदयाल व मेहराव खां के नेतृत्व में अंग्रेज मेजर बर्टन को घेरकर मार डाला व छः माह तक स्वराज्य स्थापित किए रखा। जोधपुर के हवलदार गोजन सिंह ने एरिनपुरा छावनी में क्राँति की। क्राँतिकारी सैनिकों का आउवा ठाकुर कुशाल सिंह ने स्वागत सहयोग किया। अंग्रेजों के विरुद्ध 10 ठिकानों की फौजें आई। बिठौड़ा के युद्ध में चेलावास के युद्ध में अंग्रेजों का प्रतिरोध किया गया। आउवा पहुँचे जोधपुर के पॉलीटिकल एजेंट मॉक मेसन का सिर काटकर किले के दरवाजे पर उल्टा टांग दिया जिससे अंग्रेजों में हाहाकार मच गया। बगडीव सिरियारी के ठाकुरों ने भी आउवा के स्वातंत्र्य सैनिकों का सत्कार सहयोग किया। सलूम्बर, कोठारिया के ठाकुरों ने भी अंग्रजों से संघर्ष किया। टोक में स्त्रियों ने भी क्राँतिकारियों का सहयोग किया। नवाब के मामा मीर आलम खां ने भी अंग्रेजों का विरोध किया।

तात्या टोपे ने राजस्थान में भी क्राँति की अलख जगाई। वे भरतपुर, टोंक, कोटा, गागटोन, देवली स्थानों पर गए। श्रीनाथजी के दर्शन किए। तिलकायत जी ने उन्हें उपरणा भेंट किया।

1857 के स्वातंत्र्य समर को अग्रेंजों ने शीघ्र ही नियत्रंण में कर लिया। बहादुरशाह जफर को कैद कर रंगून भेज दिया गया। जहाँ 7 नवम्बर 1862 को मृत्यु हो गई। नानासाहब व बेगम हजरत महल नेपाल की ओर चले गए। तांत्या टोपे के सहयोगी नारायण भागवत को तात्या टोपे समझकर फाँसी दे दी गई। नाना साहब की बेटी मैना को अंग्रेजों ने जिंदा जला दिया। गढ़ मंडला के राजा शंकर शाह व रघुनाथ शाह को उनकी क्राँतिकारी रचनाओं के कारण तोप के मुँह पर बाँध कर उड़ा दिया। सेठ रामजीदास गुडवाला को चांदनी चौक मे एक गड्ढे मे कमर तक गाडकर शिकारी कुत्ते छोड़े व अंतत फाँसी पर लटका दिया। अमरचंद बांठिया, लाला जयदयाल, मेहराव खां कोटा, अमीर अली, रामचरणदास अयोध्या को फाँसी पर लटका दिया। अंग्रेजों ने भयंकर लोमहर्षक उत्पीड़न किया, हजारों गाँव नगरों को भस्मीभूत किया गया। सम्पूर्ण देश एक युद्ध क्षेत्र सा बन गया। 3 लाख से ज्यादा लोग मारे गए, हजारों लोगों को काले पानी की सजा हुई, हजारों सैनिकों का कोर्ट मार्शल हुआ। उस स्वातंत्र्य समर में समूचे देश के हर वर्ग, श्रेणी की सहभागिता थी। अंग्रेज भयभीत हुए, महारानी विक्टोरिया ने ईस्ट इंडिया कम्पनी का शासन समाप्त कर अपने हाथ में ले लिया। 'फूट डालो राज करो' की नीति को अपनाते हुए मुसलमानों को राष्ट्र की मुख्यधारा से हटाने का षड़यंत्र रचा। भारतीय सैनिकों की संख्या घटा दी गई। अंग्रेज सैनिकों की संख्या बढ़ाई गई। 1857 के स्वातंत्र्य समर ने कालान्तर में क्राँतिकारियों के लिए प्रेरणा स्रोत का कार्य किया। 1857 के वीर वीरांगनाओं की वीरगाथाएँ घर-घर में सुनाई जाने लगी। इस स्वातंत्र्य समर में पहली बार भारतीय समाज को बाँटने वाले तीन कारण मजहब, जाति, वर्ग तिरोहित हो गए। यह ऐसा विलक्षण संग्राम था जिसने सम्पूर्ण भारत को जगाया। वीर सावरकर ने इसे भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम सिद्ध किया तथा 1907 में ब्रिटिश दस्तावेजों के आधार पर ही '1857 का स्वातंत्र्य समर' नामक कालजयी ग्रंथ लिखा। सचमुच यह स्वातंत्र्य समर हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा। इस समर के वीर वीरांगनाओ के सपनों का स्वराज्य स्थापित करना ही उनको सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

प्रधानाचार्य
रा.आ.उ.मा. विद्यालय मगरतलाव (पाली)
**मो. 9829285914**

**लगातार पवित्र विचार करते रहें, बुरे संस्कारों को दबाने के लिए एकमात्र समाधान यही है।**

## चेतावणी (मायड़ रो हेलो)

❒ कन्हैयालाल सेठिया

मायड़ भासा बोलतां जिणा नै आवै लाज
इस्या कपूतां स्यूँ दुखी, आखो देस समाज

निज रै छप्पन भोग नै बिसरावै या फूट
तिसणावश खातां फिरै, जणै जणै री जूंठ

निज भासा स्यूं अणमणा पर भासा स्यूं प्रीत
इसोड़ा नुगरां री करै, कुण जग में परतीत ?

भरी सांग मन भांवता, पण ल्यो आ थे मांड
जका भेस भासा तजै, बा नै कैवै भांड

थे मरुधर रा बाजस्यो बसो कठै ही जाय
सैनाणी कोनी छुपै, बिरथा लाख उपाय

निज सरुप स्यूँ थे डरो, थांरो घणो अभाग
निज रो आपो ओळखो हीणभावना त्याग

महापुरुष गांधी करी गुजराती री सेव
बंगला थरपी जगत में रवि ठाकुर गुरुदेव

मत ल्यो निरर्थक तरक कर थे हिन्दी रो ओळाव
भासावां सगळी नदयां, हिन्दी है दरियाव

भासा है संजीवणी, जै कोई हड़मान
ल्यावै उठ बैठो हुवे, ओ लिछमण राजस्थान

बीत्या जावै बगत तो पण चालैली बात
सरवस जावै सांभळौ थांरा लांबा हाथ।

संकलनः **जयप्रकाश राणा**
निदेशालय, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
**मो : 9461245972**

## जयन्ती विशेष

# झाँसी की रानी

❐ सुभद्रा कुमारी चौहान

डलहौजी ने पैर पसारे, अब तो पलट गयी काया
राजाओं नवाबों को भी उसने पैरों ठुकराया.
रानी दासी बनी, बनी यह दासी अब महारानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी।
छिनी राजधानी दिल्ली की, लखनऊ छीना बातों-बात,
क़ैद पेशवा था बिठुर में, हुआ नागपुर का भी घात,
ऊदैपुर, तंजोर, सतारा, कर्नाटक की कौन बिसात?
जबकि सिंध, पंजाब, ब्रह्म पर अभी हुआ था वज्र-निपात.
बंगाले, मद्रास आदि की भी तो वही कहानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी।
रानी रोई रनवासों में, बेगम गुम सी थी बेज़ार,
उनके गहने कपड़े बिकते थे कलकत्ते के बाज़ार,
सरे आम नीलामी छपते थे अँग्रेज़ों के अख़बार,
नागपुर के ज़ेवर ले लो, लखनऊ के लो नौलख हार.
यों पर्दे की इज़्ज़त परदेसी के हाथ बिकानी थी
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी।
कुटियों में भी विषम वेदना, महलों में आहत अपमान,
वीर सैनिकों के मन में था अपने पुरखों का अभिमान,
नाना धूंधूपंत पेशवा जूटा रहा था सब सामान,
बहिन छबीली ने रण-चंडी का कर दिया प्रकट आह्वान.
हुआ यज्ञ प्रारंभ उन्हें तो सोई ज्योति जगानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी।
महलों ने दी आग, झोंपड़ी ने ज्वाला सुलगाई थी,
यह स्वतंत्रता की चिंगारी अंतरतम से आई थी,
झाँसी चेती, दिल्ली चेती, लखनऊ लपटें छाई थी,
मेरठ, कानपुर, पटना ने भारी धूम मचाई थी,
जबलपुर, कोल्हापुर में भी कुछ हलचल उकसानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी।
इस स्वतंत्रता महायज्ञ में कई वीरवर आए काम,
नाना धूंधूपंत, तांतिया, चतुर अज़ीमुल्ला सरनाम,
अहमदशाह मौलवी, ठाकुर कुंवर सिंह, सैनिक अभिराम,
भारत के इतिहास गगन में अमर रहेंगे जिनके नाम.
लेकिन आज जुर्म कहलाती उनकी जो क़ुर्बानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी।
इनकी गाथा छोड़, चले हम झाँसी के मैदानों में,
जहाँ खड़ी है लक्ष्मीबाई मर्द बनी मर्दानों में,
लेफ्टिनेंट वॉकर आ पहुँचा, आगे बढ़ा जवानों में,
रानी ने तलवार खींच ली, हुआ द्वंद्व असमानों में.
ज़ख़्मी होकर वॉकर भागा, उसे अजब हैरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी।
रानी बढ़ी कालपी आई, कर सौ मील निरंतर पार,
घोड़ा थक कर गिरा भूमि पर, गया स्वर्ग तत्काल सिधार,
यमुना तट पर अँग्रेज़ों ने फिर खाई रानी से हार,
विजयी रानी आगे चल दी, किया ग्वालियर पर अधिकार.
अँग्रेज़ों के मित्र सिंधिया ने छोड़ी रजधानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी।
विजय मिली, पर अँग्रेज़ों की फिर सेना घिर आई थी,
अबके जनरल स्मिथ सम्मुख था, उसने मुँह की खाई थी,
काना और मंदरा सखियाँ रानी के संग आई थी,
युद्ध क्षेत्र में उन दोनों ने भारी मार मचाई थी.
पर पीछे ह्यूरोज़ आ गया, हाय! घिरी अब रानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी।
तो भी रानी मार काट कर चलती बनी सैन्य के पार,
किंतु सामने नाला आया, था वो संकट विषम अपार,
घोड़ा अड़ा, नया घोड़ा था, इतने में आ गये सवार,
रानी एक, शत्रु बहुतेरे, होने लगे वार-पर-वार.
घायल होकर गिरी सिंहनी, उसे वीर गति पानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी।
रानी गयी सिधार चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी,
मिला तेज से तेज, तेज की वो सच्ची अधिकारी थी,
अभी उम्र कुल तेईस की थी, मनुज नहीं अवतारी थी,
हमको जीवित करने आई बन स्वतंत्रता-नारी थी,
दिखा गयी पथ, सिखा गयी हमको जो सीख सिखानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी।
जाओ रानी याद रखेंगे ये कृतज्ञ भारतवासी,
यह तेरा बलिदान जगावेगा स्वतंत्रता अविनासी,
होवे चुप इतिहास, लगे सच्चाई को चाहे फाँसी,
हो मदमाती विजय, मिटा दे गोलों से चाहे झाँसी.
तेरा स्मारक तू ही होगी, तू खुद अमिट निशानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी।

**-साभार**

रविन्द्रनाथ ठाकुर जयन्ती

# प्रकृति और सामाजिक संदर्भ से दूर न हो शिक्षा

❒ डॉ. दुर्गा भोजक

विश्वविख्यात कवि, साहित्यकार और दार्शनिक रविन्द्रनाथ ठाकुर शिक्षा को जीवन के अपूर्व अनुभव के स्थाई हिस्से के बतौर देखते थे। उनका कहना था ''शिक्षा छात्रों की संज्ञानात्मक अनभिज्ञता के रोग का उपचार करने वाले तकलीफदेह अस्पताल की तरह नहीं है, बल्कि यह उनके स्वास्थ्य की एक क्रिया है उनके मस्तिष्क के चेतना की एक सहज अभिव्यक्ति है।''

उन्होंने पाया कि अधिकतर वयस्क बच्चों को इशारों पर नाचने वाली कठपुतलियाँ समझते हैं। ऐसी प्रक्रिया से उन्होंने बच्चों को बचपन से महरुम कर दिया। बच्चों को अपने पाठों के लिए केवल स्कूल की आवश्यकता नहीं है, बल्कि उनको एक ऐसी दुनिया चाहिए जिनकी मार्गदर्शक चेतना व्यक्तिगत प्रेम है।

**रविन्द्रबाबू का शिक्षा दर्शनः–** उनका मानना था कि प्रेम और कर्म के माध्यम से ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। उनके शिक्षा दर्शन को रेखांकित करने वाले तीन सिद्धांत है–

1. स्वतंत्रता 2. सृजनात्मक स्व–अभिव्यक्ति 3. प्रकृति एवं इंसानों के साथ सक्रिय सहभागिता।

**प्रकृति का महत्वः–** वे मानते थे कि हमारी शिक्षा ने हमें प्रकृति और सामाजिक संदर्भ दोनों से दूर कर दिया है। यह निर्जीव और मूल्यविहीन हो गई है। उन्होंने पाया कि शिक्षा को बच्चों के लिए और ज्यादा अर्थपूर्ण बनाने के लिए पहला कदम बच्चे को प्रकृति के सम्पर्क में लाना होगा। शिक्षा को मात्रा और गुणवत्ता में नैसर्गिक बनाकर हासिल किया जा सकता है। प्रकृति के साथ सम्पर्क से बच्चा विशाल दुनिया की वास्तविकता, निरन्तरता और खुशी से परिचित होगा। हालांकि वे खास अर्थ में शिक्षाविद नहीं है क्योंकि उन्होंने शिक्षा के बारे में नहीं लिखा, लेकिन शिक्षा के प्रति उनके दृष्टिकोण की झलक उनकी कविताओं, गद्य और निबन्ध में मिलती है।

**शिक्षण का उद्देश्यः–** उन्होंने लिखा कि सोचने की शक्ति और कल्पना शक्ति निःसंदेह वयस्क जीवन के लिए दो महत्त्वपूर्ण क्षमता है। इसलिए उन्होंने महसूस किया कि इनके विकास को बचपन से प्रारम्भ होना चाहिए। उनके मुताबिक शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य छात्रों

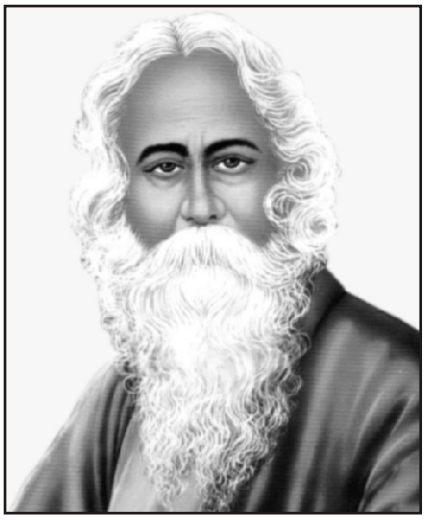

को वास्तविक जीवन की सच्चाइयों, परिस्थितियों और परिवेश के साथ परिचय और समायोजन था। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि अवास्तविक शिक्षा ही हमारे लोगों में बौद्धिक, बेईमानी, नैतिक पाखण्ड और मातृभूमि के प्रति असमानता के लिए जिम्मेदार है। इसलिए उन्होंने तर्क देते हुए कहा कि शिक्षा और हमारी जिन्दगी के बीच सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास होना चाहिए।

**शिक्षण विधि के संदर्भ मेंः–** शिक्षण विधि के संदर्भ में उनका सुझाव था कि प्रकृति के तथ्यों का अध्ययन प्रकृति की वास्तविक परिघटनाओं और प्रकृति में वन्य जीव के माध्यम से होना चाहिए। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों के अपने सामने मौजूद वास्तविक वस्तुओं के सम्पर्क में आने से उनके अवलोकन की सभ्यता और तार्किक शक्ति का विकास होगा।

**गतिविधि का सिद्धांतः–** रवीन्द्र बाबू की शैक्षणिक विधियों का महत्त्वपूर्ण सिद्धांत गतिविधि का सिद्धांत था। यह उनके इस दर्शन पर आधारित था कि शरीर और मन को विभाजित नहीं किया जा सकता। उन्होंने जोर देकर कहा कि शारीरिक गतिविधि से केवल शरीर को स्फूर्ति नहीं मिलती इससे मन भी ऊर्जावान होता है। इसी सिद्धांत के आधार पर उन्होंने चलते–फिरते स्कूलों को आदर्श स्कूल की संज्ञा दी। ऐसा इसलिए भी क्योंकि चलते समय हमारा मानसिक संकाय ज्यादा जाग्रत और चीजों को ग्रहण करने वाली स्थिति में होता है।

**सक्रिय रूप से सीखने की उपयोगिताः–** उन्होंने लिखा कि ''मैं कक्षा के दौरान सभी लड़के–लड़कियों को कूदने, यहाँ तक कि पेड़ पर चढ़ने, किसी कुत्ते या बिल्ली के पीछे भागने या किसी पेड़ की डाली से कोई फल तोड़ने की अनुमति दूँगा..... अपने दिमाग में यह बात ध्यान रखने का प्रयास किया कि बच्चा शब्दों को सीखने और एक पूरे वाक्य को सीखने के लिए अपने पूरे शरीर का इस्तेमाल करें।

उन्होंने बच्चों के पाठ्यक्रम में नाटक और संगीत को शामिल करने पर काफी जोर दिया क्योंकि वे मानते थे कि यह बच्चे की आत्म अभिव्यक्ति का सबसे अच्छा माध्यम है। उन्होंने कहा कि शुरुआत में पाठों को आसान रखना चाहिए और धीरे–धीरे उनमें इसके प्रति स्वतः तनाव पैदा होने लगेगा। वे ये भी मानते थे कि विदेशी भाषा शुरू करने की बजाय सारी शिक्षा मातृभाषा में होनी चाहिए।

उनके विचारों में प्रकृतिवाद एवं मानववाद के प्रति काफी विश्वास दिखाई देता है। बचपन के बारे में उनके विचारों और उसका महत्त्व बाल केन्द्रित शिक्षण की बुनियाद रखते है।

वे सृजनात्मक स्वअभिव्यक्ति के पैरोकार थे जिसे आधुनिक शिक्षा में काफी महत्त्व दिया जाता है।

ये गुरुदेव के नाम से जाने जाते है। एशिया के प्रथम नोबल पुरस्कार विजेता है। उन्होंने कहा था–

''प्रसन्न रहना तो बहुत सहज है, परन्तु सहज रहना बहुत कठिन है''

प्राचार्य
सेठ जी.बी. पोद्दार टी.टी. कॉलेज,
नवलगढ़ (झुंझुनूं)

## विश्व पर्यावरण दिवस

# बढ़ता वैश्विक तापमान, घटती धरातलीय आर्द्रता और पर्यावरण संरक्षण

❒ बल्लूराम मीणा

आज का मानव पूर्ण विकसित बुद्धिमता वाला होकर भी अपना स्वार्थसिद्ध करने के लिए प्रकृति के साथ ऐसी क्रिया-प्रतिक्रिया सम्पन्न कर रहा है कि स्वयं विवेकहीन सा प्रतीत होता है। दिन-प्रतिदिन बढ़ते जन घनत्व की आवश्यकता पूर्ति हेतु विवेकहीन अनुचित तरीकों से प्रकृति के साथ अनियंत्रित दोहन व शोषण का खिलवाड़ कर रहा है।

जन घनत्व के साथ-साथ बढ़ते यातायात के साधनों से पर्यावरण को दूषित करने वाली विभिन्न जहरीली गैसें उत्पन्न हो रही हैं। कल-कारखानों की जलती हुई कालिख, चिमनियों द्वारा निकला धुआँ, रेफ्रिजरेटर, वातानुकूलित यंत्रों से उत्पन्न सी.एफ.सी. (CFC) यौगिक व कार्बन डाई ऑक्साइड आदि गैसें वातावरण को दूषित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है। जिससे प्रकृति का सन्तुलन बिगड़ता जा रहा है परिणामस्वरुप प्राकृतिक वनस्पति नष्ट होने के साथ-साथ गिरता जल स्तर, वीरान होती उपजाऊ-भूमि (मरुस्थलीकरण, FB जलवायु परिवर्तन, खाद्यान्न संकट, बढ़ता विश्व तापमान और घटती धरातलीय आर्द्रता मनुष्य को चुनौतियाँ दे रही हैं।

**शोध आलेख के प्रमुख उद्देश्यः-** प्रस्तुत शोध आलेख को लिखने का प्रमुख उद्देश्य निम्न प्रकार हैः-

1. वैश्विक स्तर पर ग्लोबल वार्मिंग की अभिव्यक्ति व्यक्त करना, जिससे हो रहे प्रमुख प्रभाव अर्थात् घटती धरातलीय आर्द्रता पर प्रकाश डालना।
2. पर्यावरण संरक्षण की भावना का विकास करने के साथ-साथ जन जागरूकता लाने का प्रयास करना।
3. विश्व स्तरीय वातावरणीय परिघटनाओं का भौगोलिक विश्लेषण व्यक्त करना।

### बढ़ता वैश्विक तापमान (ग्लोबल वार्मिंग)

वैश्विक तापमान में वृद्धि के लिए मुख्य रूप से विकसित शक्तिशाली देश उत्तरदायी है क्योंकि वैश्वीकरण के बढ़ते दौर में ये देश अपने बाजार व पूंजी विस्तार के लिए अविकसित देशों के प्राकृतिक संसाधनों का नवीन वैज्ञानिक तकनीक से विकसित औद्योगिक इकाइयों से दोहन व शोषण कर रहे है। विकसित देश जहाँ एक तरफ अधिक उत्पादन प्राप्त कर पूँजी व बाजार क्षेत्रों का विस्तार गरीब देशों में कर रहे हैं वहीं दूसरी ओर औद्योगीकरण से प्रकृति के स्वरूप को बिगाड़ने वाले तत्वों को निमंत्रण दे रहे हैं।

वैश्वीकरण के बढ़ते दबाव से सम्पूर्ण विश्व के लोग लगभग 8 अरब मैट्रिक टन कार्बन प्रतिवर्ष वायुमण्डल में छोड़ रहे हैं। जिससे वायुमण्डल में $CO_2$ जैसी गैसों का मिश्रण हो रहा है। परिणामस्वरूप वैश्विक तापमान में वृद्धि होती जा रही है।

**क्या है ग्लोबल वार्मिंग? (वैश्विक तापमान):-** विश्व में द्वितीय व तृतीय आर्थिक क्रियाओं के योग से उत्पन्न कार्बन डाई ऑक्साइड गैस $CH_4$, CFC, $N_2O$ व जलवाष्प जब सूर्यताप को भू-सतह से परावर्तित किरणों द्वारा उत्सर्जित तापीय ऊर्जा को वायुमण्डल से बाहर नहीं जाने देते हैं तथा वायुमण्डल में आवरण बना कर उत्सर्जित तापीय ऊर्जा को वायुमण्डल में ही आत्मसात होने को मजबूर कर देते हैं तो भू-मण्डलीय उष्मा में औसतन वृद्धि होती है जिसे वैश्विक तापमान के नाम से जाना जाता है।

पिछली सदी में लगभग 0.3 से 0.6 डिग्री सेल्सियस तक वैश्विक तापमान में वृद्धि हुई है। वैश्विक तापमान में सर्वाधिक योगदान $CO_2$ गैस का है। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि अगली सदी के मध्य तक $CO_2$ की मात्रा दोगुनी हो जाएगी, फलस्वरूप 2100 ई. तक वैश्विक तापमान में 1.1 से 6.4 डिग्री सेल्सियस तक वृद्धि हो सकती है।

**वैश्विक तापमान में वृद्धि के मुख्य कारकः-** मानव जीवन में अनेक समस्याएँ चुनौतियों के रूप में उभर कर सामने आ रही है। क्योंकि ई.पू. 10000 में विश्व जनसंख्या मात्र 50 लाख थी लेकिन वर्तमान में 613.7 करोड़ के लगभग हो गई है। विश्व जनघनत्व की औसत वृद्धि से प्रेरित होकर आगामी समस्याओं के हल व तीव्र विकास के लिए पुनर्जागरण के बाद लगभग 17 वीं शताब्दी में औद्योगिक क्रान्ति की शुरुआत के साथ-साथ नवीन वैज्ञानिक तकनीक से औद्योगिक क्षेत्रों का सृजन हुआ। कालांतर में इन्हीं औद्योगिक क्षेत्रों ने विकराल रूप धारण कर वातावरण को दूषित करने वाले तत्वों को उत्सर्जित किया है। जिससे वर्तमान में जलवायु परिवर्तन, वैश्विक तापमान, मरुस्थलीकरण सम्बन्धी मुसीबतें आ रही है। इस वैश्विक तापमान में वृद्धि के लिए निम्नलिखित कारक उत्तरदायी है।

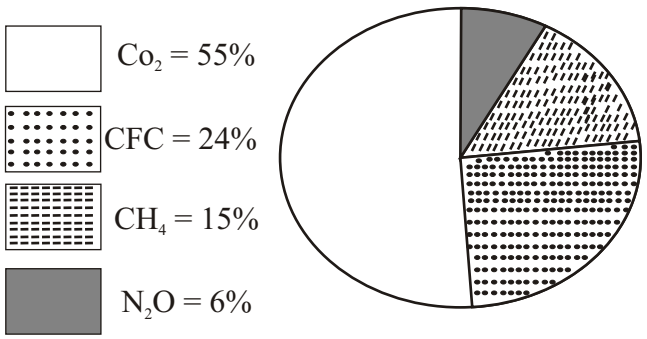


**वृत्तारेख : वैश्विक तापमान/वृद्धि में विभिन्न तत्वों का योगदान**

**1. कार्बन डाई ऑक्साइडः-**मानव द्वारा विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जीवाश्मीय ईंधन जैसे कोयला, प्राकृतिक तेल आदि जलाने से वायुमण्डल में कार्बन डाई ऑक्साइड गैस का उत्सर्जन होता है, संक्षिप्त रूप में कहे तो बढ़ते जनघनत्व की आवश्यकता पूर्ति के लिए औद्योगीकरण का मार्ग अपनाया जाता है। औद्योगीकरण से वर्तमान में कार्बन-डाई-ऑक्साइड गैस का उत्सर्जन अधिक मात्रा में हो रहा है। 1750 ई. के बाद कार्बन-डाई-ऑक्साइड गैस की मात्रा में 30 प्रतिशत

वृद्धि हुई है तथा विगत एक दशक से कार्बन-डाई-ऑक्साइड की 0.5 प्रतिशत औसतन वृद्धि दर है। यदि इसी तरह वृद्धि दर रही तो 2050 ई. तक कार्बन-डाई-ऑक्साइड गैस की मात्रा दोगुनी हो जाएगी। कार्बन-डाई-ऑक्साइड की मात्रा बढ़ने पर यह वायुमण्डल में आवरण बना लेती है तथा सूर्य से प्राप्त उष्मा को भू-सतह से परावर्तित होने के बाद वापिस वायुमण्डल में रोक कर तापीय ऊर्जा के साथ सान्द्रण करके भू-मण्डलीय उष्मा में वृद्धि करती है। अतः वैश्विक तापमान में वृद्धि के लिए यह सबसे महत्त्वपूर्ण उत्तरदायी कारक है।

**2. क्लोरो-फ्लोरो-कार्बन (CFC):-** जनहित को ध्यान में रखते हुए विकासोन्मुख वैज्ञानिक तकनीक से रेफ्रिजरेटर, वातानुकूलित यंत्र (A.C.) आदि का विकास किया गया है। लेकिन जनहित के प्रतिकूल इन नवीन तकनीकी का प्रभाव पड़ता है। क्योंकि रेफ्रिजरेटर तथा वातानुकूलित यंत्रों से (CFC) यौगिक का उत्सर्जन होता है। यह यौगिक वायुमण्डल की ओजोन परत को नष्ट करते हुए वैश्विक तापमान वृद्धि में लगभग 24% भागीदारी रखता है।

**3. मीथेन ($CH_4$):-** वायुमण्डल में ग्रीन हाऊस प्रभाव की गैसों में मीथेन ($CH_4$) का मुख्य हिस्सा है। यह वैश्विक तापमान की वृद्धि में लगभग 15% हिस्सा रखती है। मीथेन भी कार्बन-डाई-ऑक्साइड गैस व अन्य यौगिकों के साथ मिलकर वायुमण्डल में आवरण बनाती है तथा भू-मण्डलीय उष्मा में वृद्धि कराती है।

**4. नाईट्रोजन ऑक्साइड ($N_2O$):-** नाईट्रोजन ऑक्साइड का वैश्विक तापमान वृद्धि में लगभग 6 प्रतिशत भाग है। यह भी अन्य प्रदूषणकारी तत्वों के साथ मिलकर वैश्विक तापमान में वृद्धि के लिए उत्तरदायी है।

**हरित गृह प्रभाव व वैश्विक तापमान:-** वायुमण्डल के संघटन में कार्बन डाई ऑक्साइड गैस की मुख्य भूमिका है तथा यही गैस ग्रीन हाऊस प्रभाव के प्रति अति संवेदनशील है। जब कार्बन डाई ऑक्साइड गैस, अन्य गैस व तत्व सूर्य की किरणों की उष्मा को अवशोषित कर वायुमण्डल के तापमान में वृद्धि करती है तो इसे हरित गृह प्रभाव के नाम से जाना जाता है। ग्रीन हाउस प्रभाव के लिए कार्बन-डाई ऑक्साइड के साथ-साथ $CH_4$, CFC, $N_2O$ तथा जलवाष्प उत्तरदायी है। ये सभी तत्व हरित गृह प्रभाव के माध्यम से वायु मण्डल में आवरण बना लेते है। जिसके कारण पृथ्वी तथा वायुमण्डल के तापमान में औसतन वृद्धि होती है। अर्थात् बढ़ते वैश्विक तापमान के लिए ग्रीन हाऊस प्रभाव प्रमुख कारक है।

**ओजोन परत की विरलता व वैश्विक तापमान:-** ओजोन परत को पृथ्वी की रक्षा कवच के रूप में माना जाता है। यह सूर्य से आने वाली पराबैंगनी किरणों तथा अत्यधिक ताप से बचाते हुए, भू-तल को अत्यन्त गर्म होने से रोकती है लेकिन वर्तमान वैज्ञानिक युग में इसको ही खतरा उत्पन्न होता जा रहा है। निरन्तर क्षरण की ओर अग्रसर होकर वैश्विक तापमान में वृद्धि के लिए उत्तरदायी होती जा रही है।

वातानुकूलित यंत्रों व रेफ्रिजरेटरों से उत्सर्जित क्लोरो-फ्लोरो कार्बन इस परत को निरन्तर विरल बनाता जा रहा है। जैसे भारत के जम्मू कश्मीर में ओजोन परत की मोटाई अधिक पायी जाती है। जबकि त्रिवेन्द्रम में यह अत्यन्त विरल पायी जाती है वहाँ से सूर्यताप अत्यधिक मात्रा में धरातल पर प्राप्त होता है जिसे ग्रीन हाऊस गैसे वायुमण्डल की ऊपरी परतों में वापिस नहीं जाने देती है। जिससे भू-मण्डलीय ऊष्मा में वृद्धि होती है। फलस्वरूप ओजोन परत की विरलता वैश्विक तापमान वृद्धि के लिए उत्तरदायी हो रही है।

उपर्युक्त कारकों के अतिरिक्त वैश्विक तापमान में वृद्धि के लिए जनसंख्या वृद्धि, औद्योगीकरण, अनिश्चित व अनियमित वर्षा, नष्ट होती प्राकृतिक वनस्पति, कृषि के गलत तरीके, यातायात के साधन आदि की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

**बढ़ता वैश्विक तापमान और प्रमुख उत्तरदायी राष्ट्र**

विश्व में वैश्वीकरण के दौर में सभी विकसित देश अपना-अपना स्वार्थ सिद्ध करते हुए वैश्विक तापमान में वृद्धि के प्रति उत्तरदायी हैं जिनमें संयुक्त राज्य अमेरिका का नाम अग्रणी गिना जाता है फिर भी वैश्विक तापमान वृद्धि के लिए उत्तरदायी देशों को निम्न सारणी से स्पष्ट किया जा सकता है।

**सारणी संख्या-1 वैश्विक तापमान वृद्धि में विभिन्न देशों का योगदान**

| क्र. सं. | देश का नाम | प्रतिशत | क्र. सं. | देश का नाम | प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | संयुक्त राज्य अमेरिका | 30.3% | 6. | जापान | 3.7% |
| 2. | यूरोप | 27.7% | 7. | पश्चिमी एशिया | 2.6% |
| 3. | सोवियत संघ | 13.7% | 8. | अफ्रीका | 2.5% |
| 4. | भारत, चीन व विकासशील एशिया | 12.2% | 9. | आस्ट्रेलिया | 1.1% |
| 5. | दक्षिणी और मध्य अमेरिका | 3.8% | 10. | कनाडा | 2.3% |

**बढ़ते वैश्विक तापमान का प्रभाव:-**वैश्विक तापमान में निरन्तर औसतन वृद्धि होते रहने से अनेक समस्याएँ इसके प्रभाव के परिणामस्वरूप उभर रही है। कुछ मुख्य प्रभावों को निम्न प्रकार व्यक्त किया गया है।

i. धरातलीय आर्द्रता (नम भूमि) एवं वायुमण्डलीय आर्द्रता में कमी।
ii. जलवायु में परिवर्तन (तापमान, वायु, वायुदाब, वर्षा व आर्द्रता में)
iii. ग्लेशियरों का विनाश।
iv. नदियों में बाढ़ व अपरदन में वृद्धि
v. महासागरीय जल में उत्थान से सागर तटीय क्षेत्रों एवं नगरों को खतरा।
vi. अनाच्छादन (भौतिक व यांत्रिक अपक्षय व अपरदन) में वृद्धि।
vii. वनस्पति का विनाश एवं मरूस्थलीकरण का विस्तार।
viii. मानव जीवन पर प्रभाव।
ix. कृषि फसलों पर प्रभाव।
x. जैविक आपदाएँ।

**वैश्विक तापमान और विभिन्न सम्मेलन:-** वैश्विक तापमान में वृद्धि के लिए सभी विकसित देश उत्तरदायी है फिर भी ये देश किसी भी समझौते पर हस्ताक्षर नहीं करते। जिससे वैश्विक तापमान को कम करने के लिए कार्बन के उत्सर्जन पर प्रतिबन्ध लग सके। क्योंकि इस तरह की प्रतिबन्धित नीति पर हस्ताक्षर करने से बाजार व पूँजी विस्तार को आघात

पहुँचता है। ये विकसित देश अन्य विकासशील व पिछड़े देशों को कार्बन उत्सर्जन नीति प्रतिबन्धों पर सहमत होने के लिए बाध्य करते हैं जबकि कार्बन एवं कार्बन डाई ऑक्साइड अत्यधिक मात्रा में उत्पन्न करने वाले शक्तिशाली देश संयुक्त राज्य अमेरिका, सोवियत रूस, पश्चिमी यूरोपीय देश, जापान आदि ऐसे समझौतों से दूर रहना चाहते हैं। जो कि विश्व हित में उचित नहीं है। सन् 1992 में रियो शहर के 'पृथ्वी सम्मेलन' में विभिन्न देशों में कार्बन डाई ऑक्साइड गैस उत्सर्जन स्तर कम करने के लिए लगभग 160 देशों ने हस्ताक्षर किए थे, बाद में दिसम्बर-1997 में भी जापान देश में क्योटो सम्मेलन (पृथ्वी-10 सम्मेलन) हुआ था जिसमें 160 देशों के अतिरिक्त 300 गैर सरकारी संगठनों ने भी सहमति जताई थी। दक्षिणी अफ्रीका के जोहान्सबर्ग में सन् 2002 में पूर्ववती समझौते को दोहराया लेकिन कोई हल न निकल सका।

वैश्विक तापमान में वृद्धि तथा जलवायु परिवर्तन को दृष्टि में रखते हुए एक बार मालदीव देश ने समुद्र के अन्तर्गत सभा करते हुए विश्व के देशों का इन समस्याओं की तरफ ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया। वहीं दिसम्बर 2009 में डेनमार्क की राजधानी कोपेनहेगेन में जलवायु परिवर्तन को लेकर सम्मेलन हुआ लेकिन कोई स्पष्ट निर्णय नहीं हो सका।

उपर्युक्त विवेचन में बढ़ते वैश्विक तापमान को विस्तारपूर्वक बताया गया है। लेकिन बढ़ते वैश्विक तापमान से पारिस्थितिक तंत्र (मानव-प्रकृति) पर पड़ने वाले प्रभावों को संक्षिप्त में बताया है क्योंकि यहाँ पर मुख्य विषय ''बढ़ता वैश्विक तापमान व घटती धरातलीय आर्द्रता और संरक्षण'' के अध्ययन को स्पष्ट करना है। अतः बढ़ते वैश्विक तापमान से प्रभावित धरातलीय आर्द्रता (नम भूमि) को विस्तारपूर्वक निम्न प्रकार स्पष्ट किया गया है।

### घटती धरातलीय आर्द्रता

जलवायु परिवर्तन के साथ-साथ बढ़ता वैश्विक तापमान मानव जीवन को प्रभावित करने से अछूता नहीं रह सकता है। जहाँ एक तरफ प्राकृतिक वनस्पति का स्वरूप बिगड़ने के साथ ही अनावृष्टि व अतिवृष्टि जैसी स्थितियाँ उत्पन्न होने से उपजाऊ भूमि भी वीरान होकर मरुस्थलीकरण को बढ़ावा देते हुए मनुष्य के सामने खाद्यान्न संकट को चुनौती के रूप में उभार रहा है। वहीं दूसरी तरफ जलवायु परिवर्तन से मरुस्थलीकरण के साथ-साथ धरातलीय आर्द्रता (नम भूमि) का स्तर भी घटता जा रहा है।

धरातलीय आर्द्रता किसी भी क्षेत्र के जनघनत्व के लिए मुख्य आधार होती है। आर्द्रता के अभाव में जहाँ प्राकृतिक वनस्पति शून्य रूप में पायी जाती है। वहीं प्राकृतिक वनस्पति के बिना वायुमण्डलीय व धरातलीय आर्द्रता का वर्चस्व भी नहीं रह सकता है। क्योंकि ये सभी तत्व एक-दूसरे के सम्पूरक होते हैं। अतः धरातलीय आर्द्रता में मुख्य भूमिका प्राकृतिक वनस्पति, वर्षा, भू-जल स्तर एवं आर्द्रता की रहती है। संक्षेप में कहें तो भौगोलिक चक्र के बिना धरातलीय आर्द्रता का वर्चस्व नहीं रह सकता है।

**धरातलीय आर्द्रता का अर्थः-** जब किसी क्षेत्र में प्राकृतिक वनस्पति (पेड़-पौधे, घास), वर्षा, वायुमण्डलीय आर्द्रता, भू-जल स्तर एवं सिंचाई के द्वारा नमी पायी जाती है, तो ऐसी भूमि को नम भूमि (आर्द्र-धरातल) के नाम से जाना जाता है तथा उस भूमि में पायी जाने वाली नमी को धरातलीय आर्द्रता के नाम से पुकारा जाता है।

स्वयं लेखक **बल्लू राम मीणा** के अनुसार ''कृषि फसल या प्राकृतिक वनस्पति उत्पन्न करने की धरातलीय क्षमता को धरातलीय आर्द्रता कहते है'' अर्थात् भूमि का उपजाऊपन ही धरातलीय आर्द्रता है। धरातलीय आर्द्रता वाले भू-भाग को नम-भूमि के नाम से जाना जाता है।

**धरातलीय आर्द्रता के आधार तत्वः-** धरातलीय आर्द्रता को बनाए रखने वाले आधारभूत तत्वों में वर्षा, वायुमण्डलीय आर्द्रता, प्राकृतिक वनस्पति, जल स्रोत, भू-जल स्तर प्रमुख है। जहाँ इन तत्वों की बहुलता होती है वहाँ का धरातल आर्द्र होता है। इन तत्वों के अभाव में धरातलीय आर्द्रता क्षीण होकर मरुस्थलीकरण में तब्दील हो जाती है।

**धरातलीय आर्द्रता (नम भूमि) की विश्व में स्थितिः-** विश्व के प्रमुख उष्ण कटिबंधीय सदाबहार वन वाले क्षेत्रों में जहाँ वर्षा का औसत 200 सेमी. वार्षिक से अधिक पाया जाता है; उन वनाच्छादित क्षेत्रों में वर्षा के कारण सर्वाधिक धरातलीय आर्द्रता पायी जाती है। जबकि इसके विपरीत जिन क्षेत्रों में औसत वार्षिक वर्षा 25 से.मी. से भी कम होती है वहाँ मरुस्थलीय वनस्पति के साथ-साथ मरुस्थलों का विस्तार पाया जाता है।

विश्व का लगभग 31 प्रतिशत भू-भाग वनस्पति युक्त है। जिसमें सर्वाधिक वनस्पति एवं जैव विविधतापूर्ण क्षेत्र विषुवत रेखीय सदाबहार वन प्रदेश है। धरातल पर पाए जाने वाले कुल वन क्षेत्रों के प्रतिशत की दृष्टि से दक्षिणी अमेरिका का प्रथम स्थान हैं। अतः सर्वाधिक धरातलीय आर्द्रता दक्षिणी अमेरिका में पाई जाती है। जबकि सबसे कम धरातलीय आर्द्रता (नम भूमि) आस्ट्रेलिया में पायी जाती है। क्योंकि आस्ट्रेलिया के लगभग 75% भाग पर मरुस्थल विस्तृत है।

**भारत में धरातलीय आर्द्रता (नम भूमि) का स्तरः-** भारत में विश्व की लगभग 17% से अधिक धरातलीय आर्द्रता (नम भूमि) विस्तृत है जबकि सम्पूर्ण विश्व का लगभग 2.4 प्रतिशत क्षेत्रफल ही भारत में विस्तृत है। भारत के विशाल मैदान में विभिन्न नदी तंत्रों से भूमिगत जल स्तर बना हुआ है। जिससे नम भूमि का स्तर भी ठीक-ठाक है। वहीं प्रायद्वीपीय पठार, तटीय प्रदेश एवं पर्वतीय क्षेत्रों में वनाच्छादित होने के कारण धरातलीय आर्द्रता पायी जाती है। केवल थार के मरुस्थल में वार्षिक औसत वर्षा 25 सेमी. से कम होने के कारण धरातलीय आर्द्रता के स्तर का अभाव पाया जाता है। केवल छुट-पुट झीलों के रूप में ही आर्द्रता देखी जा सकती है। जैसे सांभर झील, आर्द्र भूमि आदि। फिर भी मरु गंगा के नाम से जानी जाने वाली इन्दिरा गाँधी नहर नम भूमि स्तर में वृद्धि का आधार है क्योंकि इस नहर के कैचमेंट एरिया में गेहूँ, कपास की खेती की जाने लगी है। जिससे स्थानीय जैव-विविधता में भी वृद्धि हुई है। वैसे भी थार के मरुस्थल में विश्व के अन्य सभी मरुस्थलों के बजाय जैव-विविधता का स्तर अधिक पाया जाता है।

### घटती धरातलीय आर्द्रता का संरक्षण

वैश्वीकरण के दौर में सभी देश बाजारवाद व पूँजी का विस्तार बिना किसी प्रतिबन्ध के करते जा रहे हैं। विश्वव्यापी बाजारवाद व पूँजीवादी विचारधारा से औद्योगिक प्रगति होना स्वाभाविक है। विकसित देशों की औद्योगिक प्रगति से वैश्विक तापमान में औसतन वृद्धि हो रही है।

बढ़ते वैश्विक तापमान से भू-तल पर अनेक संकट चुनौती के रूप में उभर कर बेरोजगारी, खाद्यान्न संकट जैसी स्थितियाँ उत्पन्न कर सकते हैं।

भविष्य में इन दुविधाओं से दूर रहने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण होना अति आवश्यक है। अतः धरातलीय आर्द्रता भी प्राकृतिक संसाधन के रूप में दिखलाई देती है। इसलिए धरातलीय आर्द्रता (नम भूमि) के संरक्षण को निम्न प्रकार रख सकते है:-

- बढ़ते वैश्विक तापमान के स्तर को कम करके धरातलीय आर्द्रता का संरक्षण किया जा सकता है।
- प्राकृतिक वनस्पति का विस्तार व संरक्षण करते हुए धरातलीय आर्द्रता के स्तर को बरकरार रखा जा सकता है।
- अधिकाधिक मात्रा में वृक्षारोपण करके वर्षा की औसतन मात्रा में वृद्धि करते हुए वर्षा जल से धरातलीय आर्द्रता का स्तर बढ़ाया जा सकता है।
- धरातल पर जल संसाधनों जैसे नदी, झील, तालाब आदि के जल का उचित प्रबन्धन से भण्डारण करके धरातलीय आर्द्रता का स्तर रखा जा सकता है।
- घास-फूस, कूड़ा-करकट आदि से आर्द्र भू-भाग को आवृत करके धरातलीय आर्द्रता का संरक्षण किया जा सकता है।
- जल संसाधन का सदुपयोग करके भू-जल स्तर को गिरने से रोका जाए तो धरातलीय आर्द्रता स्वतः ही संरक्षित हो जाएगी।
- राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संगोष्ठी आदि करके वैश्विक तापमान व जलवायु परिवर्तन को रोककर आर्द्र भूमि का स्तर सुधारा जा सकता है।
- सिंचाई के साधनों से कृषि क्षेत्रों को सिंचित करके आर्द्र भूमि के स्तर को बनाए रखा जा सकता है।
- शिक्षा, सूचना व संचार के माध्यम से धरातलीय आर्द्रता के प्रति जन जागरूकता लाकर गिरते स्तर को संभाला जा सकता है।
- जंगलों की अंधाधुंध कटाई को रोककर धरातलीय आर्द्रता का संरक्षण कर सकते हैं।
- मरुस्थलीकरण के प्रसार को रोककर नम भूमि के स्तर को बनाए रख सकते है।
- कृत्रिम वर्षा पद्धति का अधिकाधिक विकास किया जाए तो नम भूमि का विस्तार किया जा सकता है।
- खेतों का पानी खेतों में ही रोककर (भण्डारित) करके धरातलीय आर्द्रता को बढ़ाया जा सकता है।
- भूमि प्रदूषण को रोक कर नम भूमि में उपजाऊपन ला सकते है।
- नवीन वैज्ञानिक तरीकों से सिंचाई करके तथा उर्वरता लाकर नम भूमि स्तर को बढ़ाया जा सकता है।
- खेतों की जुताई करके भू-जल के वाष्पीकरण को रोककर धरातलीय आर्द्रता को संरक्षित किया जा सकता है।

उपर्युक्त संरक्षण सुझावों के अलावा अन्य भी अनेक तरीके हो सकते हैं जिससे वैश्विक स्तर पर नम भूमि का संरक्षण किया जा सके। फिर भी निम्नांकित पंक्ति के संदेश से वैश्विक तापमान का स्तर कम करके धरातलीय आर्द्रता के स्तर को बरकरार रखा जा सकता है।

**'वृक्ष लगाकर वर्षा पाओ, शुष्क भूमि को आर्द्र बनाओ।'**

व्याख्याता (भूगोल)
राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय
चन्दीपुर, मनोहरथाना, झालावाड़
**मो :8094871193**

## इस माह का गीत

# भारत के रणवीरों को जो

भारत के रणवीरों को जो प्राणों से भी प्यारा है,
देश के दुलारों का यह आजादी का नारा है,
हर-हर-हर-महादेव, हर-हर महादेव, हर-हर-हर महादेव ।।ध्रु.।।

आजादी का दीपक हर दम जलता था मेवाड़ में,
बुझा नहीं जो भीषण आँधी वर्षा की बौछार में,
आजादी की रक्षा के हित वीरों की तलवार उठी,
हल्दीघाटी के प्राँगण में प्रलयंकर हुंकार उठी,
चेतक पर चढ़कर के जिसने लिया हाथ में भाला था,
महाराणा प्रताप सदा आजादी का मतवाला था,
मातृभूमि के चरणों में, जिसने जीवन धन वारा है ।।1।।

वीर शिवा के हाथ भवानी, बिजली बनकर कड़की थी,
मुगल बादशाहों की छाती, डर से धक-धक धड़की थी,
फड़की भुजा मराठों की, जिनको न गुलामी प्यारी थी,
आजादी की लड़ी लड़ाई, हिम्मत कभी न हारी थी,
स्वतन्त्र रहना या कुर्बानी, करना अपने तन मन का,
तान के सीना आन पे जीना, यही ध्येय था जीवन का,
छत्रपति ने इस नारे से, दुश्मन को ललकारा है ।।2।।

अपनी जननी के पुत्रों के करतब बड़े महान हैं,
दुर्गादास वीर को देखो कैसी अद्भुत शान है,
भूल सकेगा नहीं आगरा, अमरसिंह की तेज कटार,
काबुल ने देखी थी, जिस जसवंतसिंह की तेग दुधार,
झाला मन्ना का रण में कितना पवित्र बलिदान है,
भामाशाह जैसे बेटों पर माता को अभिमान है,
राणा सांगा, राजसिंह का देश प्रेम भी न्यारा है ।।3।।

हे भारत माता के बेटों, अब गफलत को छोड़ दो,
अपनी ताकत से जुल्मी दुश्मन की गर्दन तोड़ दो,
जो भारत पर बुरी नजर डाले वो आँखें फोड़ दो,
गौरव के इतिहास में तुम अध्याय नया फिर जोड़ दो,
स्वतन्त्रता प्यारी है, तो फिर तन-मन-धन कुर्बान हो,
मानेगा संसार तभी तुम वीरों की सन्तान हो,
करो याद अपनी नस-नस में, उसी खून की धारा है ।।4।।

संकलनः **सुमेरसिंह बारेठ**
व्याख्याता, रा. दफ्तरी उ.मा.वि., बीकानेर
**मो : 9414546820**

## विश्व पर्यावरण दिवस

# भारतीय संस्कृति में पर्यावरणीय संरक्षण

❒ डॉ. गिरीशदत्त शर्मा

पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश पर्यावरण के ये पाँच तत्व है। इन्हीं से मानव शरीर बना है। ये पाँचों ही तत्व प्रकृति से हमें भरपूर मात्रा में मिले हैं। मानव शरीर तथा इन पाँचों तत्वों में जब तक एक संतुलित व्यवस्था कायम रहती है तब तक समाज सुखी और सम्पन्न बना रहता है। परन्तु जब ये तत्व प्रदूषित होकर संतुलन खो देते हैं तब विश्व में अनेक मानवीय, सामाजिक, आर्थिक एवं प्राकृतिक समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं। कभी-कभी तो अस्तित्व तक संकटमय बना देती है।

विश्व में विज्ञान एवं तकनीक के बढ़ते प्रसार के कारण जब से धरा पर औद्योगिक यांत्रिक एवं भौतिक संसाधनों का विकास हुआ है तब से पृथ्वी पर अवस्थित अनेक प्राकृतिक संसाधनों का न केवल अत्यधिक शोषण हुआ है अपितु जल, वायु, आकाश जैसे प्राण तत्व भी प्रदूषित न होकर अपनी स्वाभाविकता खो चुके है। परिणामस्वरूप आज अकाल, दुर्भिक्ष, अतिवृष्टि, बाढ़, महामारी, जलाभाव, ऊर्जा संकट, भूमिक्षरण जैसी अनेक भयावह समस्याएँ विश्व को व्यथित किए हुए है।

भारतीय संस्कृति में इस प्रकार के प्रदूषण जन्य संकट की परिकल्पना पहले से ही मिलती है। हमारे पूर्वजों ने अपनी परम्पराओं, रीति रिवाजों, आदर्शों एवं मूल्यों में प्राकृतिक तत्वों के संतुलन को विशेष महत्व दिया है। किसी बात को सामान्य ढंग से न कहकर उसको प्रभाव पूर्ण बनाने के लिए जब उसे धर्म के साथ समन्वित कर परम्परा को अनिवार्य अंग बनाकर प्रस्तुत किया जाता है तब व्यक्ति पारम्परिक आचरण के लिए विवश हो जाता है।

मानव स्वभाव की इसी विशेषता के कारण भारतीय संस्कृति में जल, वायु, अग्नि, वनस्पति आदि अनेक जड़ चेतन तत्वों में देवत्व की कल्पना की गयी है। जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त मनुष्यों को जितने संस्कारों से गुजरना पड़ता है। सभी के व्रत अनुष्ठान आदि में पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति, आकाश, सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, ग्रह आदि की पूजा करते हुए उनसे शांतिपूर्ण वातावरण बनाए रखने के लिए अभ्यर्चना करने का विधान है।

दैनिक कार्य आरंभ करने से पूर्व सर्वप्रथम यज्ञ, पूजा द्वारा दैवीय तत्वों की प्रार्थना करने का विधान प्रस्तुत किया गया है। प्रातः सायं हवन का विधान भी इसलिए किया गया है कि रात्रि के समय के प्रदूषण पदार्थ प्रातःकालीन यज्ञ और दिन में किए गए कार्यों से उत्पन्न प्रदूषण तत्व सायंकालीन यज्ञ द्वारा नष्ट होकर वातावरण स्वच्छ और शान्त बना रहे। इससे हमें सदैव यह चेतना बनी रहे कि हमारा कोई भी कार्य प्रकृति के विपरीत न हो, कोई भी कार्य इनके स्वरूप के लिए घातक, विनाशकारी एवं प्रदूषक न बने।

भारतीय संस्कृति में संग्रह के स्थान पर निग्रह को महत्व दिया गया है। जिससे व्यक्ति आत्मकेन्द्रित न होकर अपने चारों ओर विलासिता, सुख और ऐश्वर्य की वस्तुओं का संग्रह न करके सीमित संसाधनों में संतुष्ट रहकर विश्व कल्याण की बात सोच सके।

'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को पोषित करते हुए भारतीय संस्कृति में 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया' की कल्पना की गयी है। इस भावना की सफलता के लिए प्रत्येक व्रत, नियम, अनुष्ठान आदि के समय प्रकृति के जड़ चेतन आदि सभी तत्वों का आह्वान कर समभाव बनाए रखने की प्रार्थना की जाती है। हमारी यह सांस्कृतिक मर्यादा है कि जब भी किसी प्राकृतिक तत्व का उपभोग अथवा उपयोग करें उनसे अनुनय विनय करके अपेक्षित मात्रा में ले।

यही नहीं इन प्राकृतिक तत्वों में स्वच्छता, स्वाभाविकता एवं मौलिकता बनाए रखने के लिए पूजा अर्चना के विविध विधान बनाए गए हैं। गंगा में दुग्ध समर्पण उसके जल को प्रदूषित होने से बचाने की प्रक्रिया का प्रतीक है क्योंकि दुग्ध एंटीबायोटिक है तथा उसमें प्रतिरोधात्मक शक्ति है। प्रतिदिन धूप-दीप से पूजा करने का उद्देश्य भी हमारे प्रतिदिन के लिए गए कार्यों से उत्पन्न प्रदूषण तत्वों को रोकना है। पीपल, वट, तुलसी, केला आदि वृक्षों एवं वनस्पतियों के संहार को रोकना है क्योंकि इनसे शुद्ध प्राण वायु एवं अनेक औषधियों संबंधी तत्व मिलते है। प्रायः हर घर में तुलसी का रोपण और उसकी पूजा उसके अनेक औषधीय गुणों के कारण ही तो होती है। पर्यावरण को स्वच्छ बनाने में उसकी बड़ी भूमिका रहती है।

बच्चों के जन्म, वैवाहिक अवसर, मृत्यु के पश्चात, यज्ञ कराने की प्रथा भी भारतीय संस्कृति में पर्यावरण के संरक्षण का एक विधान है क्योंकि ऐसे अवसरों पर पर्यावरण में अनेक विषैले तत्व फैल जाते है। यज्ञ के धुँए और उसमें आहूति स्वरूप दी गयी विविध प्रकार की सामग्री द्वारा वातावरण में व्याप्त विषैले कीट एवं रोगाणुओं को नष्ट करने की भावना होती है। यही नहीं यज्ञ द्वारा वर्षा होने का विधान भी वेदों में निहित है। यजुर्वेद भाष्य में तो यज्ञ द्वारा वायु और वृष्टि जल की उत्तम शुद्धि और पुष्टि होने का वर्णन है। इन सब क्रियाओं से व्यक्तिगत स्वास्थ्य लाभ के अतिरिक्त राष्ट्र में आध्यात्मिक वातावरण का प्रादुर्भाव होता है जिससे चारित्रिक उत्थान और राष्ट्र उत्थान का स्वप्न साकार होने की सम्भावना को बल मिलता है।

भारतीय संस्कृति की अहिंसात्मक प्रवृत्ति भी पर्यावरण संरक्षण का एक कारण है। संसार के जीवों का एक चक्र है जो एक दूसरे पर निर्भर रहते हुए पर्यावरण की शुद्धि के लिए अपेक्षित है। चिड़ियों को चुग्गा डालना, चींटियों को चुगाना, वृक्षों की जड़ों में खाद्य पदार्थ डालना आदि जिससे छोटे-छोटे कीट संवर्द्धित होकर हानिकारक जीवों, कीट पतंगों को नष्ट कर हमारी रक्षा कर सकें, हमारे स्वास्थ्य के संरक्षण में सहयोगी बन सकें।

अतः यदि हमें पर्यावरण की सुरक्षा और उसमें संतुलन स्थापित करना है तो पुनः भारतीय संस्कृति के आदर्शों के अनुरूप चलना होगा। निग्रह की प्रवृत्ति अपनानी होगी। जीवों पर समभाव बनाकर हमें व्यष्टि के स्थान पर समष्टि को महत्व देना होगा, तभी हमारा अस्तित्व सुरक्षित रह पाएगा।

4/82, चौटाला रोड वार्ड 23
संगरिया (राज.)-335063
**मो: 8561069369**

## ग्रीष्मावकाश क्रियाशील योजना

# योग व खेलों में दक्षता बढ़ाना

❐ मोहम्मद इदरीस खान

राजस्थान शिक्षा विभाग में 14 से 20 वर्ष आयु वर्ग के ऊर्जावान किशोर-किशोरियाँ पर्याप्त संख्या में है। ये भविष्य के रत्न हैं। इन रत्नों को तराशने की आवश्यकता है। युवावस्था में पदार्पण की सीढ़ी है। विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास में प्रमुखतया शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, बौद्धिक तथा तकनीकी ज्ञान के साथ व्यक्तित्व का विकास करना है। शिक्षा की विभिन्न शाखाएँ किसी एक पक्ष की ओर विशेषकर ध्यान देती हैं। मात्र शारीरिक शिक्षा, खेल एवं योग के क्रियाकलाप ही ऐसे हैं, जो विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास की दिशा में सही कदम है। आवश्यकता इस बात की है कि इसकी सही क्रियान्विति हो। विद्यार्थी को शारीरिक शिक्षा, खेल एवं योग के विभिन्न क्रियाकलापों में वर्षपर्यन्त नियमित भागीदारी करने का सुअवसर मिले। मात्र चंद दिनों की भागीदारी, अभ्यास से खिलाड़ी विद्यार्थी के व्यक्तित्व निर्माण में कोई ठोस प्रभाव नहीं पड़ता है। सम्पूर्ण सत्र नियमित रूप से इनमें भागीदारी हो, सतत अभ्यास हो जिससे विद्यार्थी की नियमित दिनचर्या व्यवस्थित होगी, उनमें शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं बौद्धिक विकास होकर प्रभावी व्यक्तित्व का निखार होगा। दक्ष खिलाड़ी निकल सकेंगे।

चूँकि सत्रपर्यन्त शिक्षा के अन्य लाभकारी विषय यथा अंग्रेजी, हिन्दी, गणित, विज्ञान आदि के तकनीकी पक्षों के ज्ञान प्राप्ति में विद्यार्थी बोझिल रहता है, अतः इस अवधि में समय निकाल कर शारीरिक शिक्षा, खेल एवं योग के क्रियाकलापों में भी नियमित भागीदारी रखी जाए तथा सत्रान्त होने वाले ग्रीष्मावकाश का क्रियाशील उपयोग कर खेलों व योग में दक्षता बढ़ाई जाए।

शारीरिक शिक्षा, खेल एवं योग के विभिन्न क्रियाकलाप दो-चार बार करने से मनोरंजन की अनुभूति तो कराता है परन्तु लगातार अभ्यास के बिना दक्षता तक नहीं पहुँच पाते है, रुचि विकसित नहीं हो पाती है। इन क्रियाकलापों को सही तकनीक से सीख कर, सतत व नियमित अभ्यास का चक्र प्रतिदिन 2 से 4 घण्टे प्रातः एवं सायं करने का सुअवसर ग्रीष्मावकाश की क्रियाशीलता से ही मिल सकता है। यह विद्यार्थी में मनोरंजन के साथ आत्मसंतुष्टि देगा। उसकी

दक्षता बढ़ेगी, रुचि बढ़ेगी तथा ऑफ सीजन का प्रशिक्षण खेलों के प्रदर्शन में बुलंदियाँ प्रदान करेगा।

1970 के दशक में प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग के वटवृक्ष में यह व्यवस्था की हुई थी कि क्रियाशील अवकाश योजना बनाकर ग्रीष्मावकाश में विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा एवं खेल का प्रतिदिन 6 से 8 घण्टे अभ्यास विद्यार्थी खिलाड़ियों को कराया जाय। इस कार्य में विद्यालय के रुचिशील शिक्षकों को प्रातः एवं सायं 2 से 4 घण्टे तक चयनित खेलों में विद्यार्थियों को नियमित अभ्यास कराने का प्रावधान रखा गया। कार्य करने वाले शिक्षकों को ग्रीष्मावकाश में कार्य करने के एवज में 1/3 दिवसों का उपार्जित अवकाश का लाभ देने का प्रावधान भी रखा गया।

इस नियमित अभ्यास में विद्यार्थी खिलाड़ी, प्रशिक्षित होकर उस खेल विशेष में दक्ष बनता है। आगामी शिक्षा सत्र में विद्यालय क्रीड़ा प्रतियोगिताओं तथा अन्य क्रीड़ा प्रतियोगिताओं के लिए विद्यालय का एक सशक्त-संतुलित दल बनाने में बहुत सहायक होगा। इसमें प्रायः रणनीति यह बनाई जाती है कि विद्यालय की उच्चतम कक्षा यथा कक्षा 8, 10 या 12 के विद्यार्थियों को सम्मिलित नहीं कर, छोटी कक्षा के विद्यार्थियों का चयन कर प्रशिक्षण दिया जाए। ये प्रशिक्षित होकर आगामी शिक्षण सत्र के लिए विद्यालयी खेल दल को मजबूती दे सकेंगे। ग्रीष्मावकाश में विद्यार्थी अध्ययन के बोझ से मुक्त होकर अपने फुर्सत के समय का सर्वश्रेष्ठ उपयोग खेलों में दक्षता प्राप्त करने में कर सकता है। इससे शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं बौद्धिक विकास का मार्ग प्रशस्त होता है। उसकी दिनचर्या व्यवस्थित होकर सही तरीके से व्यक्तित्व निर्माण हेगा। वर्तमान समय के बढ़ते शैक्षणिक व तकनीकी ज्ञान के वातावरण में खेल एवं योग के अभ्यास के साथ-साथ 1-2 घण्टा शैक्षणिक विषयों यथा अंग्रेजी, विज्ञान, गणित, कम्प्यूटर शिक्षा को भी सम्मिलित किया जा सकता है, जिससे विद्यार्थी को दोहरा लाभ मिल सके।

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून के दिन विद्यालयों में प्रदर्शन विगत वर्षों से नियमित हो रहा है। ग्रीष्मावकाश क्रियाशील अवकाश योजना के प्रभावी लागू होने से योग दिवस पूर्ण तैयारी के साथ आयोजित हो सकेंगे। योग दिवस के लिये भारत सरकार द्वारा सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए निर्देशित क्रियाकलापों में प्रार्थना, विभिन्न योगासन, योगमुद्राएँ, प्राणायाम आदि का प्रदर्शन मात्र एक दिन में सही ढंग से नहीं हो पाता है। इन क्रियाओं का अभ्यास 'ग्रीष्मावकाश क्रियाशील योजना' में कम से कम 21 दिवस तक करने से योग दिवस पर प्रदर्शन भी अच्छा होगा तथा विद्यार्थियों व अन्य संभागियों में योग के प्रति आस्था बढ़ेगी, उनकी दिनचर्या में योग क्रियाएँ नियमित रूप से करते रहने की आदत विकसित होगी।

वर्तमान समय के प्रारंभिक व माध्यमिक शिक्षा विभाग के विद्यालयों में ग्रीष्मावकाश क्रियाशील अवकाश योजना को लागू कर खेलों व योग में दक्षता बढ़ाने का कार्य योजनाबद्ध ढंग से लागू किया जा सकता है। विद्यार्थियों में समय का सदुपयोग करने, व्यक्तित्व निर्माण की मनोवृत्ति बढ़ाने तथा योग संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए ग्रीष्मावकाश सबसे उपयुक्त समय है।

पूर्व उपनिदेशक (खेल)
83, एकता नगर, रमजान जी का हत्था,
बनाड़ रोड, जोधपुर
**मो: 9414918473**

# आदेश-परिपत्र : मई-जून, 2017


1. सत्र 2017-18 से शाला पोशाक (शाला गणवेश) का पुनर्निर्धारण।
2. प्रवेशोत्सव कार्यक्रम 2017-18 आयोजन के संबंध में।
3. सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र नई दिल्ली के द्वारा सत्र 2017-18 में शिक्षकों के लिए आयोजित की जाने वाली गतिविधियों का वार्षिक कैलेण्डर।
4. निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के प्रावधानों के अनुसार गैर सरकारी विद्यालयों में सत्र 2017-18 से प्रभावी प्रवेश प्रक्रिया के संबंध में।
5. मार्च, 2017 से जारी होने वाली राज्य बीमा पॉलिसी एवं फरदर हेतु घोषणा पत्र एसआईपीएफ पोर्टल पर ऑनलाइन सबमिट/प्राप्त किए जाने के संबंध में।
6. आई.ए.एस.ई./सी.टी.ई. संस्थानों द्वारा आयोजित सेवारत प्रशिक्षण कार्यक्रम सत्र 2017-18 का वार्षिक पंचांग एवं आवश्यक दिशा निर्देश।
7. दिनांक 21 जून 2017 को 'अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस' का आयोजन समस्त राजकीय एवं निजी शिक्षण संस्थाओं में समारोहपूर्वक किए जाने के सम्बन्ध में।
8. राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में 'विद्यालयी पूर्व विद्यार्थी मंच' के गठन एवं 'सखा संगम' कार्यक्रम के आयोजन के सम्बन्ध में।
9. कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राज. बीकानेर के समसंख्यक निर्देश पत्र क्रमांक : 87 दिनांक : 12.04.2017 द्वारा प्रदान किए निर्देशों में आंशिक संशोधन।


## 1. सत्र 2017-18 से शाला पोशाक (शाला गणवेश) का पुनर्निर्धारण।

● कार्यालय निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● परिपत्र ● संयुक्त शासन सचिव, शिक्षा (ग्रुप-1) विभाग, राजस्थान जयपुर के पत्र क्रमांक प. 32 (01) शिक्षा-1/2000 पार्ट जयपुर दिनांक 20.02.2017 के द्वारा राज्य की समस्त राजकीय शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं के लिए समसामयिक परिस्थितियों के अनुरूप शैक्षिक सत्र 2017-18 से शाला पोशाक (शाला गणवेश) का पुनर्निर्धारण निम्नानुसार किया गया है:-

1. **छात्रों के लिए :-** पैन्ट या हाफ पैन्ट कथई रंग तथा शर्ट हल्का भूरा (लाइट ब्राउन) रंग का।
2. **छात्राओं के लिए :-** सलवार/स्कर्ट एवं चुन्नी कथई रंग की तथा कुर्ता/शर्ट हल्का भूरा (लाईट ब्राउन) रंग का।

छात्र/छात्राओं को गुरुवार को शाला पोशाक पहनने से छूट रहेगी। साथ ही कक्षा एक से पांच में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं का शाला पोशाक पहनने की अनिवार्यता पर जोर नहीं दिया जावे।

यह व्यवस्था शैक्षिक सत्र 2017-18 से प्रभावी होगी।

● निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा बीकानेर ● क्रमांक शिविरा/प्रारं/शैक्षिक/एबी/ड्रेस परिवर्तन/11-12/44 ● दिनांक 30.03.2017

## 2. प्रवेशोत्सव कार्यक्रम 2017-18 आयोजन के संबंध में।

कार्यालय निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक शिविरा/प्रारं./शैक्षिक/जी/प्रवेशोत्सव कार्यक्रम/2017-18/दिनांक 03.04.17 ● उप निदेशक प्रारम्भिक शिक्षा (समस्त) जिला शिक्षा अधिकारी, प्रारम्भिक शिक्षा (समस्त) ● विषय : प्रवेशोत्सव कार्यक्रम 2017-18 के आयोजन के संबंध में।

शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक बालक का मौलिक अधिकार है तथा प्रत्येक बालक को शिक्षा उपलब्ध करवाना राज्य सरकार का दायित्व है शिक्षा के सार्वजनीकरण के लक्ष्य की पूर्ति हेतु 06 से 14 आयु वर्ग के अनामांकित बालकों का राजकीय विद्यालयों में प्रवेश सुनिश्चित कराने तथा नामांकन वृद्धि हेतु इस वर्ष दो चरणों में प्रवेशोत्सव कार्यक्रम निम्नानुसार आयोजित किए जाने का निर्णय किया गया है।

1. प्रथम चरण :- दिनांक 26 अप्रैल 2017 से 09 मई 2017 तक
2. द्वितीय चरण :- दिनांक 20 जून 2017 से 05 जुलाई 2017 तक

प्रवेशोत्सव कार्यक्रम के समय वंचित बालकों को विद्यालयों के जोड़ने तथा शत प्रतिशत नामांकन का लक्ष्य प्राप्त करने हेतु निम्नानुसार गतिविधियों का आयोजन किया जाना सुनिश्चित करें :-

1. प्रवेशोत्सव कार्यक्रम के संबंध में संलग्न कार्यक्रम के अनुसार प्रतिदिन की गतिविधियों का आयोजन किया जावे।
2. विद्यालय स्तर पर शिक्षा से वंचित/अनामांकित/ड्रापऑउट तथा आँगनबाड़ी केन्द्रों से कक्षा 1 में प्रवेश लेने वाले लक्ष्य समूह के बालक-बालिकाओं की नामवार सूची तैयार कर शिक्षकों को लक्ष्य आंवटित करें, तत्पश्चात अभिभावकों से व्यक्तिशः सम्पर्क कर लक्षित समूह के बालक-बालिकाओं का विद्यालयों में प्रवेश सुनिश्चित किया जाए।
3. प्रवेशोत्सव कार्यक्रम के दौरान आमजन व अभिभावकों को राज्य सरकार द्वारा विद्यार्थियों के लिए संचालित विभिन्न योजनाओं तथा छात्रवृति, निःशुल्क पाठयपुस्तकें, निःशुल्क शिक्षा, मिड-डे मिल, दुर्घटना बीमा, शैक्षिक भ्रमण, मेधावी विद्यार्थियों को लेपटॉप, आपकी बेटी योजना इत्यादि से अवगत करावें।
4. प्रवेशोत्सव कार्यक्रम को प्रभावी बनाने तथा वंचित बालकों को शाला में प्रवेश दिलाने के लिए वातावरण निर्माण करने हेतु विद्यालय स्तर/ढाणी/मगरा स्तर पर रैलियाँ तथा अन्य कार्यक्रम आयोजित किए जाएं।
5. प्रवेशोत्सव से सम्बन्धित पैम्पलेट्स का आवश्यक संख्या में मुद्रण कर ग्राम/ढाणी/कस्बे में वितरण किया जावे व प्रतिदिन के कार्यक्रमों का समाचार पत्रों/सोशल मीडिया के माध्यम से व्यापक प्रचार प्रसार किया जाए।
6. अनामांकित व ड्रॉप आउट बालकों को चिह्नित कर उनके अभिभावकों को व्यक्तिशः सम्पर्क कर उन्हें शाला में आने हेतु प्रेरित किया जाए।
7. प्रवेशोत्सव कार्यक्रम में जनप्रतिनिधियों/ग्राम समुदाय, स्वयं सेवी संगठनों तथा विद्यालय प्रबन्धन समिति के सदस्यों का सक्रिय सहयोग प्राप्त करें।
8. प्रवेशोत्सव कार्यक्रम में नवप्रवेशी बालकों का रोली, टीका लगाकर

स्वागत किया जाए तथा ऐसे प्रवेश लेने वाले बालकों को पाठ्यपुस्तकें व अन्य उपलब्ध सामग्री वितरित की जाए।

9. प्रारम्भिक शिक्षा विभाग के अन्तर्गत संचालित, विद्यालयों के आगामी तीन वर्षों के नामांकन लक्ष्य निर्धारित कर विद्यालयवार जिलेवार सूचनाएँ शालादर्शन पोर्टल पर अपलोड की गई है अतः जिले से सम्बन्धित विद्यालयवार सूचनाएँ डाउनलोड कर विद्यालयों को आवंटित लक्ष्य अनुसार नामांकन अभिवृद्धि सुनिश्चित करवाई जाए।
10. प्रवेशोत्सव के दौरान प्रत्येक अध्यापक कम से कम 20 बच्चों या क्षेत्र के समस्त अनामांकित बालकों का नामांकन करवाना सुनिश्चित करें।
11. प्रवेशोत्सव कार्यक्रम में अभिभावकों/जनप्रतिनिधियों/आमजन का सक्रिय सहयोग व संबलन प्राप्त करने हेतु दिनांक 29.4.2017 को विद्यालय प्रबन्धन समिति की साधारण सभा एवं अध्यापक अभिभावक परिषद की बैठक आयोजित कर परिक्षेत्र के समस्त अनामांकित व ड्रापआउट बालकों का राजकीय विद्यालयों में प्रवेश कराने व शत प्रतिशत नामांकन लक्ष्य प्राप्त करने हेतु वृहद स्तर पर निर्धारित कर कार्ययोजना तैयार करें।
12. प्रवेशोत्सव कार्यक्रम में नवप्रवेशित व नामांकित बालकों के संबंध में विद्यालयों में प्रतिदिन का अभिलेख का संधारण किया जाए तथा संलग्न प्रपत्र 1 व 3 संस्था प्रधान द्वारा दैनिक नवप्रवेशोत्सव छात्र-छात्राओं की संख्या तथा प्रपत्र 2 प्रथम चरण में नवप्रवेशित छात्र-छात्राओं की संख्या एवं प्रपत्र 4 में द्वितीय चरण में नवप्रवेशोत्सव छात्र छात्राओं की संख्या तथा प्रपत्र 5 में प्रथम चरण एवं द्वितीय चरण दोनों की समेकित सूचना तैयार कर इस कार्यालय की ई मेल आईडी प्रपत्र 5 में प्रथम चरण एवं द्वितीय चरण दोनों की समेकित सूचना तैयार कर इस कार्यालय की ई मेल आईडी shakshikcelledu@gmail.com पर भिजवाना सुनिश्चित करें।

प्रवेशोत्सव कार्यक्रम क प्रभावी क्रियान्वयन एवं नामांकन के शत-प्रतिशत लक्ष्य की पूर्ति हेतु उक्त निर्देशों की पालना सुनिश्चित की जाए।

● निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

## प्रवेशोत्सव : कार्यक्रम रूपरेखा

(चलो पढ़ाएँ-आगे बढ़ाएँ-राष्ट्र धर्म निभाएँ)

**प्रस्तावना-**

गत वर्ष विभाग द्वारा चलाए गए प्रवेशोत्सव कार्यक्रम में शिक्षा विभाग के समस्त अधिकारी, शिक्षक, कार्मिक जनप्रतिनिधि व अभिभावकों द्वारा दिए गए सहयोग से विभाग ने नामांकन वृद्धि में उत्साहजनक सफलता प्राप्त की है। गत वर्ष प्रवेशोत्सव कार्यक्रम से पहले समस्त राजकीय विद्यालयों हेतु आगामी तीन वर्षों के नामांकन लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं। विभाग लक्ष्य को अर्जित करने के लिए कटिबद्ध है, अतः इस वर्ष भी विभाग ने प्रवेशोत्सव को धूमधाम से मनाने का निर्णय लिया है। नामांकन लक्ष्य को अर्जित करने के इन चुनौतीपूर्ण कार्य में महत्त्वपूर्ण भूमिका शिक्षक तथा संस्था प्रधानों की है। विभाग अपेक्षा रखता है कि शिक्षक व संस्थाप्रधान चुनौती को स्वीकार करते हुए वर्ष के नामांकन लक्ष्य को अर्जित करेंगे।

प्रायः यह देखा गया है कि कक्षा 1 में प्रवेश लेने वाले छात्रों की संख्या कक्षा 08 तथा पहुँचने-पहुँचते काफी कम रह जाती है। अर्थात विद्यार्थी अपनी शिक्षा निरन्तर नहीं रख पाते हैं। प्रवेशोत्सव मात्र विद्यालय की एन्ट्री कक्षा में विद्यार्थी के प्रवेश तक ही सीमित नहीं है वरन् यह मध्य की कक्षाओं में ड्रॉप-आउट हुए विद्यार्थियों को पुनः शिक्षा की मुख्यधारा में लाए जाने का भी प्रयास है।

शिक्षा में निरन्तरता को बनाए रखना राज्य का एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। विभिन्न प्रकार की प्रोत्साहन व छात्रवृत्ति योजनाओं के संचालन के बाद भी इस क्षेत्र में वांछित सफलता अभी शेष हैं।

अतः आवश्यक हो जाता है कि प्रत्येक विद्यार्थी की ओर अपना ध्यान केन्द्रित किया जावे तथा उनका पूर्ण tracking रिकार्ड भी संधारित हो। इस हेतु अपने आस-पास के फीडर विद्यालयों से अंतिम कक्षा उत्तीर्ण करने वाले विद्यार्थियों की सूची प्राप्त करें साथ ही निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकों को राजकीय विद्यालयों की विशेषताओं यथा-पूर्ण प्रशिक्षित योग्य शिक्षक, विभिन्न छात्रवृत्ति एवं प्रोत्साहन संबंधी सुविधाओं के बारे में अवगत और आश्वस्त करवाते हुए राजकीय विद्यालय में प्रवेश हेतु प्रेरित करें।

वर्ष 2017-18 हेतु प्रारंम्भिक शिक्षा विभाग द्वारा इस सत्र की वार्षिक परीक्षा के समापन के साथ ही नामांकन वृद्धि हेतु एक व्यापक अभियान चलाए जाने का निश्चय किया गया है। प्रत्येक विद्यालय में कार्यरत शिक्षक एवं संस्था प्रधान का दायित्व है कि वे अपने परिक्षेत्र के समस्त विद्यार्थियों का प्रवेश राजकीय विद्यालयों में करवाया जाना सुनिश्चित करेंगे। प्रवेशोत्सव का यह विशेष अभियान दिनांक 26 अप्रैल 2017 से विधिवत रूप से चलाया जाएगा। इस अभियान द्वारा प्रवेश के निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त किया जाएगा। यह अभियान समुदाय को विद्यालय से जोड़ने के रास्ते में मील का पत्थर साबित हो, इसलिए आवश्यक है कि इसमें अभिभावकों, जनप्रतिनिधियों एवं स्थानीय जन-समुदाय का प्रत्येक स्तर पर सहयोग प्राप्त करते हुए इस अभियान को सफल बनाएँ।

**उद्देश्य-**

- कक्षा 1 में नवप्रवेशी बालकों को चिह्नित कर नामांकित करवाना।
- अध्ययन की निरन्तरता हेतु अध्ययन निरन्तर नहीं रख पाने वाले छात्र-छात्राओं पर विशेष ध्यान देना।
- ड्रॉप आउट हुए छात्र-छात्राओं को "Back-to-school" हेतु कार्ययोजना बनाना।
- मौसमी पलायन करने वाले बालक-बालिकाओं के लिए सर्व शिक्षा अभियान द्वारा संचालित गैर आवासीय विशेष शिक्षण शिविरों से उत्तीर्ण बच्चों को मुख्य धारा में प्रवेश दिलवाना।
- बाल श्रम में संलग्न ड्रॉप आउट/अनामांकित बालक-बालिकाओं को चिह्नित कर पूर्ववर्ती कक्षा से आगे अध्ययन हेतु प्रवेश दिलवाना।

**दो प्रमुख चरण-**

3. **प्रथम चरण :-** दिनांक 26 अप्रैल 2017 से 09 मई 2017 तक
4. **द्वितीय चरण :-** (दिनांक 20 जून 2017 से 05 जुलाई 2017 तक।) शेष रहे हार्ड कोर लक्ष्य समूह हेतु

**पूर्व तैयारियाँ एवं प्रचार-प्रसार/आई.ई.सी. (Information for**

**Education Communication)**

**नजरी नक्शा बनाना :–** प्राथमिक/उच्च प्राथमिक विद्यालयों में उनके फीडर स्कूलों/निवास स्थानों का एक कार्डशीट पर नजरी नक्शा तैयार करना जिसमें नामांकन लक्ष्य और विद्यालय की स्थिति एवं उपलब्धि (At a glance) अंकित हो। यह नजरी नक्शा आपके विद्यालय में हर समय उपलब्ध हो ताकि निरीक्षण के समय विभागीय अधिकारियों/ जनप्रतिनिधियों से अभियान बाबत् सम्बलन प्राप्त करने में सुविधा रहे।

- शहरी विद्यालयों के निकटस्थ फीडर स्कूल/कैचमेन्ट एरिया का निर्धारण।
- प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा शिक्षा के निरन्तरता हेतु सरकार द्वारा किए जा रहे अभियान के बारे में व्यापक प्रचार–प्रसार करना।
- शिक्षा की निरन्तरता की इस अभिनव पहल पर आधारित पोस्टर एवं हैण्ड आउट्स प्रिंट करवाना।
- ढोल एवं गाजे–बाजे के साथ रैलियां आयोजित करना जिसमें बैनर एवं नारों के माध्यम से प्रचार–प्रसार करने हेतु मोहल्ला/ग्रामवार टोलियाँ बनाकर लक्ष्य समूह से घर–घर सम्पर्क करने करते हुए लक्ष्यसमूह को पीले, नीले, लाल एवं सफेद कार्ड सम्बन्धित छात्र–छात्रा के अभिभावकों को प्रातः अथवा सायंकाल में वितरित कर उनके बच्चों को आगामी कक्षा में प्रवेश दिलाने हेतु निमन्त्रित करना।
- प्रवेश हेतु निमन्त्रण–

प्रारम्भिक शिक्षा विभाग राजस्थान
प्रवेशोत्सव अभियान 2017
कक्षा..... में प्रवेश हेतु निमन्त्रण

जिला.....ब्लॉक.....
नाम छत्र/छात्रा.....
पिता/माता/संरक्षक का नाम.....
ग्राम/वासस्थान.....
पंचायत का नाम.....
पूर्ववर्ती विद्यालय का नाम–(यदि कोई हो तो)
प्रवेश लेने वाले विद्यालय का नाम–.....
विद्यालय में आयाजित होने वाले प्रवेशोत्सव की तिथि.....
हस्ताक्षर संस्था प्रधान
राजकीय प्राथमिक विद्यालय/उच्च प्राथमिक विद्यालय.....

**लक्ष्य समूह निर्धारण–**

- पहली कक्षा में प्रवेश लेने वाले लक्ष्य समूह के बच्चों की सूचियाँ फीडिंग एरिया/कैचमेन्ट एरिया के आँगनबाड़ी केन्द्रों से प्राप्त करना।
- सर्व शिक्षा अभियान से आउट ऑफ स्कूल बच्चों की सूचियाँ प्राप्त करना।
- प्रवेश लेने वाले लक्ष्य समूह के बच्चों को चिह्नित कर सूचियाँ तैयार करवाना।
- कक्षा 1 में प्रवेश हेतु प्राथमिक शिक्षा में प्रवेश करने वाले बच्चों की सूचियाँ आस–पास की ढाणियों से प्राप्त करना।
- कक्षा 5 में प्रवेश हेतु प्रारम्भिक शिक्षा पूर्ण करने वाले बच्चों की सूचियाँ प्राथमिक विद्यालयों से प्राप्त करना।

**कन्वर्जेन्स (सहयोग संस्थाएं)**

i. जिला प्रशासन।
ii. शिक्षा विभाग (प्रारंभिक शिक्षा)।
iii. शिक्षा विभाग (माध्यमिक शिक्षा)।
iv. जिला शिक्षा प्रशिक्षण संस्थान।
v. सर्व शिक्षा अभियान।
vi. राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान।
vii. पंचायतीराज संस्थाएँ एवं शहरी निकाय।
viii. समाज कल्याण विभाग।
ix. महिला एवं बाल विकास विभाग।
x. साक्षरता एवं सतत शिक्षा विभाग।
xi. लक्ष्य समूह के अभिभावक गण।
xii. स्वयंसेवी संस्थाएँ।

**प्रवेशोत्सव क्रियान्विति के महत्त्वपूर्ण बिन्दु–**

- प्रवेशोत्सव से संबंधित पेम्पलेट्स का आवश्यक संख्या में मुद्रण एवं ग्राम/कस्बे/ढाणियों में वितरण।
- आवश्यकतानुसार प्रवेश हेतु निमंत्रण कार्ड का मुद्रण करवाना।
- पंचायत एवं ब्लॉक स्तरीय समितियों की बैठकों में फीडिंग/कैचमेन्ट एरिया का निर्धारण करना।
- नव प्रवेशी बालक/बालिकाओं की सूचियाँ तैयार करना तथा परीक्षा परिणाम की घोषणा के साथ ही लक्ष्य समूह के निर्धारण हेतु संस्था प्रधानों से कक्षा 5 उत्तीर्ण बालक/बालिकाओं की सूचियों का validation करवाना।
- सूचियों के आधार पर सम्बन्धित विद्यालयों को लक्ष्य आवंटित करना।
- प्रवेशोत्सव से पूर्व प्रतिदिन का कार्यक्रम बनाकर समाचार पत्रों के माध्यम से व्यापक प्रचार प्रसार करना।
- नव प्रवेशी बालक–बालिकाओं को निःशुल्क पाठ्यपुस्तकों का वितरण और अन्य प्रोत्साहन सामग्री वितरित करवाना।
- समय समय पर प्रभावी मॉनिटरिंग द्वारा नामांकन का शत प्रतिशत लक्ष्य अर्जित करना।
- अभिभावक सम्पर्क/जन सम्पर्क करने से पूर्व यह आवश्यक है कि शिक्षा से वंचित जिन बालक–बालिकाओं के अभिभावकों से सम्पर्क किया जाना है, उनकी सूची विद्यालय स्तर तक प्रत्येक शिक्षक के पास उपलब्ध हो। इस हेतु विद्यालय के आस–पास के क्षेत्र में शिक्षा से वंचित अनामांकित बच्चों के प्रवेश हेतु V.E.R. (Village education register)/ W.E.R. (Ward education register) का भी प्रयोग किया जा सकता है, जिसे उस क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालय के नोडल प्रधानाध्यापक से प्राप्त किया जा सकता है।
- प्रवेशोत्सव कार्यक्रम में स्थानीय जन प्रतिनिधियों यथा सरपंच, वार्ड पंच तथा यथा संभव माननीय सांसद, विधायक को आमंत्रित कर उनका सहयोग प्राप्त करना।

**प्रवेशोत्सव कार्यक्रम–(प्रथम चरण) माह अप्रैल–मई 2017**

**(26.4.2017 से 09.05.2017 तक)**
**सब पढ़ें सब बढ़ें**

| | |
|---|---|
| 26 अप्रैल 2017 | स्वयं प्रवेश लेने वाले बच्चों का प्रवेश करवाना, बालक बालिकाओं एवं अध्यापकों की टोलियों का गठन कर उन अभिभावकों से विशेष रूप से संपर्क स्थापित करना जिनके बच्चे एसएसए द्वारा किए गए सीटीएस सर्वे अनुसार विद्यालय जाने योग्य हैं तथा विद्यालय में अनामांकित हैं उन्हें प्रवेश दिलाने हेतु प्रेरित करना साथ ही बालिका नामांकन/बालिका प्रवेश हेतु विशेष ध्यान देना। |
| 27 अप्रैल 2017 | स्थानीय जन प्रतिनिधियों, अभिभावकों एवं बच्चों के साथ रैली का आयोजन करना जिसमें शिक्षा की महत्ता से संबंधित बैनर, स्टीकर, नारे आदि का उपयोग करते हुए ढोल मजीरे के साथ रैली निकालना। विद्यालय परिसर की साज सज्जा, वृक्षारोपण, स्थानीय जन प्रतिनिधियों के नेतृत्व में प्रवेशोत्सव आदि पर प्रकाश डालते हुए समारोह का आयोजन करना। |
| 28 अप्रैल 2017 | प्रार्थना सभा के आयोजन में ही विद्यालय में नवीन प्रवेश लेने वाले बालक बालिकाओं का परम्परागत तरीके से स्वागत एवं पारस्परिक परिचय। जनप्रतिनिधियों के नेतृत्व में निःशुल्क पाठ्य पुस्तकों का वितरण। |
| 29 अप्रैल 2017 | विद्यालय प्रबन्ध समिति/अध्यापक अभिभावक समिति की बैठक का आयोजन तथा स्थानीय जन प्रतिनिधि, सरपंच, वार्ड पंच एवं सम्मानित व्यक्तियों द्वारा बच्चों को सम्बोधन। |
| 01 मई 2017 | बाल सभा एवं ऐसे सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन, जो बच्चों को प्रवेश देने में प्रेरक बने। चित्रकला एवं सुलेख प्रतियोगिताओं का आयोजन। |
| 02 मई 2017 | बच्चों हेतु ग्रामीण खेलकूद प्रतियोगिताओं के आयोजन, बालमेलों का आयोजन, शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रदर्शन। पुनः ढोल नगाड़े इत्यादि के साथ रैली, प्रभात फेरी का आयोजन। ऐसे बच्चों के अभिभावकों से सम्पर्क करना जो विद्यालय में प्रवेश लेने से छूटे हुए हैं। |
| 03 मई 2017 | स्थानीय दार्शनीय स्थलों पर बच्चों को ले जाना। शाला में पंचवटी लगाने हेतु जगह तैयार करना, विचार विमर्श आदि करना। प्रवेशोत्सव के दौरान विद्यालय में नवीन प्रवेश लेने वाले छात्रों एवं अभिभवकों का स्वागत। |
| 04 मई 2017 | विद्यालय में अध्ययनरत बालकों के स्वास्थ्य परीक्षण की व्यवस्था। प्राकृतिक आपदाओं एवं मौसमी बीमारियों से बचाव की जानकारी। पाँच संकल्प शिक्षकों एवं छात्रों के लिए दिलाना। |
| 05 मई 2017 | अध्यापकों की टोलियों द्वारा छात्रों एवं अभिभावकों से सम्पर्क कर प्रवेश योग्य बालकों को शाला में प्रवेश हेतु आने वाली समस्या का पता लगाना। |
| 06 मई 2017 | शाला/ग्राम स्तर पर प्राप्त समस्याओं का निराकरण कर प्रवेश की शत-प्रतिशत व्यवस्था करना। |
| 08 मई 2017 | चिह्नित बालकों के अभिभावकों से मिलना जो अभी तक प्रवेश के लिए शाला प्रधान से मिलने नहीं आए। |
| 09 मई 2017 | पखवाड़े के दौरान किए गए कार्यों की समीक्षा एवं उपलब्धियों का प्रचार-प्रसार एवं पखवाड़े के अन्तर्गत किए गए कार्यों की रिपोर्ट उच्चाधिकारियों को प्रेषित करना। |

**प्रवेशोत्सव कार्यक्रम-(द्वितीय चरण) माह जून-जुलाई 2017**
**(20.6.2017 से 05.07.2017 तक)**
**सब पढ़ें सब बढ़ें**

| | |
|---|---|
| 20 जून 2017 | स्वयं प्रवेश लेने वाले बच्चों का प्रवेश करवाना, बालक बालिकाओं एवं अध्यापकों की टोलियों का गठन कर उन अभिभावकों से विशेष रूप से संपर्क स्थापित करना जिनके बच्चे एसएसए द्वारा किए गए सीटीएस सर्वे अनुसार विद्यालय जाने योग्य हैं तथा विद्यालय में अनामांकित हैं उन्हें प्रवेश दिलाने हेतु प्रेरित करना साथ ही बालिका नामांकन/बालिका प्रवेश हेतु विशेष ध्यान देना। |
| 21 जून 2017 | स्थानीय जन प्रतिनिधियों, अभिभावकों एवं बच्चों के साथ रैली का आयोजन करना जिसमें शिक्षा की महत्ता से संबंधित बैनर, स्टीकर, नारे आदि का उपयोग करते हुए ढोल मजीरे के साथ रैली निकालना। विद्यालय परिसर की साज सज्जा, वृक्षारोपण, स्थानीय जन प्रतिनिधियों के नेतृत्व में प्रवेशोत्सव आदि पर प्रकाश डालते हुए समारोह का आयोजन करना। |
| 22 जून 2017 | प्रार्थना सभा का आयोजन में ही विद्यालय में नवीन प्रवेश लेने वाले बालक-बालिकाओं का परम्परागत तरीके से स्वागत एवं पारस्परिक |

| | |
|---|---|
| | परिचय। जनप्रतिनिधियों के नेतृत्व में निःशुल्क पाठ्यपुस्तकों का वितरण। |
| 23 जून 2017 | विद्यालय प्रबन्ध/अध्यापक अभिभावक समिति की बैठक का आयोजन तथा स्थानीय जनप्रतिनिधि, सरपंच वार्डपंच एवं सम्मानित व्यक्तियों द्वारा बच्चों को सम्बोधन। |
| 24 जून 2017 | बाल सभा एवं ऐसे सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन, जो बच्चों के प्रवेश में प्रेरक बने। चित्रकला एवं सुलेख प्रतियोगिताओं का आयोजन। |
| 27 जून 2017 | बच्चों हेतु ग्रामीण खेलकूद प्रतियोगिताओं के आयोजन, बालमेलों का आयोजन, शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रदर्शन। |
| 28 जून 2017 | पुनः ढोल नगाड़े इत्यादि के साथ रैली, प्रभात फेरी का आयोजन। ऐसे बच्चों के अभिभावकों से सम्पर्क करना जो विद्यालय में प्रवेश लेने से छूटे हुए हैं। |
| 29 जून 2017 | स्थानीय दर्शनीय स्थलों पर बच्चों को ले जाना। शाला में पंचवटी लगाने हेतु जगह तैयार करना, विचार विमर्श आदि करना। |
| 30 जून 2017 | प्रवेशोत्सव के दौरान विद्यालय में नवीन प्रवेश लेने वाले छात्रों एवं अभिभावकों का स्वागत। |
| 01 जुलाई 2017 | विद्यालय में अध्ययनरत बालकों के स्वास्थ्य परीक्षण की व्यवस्था। प्राकृतिक आपदाओं एवं मौसमी बीमारियों से बचाव की जानकारी। पाँच संकल्प शिक्षकों एवं छात्रों के लिए दिलाना। |
| 03 जुलाई 2017 | अध्यापकों की टोलियों द्वारा छात्रों एवं अभिभावकों से सम्पर्क कर प्रवेश योग्य बालकों को शाला में प्रवेश हेतु आने वाली समस्या का पता लगाना। शाला/ग्राम स्तर पर प्राप्त समस्याओं का निराकरण कर प्रवेश की शत प्रतिशत व्यवस्था करना। |
| 04 जुलाई 2017 | शाला/ग्राम स्तर पर प्राप्त समस्याओं का निराकरण कर प्रवेश की शतप्रतिशत व्यवस्था करना। |
| 05 जुलाई 2017 | प्रथम एवं द्वितीय पखवाड़े के दौरान किए गए कार्यों की समीक्षा एवं उपलब्धियों का प्रचार-प्रसार एवं पखवाड़े के अन्तर्गत किए गए कार्यों की रिपोर्ट उच्चाधिकारियों को प्रेषित करना। |

प्रपत्र संख्या-1

**नव प्रवेशित बच्चों हेतु प्रगति विवरण**

विद्यालय का नाम..... पंचायत/निकाय.....पंचायत समिति.....

| दिनांक | कक्षा 1 में प्रवेश | | | कक्षा 2 में प्रवेश | | | कक्षा 3 में प्रवेश | | | कक्षा 4 में प्रवेश | | | कक्षा 5 में प्रवेश | | | कक्षा 6 में प्रवेश | | | कक्षा 7 में प्रवेश | | | कक्षा 8 में प्रवेश | | | योग नामांकन | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | उपलब्धि | | | उपलब्धि | | | उपलब्धि | | | उपलब्धि | | | उपलब्धि | | | उपलब्धि | | | उपलब्धि | | | उपलब्धि | | | उपलब्धि | | |
| | बा. | बालि. | योग | बा. | बालि. | योग | बा. | बालि. | योग | बा. | बालि. | योग | बा. | बालि. | योग | बा. | बालि. | योग | बा. | बालि. | योग | बा. | बालि. | योग | बा. | बालि. | योग |
| 26.4.2017 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 27.4.2017 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 28.4.2017 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 29.4.2017 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 1.5.2017 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 2.5.2017 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 3.5.2017 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 4.5.2017 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 5.5.2017 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 6.5.2017 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 7.5.2017 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 8.5.2017 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 9.5.2017 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| योग- | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

ह. संस्था प्रधान

## प्रवेशोत्सव कार्यक्रम प्रथम चरण 2017–18 (26 अप्रैल 2017 से 09 मई 2017)

### प्रवेशोत्सव के प्रथम चरण की समाप्ति के पश्चात नव प्रवेशित बच्चों का कुल जिलेवार नामांकन

प्रपत्र संख्या–2

जिले का नाम.....

| क्र. सं. | ब्लॉक | कक्षा 1 में | | | कक्षा 2 में | | | कक्षा 3 में | | | कक्षा 4 में | | | कक्षा 5 में | | | कक्षा 6 में | | | कक्षा 7 में | | | कक्षा 8 में | | | योग नामांकन | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | बा. | बालि. | योग | बा. | बालि. | योग | बा. | बालि. | योग | बा. | बालि. | योग | बा. | बालि. | योग | बा. | बालि. | योग | बा. | बालि. | योग | बा. | बालि. | योग | बा. | बालि. | योग |
| 1 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 2 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 3 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | योग– | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

ह. जिला शिक्षा अधिकारी

### प्रवेशोत्सव कार्यक्रम द्वितीय चरण 20 जून 2017 से 05 जुलाई 2017

प्रपत्र संख्या–3

### नव प्रवेशित बच्चों हेतु प्रगति विवरण

विद्यालय का नाम..... पंचायत/निकाय ..... पंचायत समिति.....

| दिनांक | कक्षा 1 में प्रवेश | | | कक्षा 2 में प्रवेश | | | कक्षा 3 में प्रवेश | | | कक्षा 4 में प्रवेश | | | कक्षा 5 में प्रवेश | | | कक्षा 6 में प्रवेश | | | कक्षा 7 में प्रवेश | | | कक्षा 8 में प्रवेश | | | योग नामांकन | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | उपलब्धि | | | उपलब्धि | | | उपलब्धि | | | उपलब्धि | | | उपलब्धि | | | उपलब्धि | | | उपलब्धि | | | उपलब्धि | | | उपलब्धि | | |
| | बा. | बालि. | योग | बा. | बालि. | योग | बा. | बालि. | योग | बा. | बालि. | योग | बा. | बालि. | योग | बा. | बालि. | योग | बा. | बालि. | योग | बा. | बालि. | योग | बा. | बालि. | योग |
| 20.6.2017 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 21.6.2017 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 22.6.2017 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 23.6.2017 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 24.6.2017 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 27.6.2017 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 28.6.2017 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 29.6.2017 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 30.6.2017 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 1.7.2017 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 3.7.2017 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 4.7.2017 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 5.7.2017 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| योग– | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

ह. संस्था प्रधान

### प्रवेशोत्सव के द्वितीय चरण की समाप्ति के पश्चात नव प्रवेशित बच्चों का कुल जिलेवार नामांकन

जिले का नाम

प्रपत्र संख्या–4

| क्र. सं. | ब्लॉक | कक्षा 1 में | | | कक्षा 2 में | | | कक्षा 3 में | | | कक्षा 4 में | | | कक्षा 5 में | | | कक्षा 6 में | | | कक्षा 7 में | | | कक्षा 8 में | | | योग नामांकन | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | बा. | बालि. | योग | बा. | बालि. | योग | बा. | बालि. | योग | बा. | बालि. | योग | बा. | बालि. | योग | बा. | बालि. | योग | बा. | बालि. | योग | बा. | बालि. | योग | बा. | बालि. | योग |
| 1 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 2 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 3 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | योग– | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

ह. जिला शिक्षा अधिकारी

प्रपत्र संख्या–5

**प्रवेशोत्सव 2017–18 के संबंध में प्रवेशोत्सव के दौरान प्रथम एवं द्वितीय चरण समाप्ति के पश्चात नवप्रवेशित छात्र–छात्राओं की जिले का कुल नामांकन**

जिले का नाम

| चरण | कक्षा 1 में | | | कक्षा 2 में | | | कक्षा 3 में | | | कक्षा 4 में | | | कक्षा 5 में | | | कक्षा 6 में | | | कक्षा 7 में | | | कक्षा 8 में | | | योग नामांकन | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | बा. | बालि. | योग | बा. | बालि. | योग | बा. | बालि. | योग | बा. | बालि. | योग | बा. | बालि. | योग | बा. | बालि. | योग | बा. | बालि. | योग | बा. | बालि. | योग | बा. | बालि. | योग |
| प्रथम चरण की समाप्ति पर | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| द्वितीय चरण की समाप्ति पर | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| कुल नामांकन | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

ह. जिला शिक्षा अधिकारी

### 3. सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र नई दिल्ली के द्वारा सत्र 2017–18 में शिक्षकों के लिए आयोजित की जाने वाली गतिविधियों का वार्षिक कैलेण्डर।

● कार्यालय निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा–माध्य/माध्यमिक/मा–द/सी.सी.आर.टी./ 2016–17 दिनांकः 27.03.2017 ●आदेश

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र, नई दिल्ली के द्वारा शिक्षा के क्षेत्र शिक्षा को संस्कृति के साथ जोड़ने के विस्तृत क्षेत्र को समाहित करते हुए, बच्चे के व्यक्तित्व विकास पर, विशेषकर बच्चे में निहित प्रतिभा को खोजने तथा उसे रचनात्मक रूप से अभिव्यक्त करने में उसकी सहायता करने के संदर्भ में कार्य–प्रणालियाँ विकसित करने तथा छात्रों को प्राकृतिक व सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में शामिल करने तथा स्थानीय सामग्री के उपयोग और सामुदायिक अंतर्संबंधों द्वारा भारतीय सांस्कृतिक विरासत के प्रति व्यापक चेतना विकसित करने के उद्देश्य से अनेक गतिविधियाँ यथाः अनुस्थापन पाठ्यक्रम, कार्यशालाएँ, प्रशिक्षित शिक्षकों के लिए पुनश्चर्या पाठ्यक्रम तथा सेमिनार आयोजित करता है।

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र, नई दिल्ली द्वारा वर्ष 2017–18 में शिक्षकों के लिए आयोजित की जाने वाली गतिविधियों का वार्षिक कैलेण्डर जारी किया है। इन प्रशिक्षण में भाग लेने वाले शिक्षकों की योग्यता भी कैलेण्डर में उल्लेखित है, जिसे विभागीय वेबसाइट (education.rajasthan.gov.in/secondary) पर अपलोड किया जा रहा है।

प्रशिक्षण में भाग लेने के इच्छुक रुचिशील तथा इन गतिविधियों के लिए निर्धारित योग्यता रखने वाले शिक्षक निर्धारित प्रारूप में अपना आवेदन संस्था प्रधान से अग्रेषित कर संबंधित उपनिदेशक–माध्यमिक शिक्षा को प्रेषित करें। उपनिदेशक माध्यमिक प्राप्त आवेदनों में अपने अधीनस्थ कार्यक्षेत्र से प्रत्येक गतिविधि के लिए एक शिक्षक को संबंधित सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र भिजवाना सुनिश्चित करेंगे।

इन प्रशिक्षणों में भाग लेने के लिए शिक्षकों को यात्रा एवं भत्ते आदि का भुगतान सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र द्वारा किया जाएगा।

**(बी.एल. स्वर्णकार)** आइ.ए.एस., निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

### 4. निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के प्रावधानों के अनुसार गैर सरकारी विद्यालयों में सत्र 2017–18 से प्रभावी प्रवेश प्रक्रिया के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर। ● क्रमांक : शिविरा/प्रारं/RTE/C/18878/निशुल्क प्रवेश/2017–18/30 दिनांक : 11.04.2017 ● जिला शिक्षा अधिकारी प्रारंभिक शिक्षा ..... (समस्त) ● विषय : निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के प्रावधानों के अनुसार गैर सरकारी विद्यालयों में सत्र 2017–18 से प्रभावी प्रवेश प्रक्रिया के संबंध में। ● प्रसंग : राज्य सरकार का पत्रांक–प.12(6)शिक्षा–5/आरटीई/2014 जयपुर दिनांक 10.04.2017

उपर्युक्त विषयान्तर्गत एवं प्रासंगिक पत्र के क्रम में लेख है कि निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के प्रावधानों के अनुसार समस्त गैर सरकारी विद्यालयों में सत्र 2017–18 से प्रभावी प्रवेश प्रक्रिया, भौतिक सत्यापन एवं पुनर्भरण के संबंध में राज्य सरकार द्वारा दिनांक 10.04.17 को दिशा–निर्देश जारी किए गए हैं। इन दिशा निर्देशों के सम्बन्ध में टाइम फ्रेम आदि के लिए आवश्यक विज्ञप्ति अपने स्तर पर समाचार पत्रों में प्रकाशित करावें जिससे सभी गैर सरकारी विद्यालयों, अभिभावक एवं संबंधित अधिकारियों को अविलम्ब जानकारी मिल सके। प्रवेश कार्य, सत्यापन कार्य एवं फीस के पुनर्भरण की नियमित मॉनिटरिंग करावें जिससे सत्र 2017–18 में उक्त दिशा–निर्देशों के अनुसार समस्त गतिविधियाँ समय पर सम्पन्न हो सके। दिशा–निर्देश की प्रति आरटीई वेब पोर्टल (rte.raj.nic.in) पर उपलब्ध हैं, डाउनलोड कर लेवें।

उक्त पत्र को सर्वोच्च प्राथमिकता देवें।

● निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

### 5. मार्च, 2017 से जारी होने वाली राज्य बीमा पॉलिसी एवं फरदर हेतु घोषणा पत्र एसआईपीएफ पोर्टल पर ऑनलाइन सबमिट/प्राप्त किए जाने के संबंध में।

● कार्यालय राजस्थान सरकार, निदेशालय, राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि विभाग ● क्रमांकः एफ. 48/पार्ट–।।/बीमा/व्य.एवं प./2010–11/1788–1843 दिनांक : 16.03.2017/17.03.2017 ● कार्यालय निर्देश ● विषय : मार्च, 2017 से जारी होने वाली राज्य बीमा पॉलिसी एवं फरदर हेतु घोषणा पत्र एसआईपीएफ पोर्टल पर ऑनलाइन सबमिट/प्राप्त किए जाने के संबंध में।

विभागीय योजनाओं के लेखों एवं कार्य प्रक्रियाओं को कम्प्यूटरीकृत किए जाने के उद्देश्य से विभाग द्वारा एसआईपीएफ पोर्टल विकसित किया जाकर उसके माध्यम से राज्य बीमा एवं जीपीएफ के सभी कार्य ऑनलाइन सम्पादित किए जा रहे हैं। राज्य बीमा की पॉलिसी एवं अधिक कटौतियों के संबंध में भविष्य में प्रक्रिया निम्नानुसार अपनाई जाएगी।

1. राज्य बीमा की प्रथम पॉलिसियाँ दिनांक 1.4.2015 से पॉलिसी एसआईपीएफ पोर्टस के माध्यम से जनरेट की जा रही हैं। मार्च, 2015 एंव 2016 में प्राप्त कटौतियाँ के क्रम में जो घोषणा–पत्र मानव श्रम से प्राप्त हुए थे उन्हें एसआईपीएफ पोर्टल पर सबमिट करते हुए बीमा पॉलिसी जनरेट की जा रही है।
2. विभाग द्वारा पूर्व में समय–समय पर आयोजित बैठकों, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग तथा प्रशिक्षण कार्यक्रमों में दिए गए निर्देशों एवं दिनांक 14.3.2017 को आयोजित विभागीय समीक्षा बैठक में लिए गए निर्णय के अनुसार दिनांक 01.4.2017 को जारी होने वाली बीमा पॉलिसियों के घोषणा–पत्र तथा अधिक घोषणा–पत्र एसआईपीएफ पोर्टल पर ऑनलाइन सबमिट किए जाने की अनिवार्यता की जा रही है।

3. इसी क्रम में मार्च, 2017 में जिन राज्य कर्मचारियों की प्रथम कटौती/अधिक कटौती होनी है उन्हें घोषणा पत्र (डिक्लेरेशन फार्म) एसआईपीएफ पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन सबमिट करना है। दिनांक 1.4.2017 को जिन कर्मचारियों की बीमा पॉलिसी जारी की जानी है, उन सभी पात्र राज्य कर्मचारियों को उनके स्वयं के लॉगिन आईडी से पोर्टल पर एसआई →'ट्रांजेक्शन →फर्स्ट डिक्लेरेशन' पर प्रथम घोषणा पत्र का फार्म सबमिट करने की सुविधा उपलब्ध करा दी गई है। ऐसे कर्मचारी जिनके द्वारा दिनांक 1.4.2017 को अधिक कटौती करवाई जानी है वे अपना अधिक घोषणा पत्र संबंधी फार्म उपलब्ध स्क्रीन (फरदर डिक्लेरेशन) द्वारा सबमिट करवा सकेंगे।

   संबंधित राज्य कर्मचारी उक्त माध्यम से मार्च, 2017 में अपना फर्स्ट डिक्लेरेशन/फरदर डिक्लेरेशन, फार्म पोर्टल पर सबमिट करेंगे जिसके बाद संबंधित डीडीओ उक्त घोषणा पत्रों को एसआईपीएफ कार्यालय को फॉरवर्ड करेंगे।

4. ऑनलाइन प्राप्त घोषणा पत्र एसआईपीएफ के एलडीसी के पेंडिंग टास्क में प्राप्त हो जाएगा, तत्पश्चात प्राप्त प्रीमियम एवं ऑनलाइन घोषणा पत्र की जाँच की प्रक्रिया का पालन करते हुए डिक्लेरेशन स्क्रीन में पॉलिसी क्रियेशन एवं बॉण्ड प्रिन्टिंग की जाएगी।

5. इसी प्रकार दिनांक 1.4.2017 से जारी होने वाली बीमा पॉलिसियों में बीमा पॉलिसी संख्या/कॉन्ट्रेक्ट संख्या तथा दिनांक 1.4.2017 से जारी होने वाले अधिकानुबन्धों के कॉन्ट्रेक्ट नम्बर भी मुख्यालय द्वारा जिलों को जारी नहीं किए जाएंगे बल्कि पॉलिसी संख्या, कॉन्ट्रेक्ट संख्या अब एसआईपीएफ पोर्टल के माध्यम से सिस्टम जनरेटेड ही मान्य होंगे।

अतः उक्त प्रक्रिया की पालना हेतु समस्त आहरण एवं वितरण अधिकारियों को विभाग के जिला स्तरीय अधिकारी स्वयं के स्तर से अवगत कराना सुनिश्चित करेंगे।

● **(एस.एस. सोहता)** निदेशक

## 6. आई.ए.एस.ई./सी.टी.ई. संस्थानों द्वारा आयोजित सेवारत प्रशिक्षण कार्यक्रम सत्र 2017–18 का वार्षिक पंचांग एवं आवश्यक दिशा निर्देश।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/माध्य/शिप्र/बी/18701/पंचांग/2017-18/ बीकानेर दिनांक : 10.04.17 ● समस्त उपनिदेशक/जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) ● विषयः आई.ए.एस.ई./सी.टी.ई. संस्थानों द्वारा आयोजित सेवारत प्रशिक्षण कार्यक्रम सत्र 2017-18 का वार्षिक पंचांग एवं आवश्यक दिशा-निर्देश।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत प्रासंगिक पत्र के संदर्भ में राज्य के आई.ए.एस.ई./सी.टी.ई. संस्थानों द्वारा सत्र 2017-18 में आयोजित सेवारत प्रशिक्षण से सम्बन्धित कार्यक्रमों का वार्षिक पंचांग एवं संस्थानों का क्षेत्राधिकार का विवरण पत्र संलग्न कर प्रेषित किया जा रहा है।

सेवारत प्रशिक्षण कार्यक्रम के वार्षिक पंचांगानुसार प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाने हेतु संलग्न प्रारूप में प्रशिक्षणार्थियों (वरिष्ठ अध्यापकों) के प्रतिनियुक्ति आदेश राज्य सरकार के आदेशानुसार आप द्वारा संबंधित विषय के प्रशिक्षण से दो माह पूर्व अनिवार्य रूप से जारी किए जावें तथा पिछले दो वर्षों में प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके शिक्षकों एवं अधिकारियों, सेवानिवृत्ति से दो वर्ष की अवधि शेष रहने वाले कर्मचारियों को प्रशिक्षण हेतु प्रतिनियुक्त नहीं किया जावे। निर्देशानुसार इस वर्ष व्याख्याता एवं ऊपर के स्तर के शिक्षा अधिकारियों के आदेश निदेशालय स्तर से जारी होंगे। कार्यालय स्तर पर कैडरवार व विषयवार शिक्षकों का प्रोफाइल तैयार किया जावे। समस्त जिला शिक्षा अधिकारी व्याख्याता व ऊपर के स्तर के शिक्षा अधिकारियों की प्रोफाइल तैयार कर निदेशालय को मई 2017 में आवश्यक रूप से प्रेषित करेंगे। प्रतिनियुक्त संभागियों की सूची से संबंधित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान को समय पर अवगत कराया जावे। राज्य सरकार के परिपत्र क्रमांक प. 17(01) शिक्षा-1/2008 जयपुर दिनांक 29-01-2010 शिक्षक प्रशिक्षण के सम्बन्ध में जारी निम्न निर्देशों की पूर्ण पालना सुनिश्चित की जावेः-

1. आयोज्य प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रतिनियुक्त शिक्षक अनिवार्य रूप से भाग लेंगे।
2. आई.ए.एस.ई./सी.टी.ई. संस्थानों द्वारा निदेशालय द्वारा जारी कलेण्डर के अनुसार प्रशिक्षण कार्यक्रम दो माह पूर्व ही जिला शिक्षा अधिकारी (मा) को आवश्यक रूप से भिजवाकर कार्यालय से आदेश जारी कराए जाएंगे इस हेतु दोनों पक्षकार पत्र दूरभाष पर एक दूसरे से सम्पर्क में रहेंगे।
3. जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा विषयवार शिक्षकों का प्रोफाइल अपडेट रखा जावे। प्रतिनियुक्ति करते समय प्रशिक्षणार्थियों के दोहराव को रोकने की पुख्ता व्यवस्था की जावे।
4. प्रतिनियुक्त प्रशिक्षणार्थियों (व्याख्याता एवं उच्च स्तर) को सम्बन्धित संस्था प्रधान के स्थान पर निदेशक, माध्यमिक शिक्षा एवं वरिष्ठ अध्यापक स्तर के कार्मिक को जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा सीधे ही कार्यमुक्त किया जाएगा। इस आदेश की अक्षरशः पालना की जावे।
5. गंभीर बीमारी, लंबे अवकाश तथा महिला प्रतिभागी के 05 वर्ष से छोटे बच्चे होने के प्रकरणों पर जि.शि.अ. अपने स्तर से जाँच कर प्रशिक्षण में छूट प्रदान कर अवगत कराएगा। शेष प्रतिभागियों को प्रशिक्षण मुक्ति पर सख्ती से पाबंदी लगाई जाती है।
6. उप निदेशक/जिला शिक्षा अधिकारी प्रतिनियुक्त संभागियों के कार्यक्रम में भाग नहीं लेने की स्थिति में सम्बन्धित शिक्षक की ए.सी.आर. एवं सेवा पुस्तिका में प्रतिकूल टिप्पणी अंकित की जावे। अनुपस्थित प्रशिक्षणार्थियों के विरुद्ध तत्काल नियमानुसार अनुशासनात्मक कार्यवाही की जावे/प्रस्तावित की जावे।
7. उप निदेशक स्तर पर शैक्षिक प्रकोष्ठ के माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम का सतत पर्यवेक्षण किया जावे/ जिला मुख्यालय से मासिक आँकड़े प्राप्त कर प्रशिक्षण कार्यक्रम की सफलता सुनिश्चित की जावे।
8. प्रत्येक प्रशिक्षण में 50 प्रतिशत से कम उपस्थिति रहने पर

सम्बन्धित उप निदेशक/जिला शिक्षा अधिकारी को व्यक्तिशः जिम्मेदार माना जावेगा तथा उनके विरुद्ध नियमानुसार अनुशासनात्मक कार्यवाही प्रस्तावित की जावेगी।

9. प्राचार्य, आई.ए.एस.ई. बीकानेर/अजमेर सम्बन्धित अनुपस्थित शिक्षा अधिकारी/कार्मिक को अपने स्तर से कारण बताओ नोटिस जारी करेगा तथा स्पष्टीकरण प्राप्त कर उसकी समीक्षोपरान्त जवाब से संतुष्ट न होने की स्थिति में अनुशासनात्मक कार्यवाही के पूर्ण प्रस्ताव तैयार कर निदेशालय एवं सक्षम अनुशासनात्मक अधिकारी को तत्काल प्रेषित करेंगे।
10. उप निदेशक (मा) कार्यालय स्तर से त्रैमासिक संख्यात्मक/पर्यवेक्षणीय रिपोर्ट निदेशालय को प्रेषित की जावे। अनुपस्थित प्रशिक्षणार्थियों के विरुद्ध की गयी/प्रस्तावित कार्यवाही के संख्यात्मक आँकड़े अलग से प्रेषित किए जावें।
11. कार्यालय एवं संस्थान वार्षिक पंचांग की पावती सूचना से कार्यालय को अवगत करावें। प्रशिक्षण के सम्बन्ध में निदेशालय के शिक्षक प्रशिक्षण अनुभाग से सम्बन्धित समस्त आवश्यक पत्र व्यवहार एवं आदेशों को ईमेल ad.trg.dse@rajasthan.gov.in पर प्रेषित कर आवश्यक पत्राचार कर सकते हैं।
12. आई.ए.एस.ई. एवं सी.टी.ई. में संचालित सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण शिविरों का आकस्मिक निरीक्षण निदेशालय स्तर के अधिकारी द्वारा प्रत्येक माह किया जावेगा तथा संबंधित संस्था इस कार्य में पूर्ण सहयोग प्रदान करेगी।
13. निदेशक, संस्कृत शिक्षा निदेशालय, राजस्थान जयपुर के वरिष्ठ अध्यापक तद्नुरूप संबंधित सीटीई में एवं उच्चतर पद यथा-व्याख्याता, प्रधानाध्यापक एवं प्रधानाचार्य संबंधित आईएएसई में सम्मिलित होंगे। इस हेतु चूरू संभाग, जोधपुर संभाग के उच्चतर पद कार्मिक आईएएसई बीकानेर तथा शेष पाँच संभागों पर आईएएसई अजमेर में प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे।
14. उपनिदेशक प्रतिमाह 10 तारीख से पूर्व अपने-अपने स्तर के जिला शिक्षा अधिकारी से प्रतिमाह बैठक आयोजित कर आगामी माह की प्रशिक्षण सूची की निश्चितता तय कर लें।
15. उपनिदेशक महोदय अपने स्तर पर योग्यतम अधिकारियों का दल गठित करें, जो प्रशिक्षण की नियमित मॉनीटरिंग करें।
16. सीसीई संस्थाओं में सीटीई के पदों पर कार्यरत सभी कर्मियों को प्रशिक्षण के कार्य दिवसों में उपस्थित रहना अपेक्षित है।

● **(बी.एल. स्वर्णकार)** आइ.ए.एस. निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

## 7. दिनांक 21 जून 2017 को 'अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस' का आयोजन समस्त राजकीय एवं निजी शिक्षण संस्थाओं में समारोहपूर्वक किए जाने के सम्बन्ध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा माध्य/मा स/विविध/मिवस/2014-17/ दिनांक : 18.04.2017 ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक प्रथम/द्वितीय ● विषयः दिनांक 21 जून 2017 को 'अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस' का आयोजन समस्त राजकीय एवं निजी शिक्षण संस्थाओं में समारोहपूर्वक किए जाने के सम्बन्ध में। ● प्रसंगः उप शासन सचिव, शिक्षा (ग्रुप-6) विभाग, राजस्थान, जयपुर का पत्रांक : प.24 (36) शिक्षा-6/2015/योग दिवस, जयपुर, दिनांकः 7.4.17

उपर्युक्त विषयान्तर्गत शासन के प्रारंभिक निर्देशों के क्रम में लेख है कि 11 दिसम्बर, 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा 21 जून को 'अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस' मनाने का संकल्प पारित किया गया था। संकल्प में महासभा ने स्वीकार किया कि योग स्वास्थ्य तथा कल्याण के लिए पूर्णतावादी दृष्टिकोण प्रदान करता है तथा विश्व की जनसंख्या के स्वास्थ्य, बीमारियों की रोकथाम और जीवन शैली सम्बन्धित विकारों के प्रबन्धन के लिए आवश्यक है। इसी के अन्तर्गत शासन स्तर पर लिए गए निर्णयानुसार राज्य में 'अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस' के आयोजन के सम्बन्ध में राज्य मुख्यालय जयपुर, समस्त जिला मुख्यालयों, समस्त ब्लॉक मुख्यालयों तथा ग्राम पंचायत मुख्यालयों पर 21 जून, 2017 को प्रातः 7.00 से 8.00 बजे तक 'अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस' कार्यक्रम में विभाग द्वारा पूर्ण सहभागिता निभाए जाने हेतु क्षेत्राधिकार में निम्नांकित निर्देशों की पालना सुनिश्चित करावें:-

1. समस्त राजकीय विद्यालय ग्रीष्मावकाश के उपरान्त दिनांक 19 जून, 2017 को खोलने के निर्देश विभाग द्वारा पूर्व में ही जारी किए जा चुके हैं ताकि संस्था प्रधानों एवं विद्यालय स्टाफ को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के आयोजन के लिए पूर्व तैयारियों हेतु उपयुक्त समय मिल सके।
2. अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर दिनांक 21 जून, 2017 को विद्यालय समय विद्यार्थियों हेतु प्रातः 06.55 से दोपहर 01.00 बजे तक होगा। विद्यालय में योग दिवस समारोह का आयोजन प्रातः 07.00 बजे से 08.00 बजे के मध्य किया जाएगा, जिसमें विद्यालय के शारीरिक शिक्षक/खेलकूद प्रभारी द्वारा समस्त विद्यार्थियों एवं विद्यालय स्टाफ को सामूहिक योगाभ्यास करवाया जाएगा। दोपहर 11.00 बजे से 01.00 बजे के मध्य विद्यालय में योग विषयक व्याख्यान, सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन करवाया जाएगा। उक्त दिवस संस्था प्रधान हेतु विद्यालय समय 06.40 बजे से 01.00 बजे तथा शिक्षकों हेतु 06.50 बजे से 01.00 बजे रहेगा।
3. जिला स्तर पर योग प्रशिक्षण हेतु आयोजित कार्यक्रमों में आवश्यकतानुसार शारीरिक शिक्षकों/विद्यालयों के खेलकूद प्रभारियों के प्रशिक्षण भी करवाएं ताकि प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा ही योग करवाया जाए।
4. शासन स्तर पर निर्णय के क्रम में जिला/ब्लॉक/ग्राम पंचायत मुख्यालयों पर आयोजित होने वाले 'अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस' समारोह में भी आवश्यकतानुसार विद्यालय स्टाफ एवं विद्यार्थियों की भागीदारी सुनिश्चित करावें। उक्त बाबत शासन स्तर से अनुमोदित 'अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस' समारोह कार्यक्रम-2017' (परिशिष्ट-क) की प्रति सहज संदर्भ हेतु संलग्न प्रेषित है।

संलग्नः यथोपरि (परिशिष्ट-क)

● **(बी.एल. स्वर्णकार)** आइ.ए.एस. निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

**अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह कार्यक्रम-2017 (परिशिष्ट-क)**

| क्र. सं. | दिनांक | समय | कार्यक्रम | संभागी |
|---|---|---|---|---|
| 1. | 1 मई से 15 जून, 2017 | प्रतिदिन 2 घंटे (सुविधानुसार) | योग प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण | चिकित्सा स्वास्थ्य आयुर्वेद विभाग के कार्मिक, विद्यालयों में कार्यरत शारीरिक शिक्षक व अन्य स्वयंसेवी संगठन। |
| 2. | 15 जून से 18 जून 2017 | प्रातः 6.00 बजे से 8.00 बजे तक प्रतिदिन | प्रभात फेरी | आमजन एवं जिला स्तरीय समिति द्वारा निर्धारित दल |
| 3. | 19 जून 2017 | प्रातः 8.00 बजे से 9.00 बजे तक | साइकिल रैली | उपर्युक्त समस्त व्यय महाविद्यालय/विद्यालय के विद्यार्थी |
| 4. | 20 जून 2017 | प्रातः 8.00 बजे से 9.00 बजे तक | नुक्कड़ सभाएँ | उपर्युक्त समस्त |
| 5. | 21 जून 2017 | प्रातः 7.00 बजे से 8.00 बजे तक | सामूहिक योगाभ्यास | आम नागरिक |
| 6. | 21 जून 2017 | दोपहर 11.00 बजे से 1.00 बजे तक | योग विषयक सेमिनार कार्यशाला | आम नागरिक |
| 7. | 21 जून 2017 | दोपहर 11.00 बजे से 1.00 बजे तक | योग विषयक व्याख्यान, निबंध प्रतियोगिता | महाविद्यालय/विद्यालय के विद्यार्थी |
| 8. | 21 जून 2017 | सायं 7.00 बजे से 9.00 बजे तक | योग विषयक सांस्कृतिक कार्यक्रम | आम नागरिक व उपर्युक्त समस्त। |

## 8. राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में 'विद्यालयी पूर्व विद्यार्थी मंच' के गठन एवं 'सखा संगम' कार्यक्रम के आयोजन के सम्बन्ध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा-माध्य/मा-स/22423/सखा-संगम/2017/191 दिनांक 17.04.2017 ● परिपत्र ● विषय : राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में 'विद्यालयी पूर्व विद्यार्थी मंच' के गठन एवं 'सखा संगम' कार्यक्रम के आयोजन के सम्बन्ध में।

राज्य के प्रत्येक बालक-बालिका हेतु उनके निवास के समीपवर्ती स्थान पर उच्च माध्यमिक स्तर तक की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की उपलब्धता सुनिश्चित किए जाने हेतु राज्य सरकार द्वारा अनेक महत्त्वपूर्ण योजनाएँ संचालित की जा रही हैं। इसके सुखद परिणाम के रूप में निकट भविष्य में ही राज्य की प्रत्येक ग्राम पंचायत में उच्च माध्यमिक स्तर तक की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की उपलब्धता का लक्ष्य पूर्ण होने जा रहा है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की प्रत्येक विद्यार्थी तक सहज एवं व्यावहारिक पहुँच की निरन्तर सुनिश्चितता हेतु स्थानीय जन समुदाय की विद्यालय के प्रबन्धन एवं संचालन में सतत भागीदारी आवश्यक है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु विभागीय निर्देशानुरूप विद्यालयों में अध्यापक-अभिभावक परिषद् तथा विद्यालय विकास एवं प्रबंधन समिति (SDMC)/ विद्यालय प्रबंधन समिति (SMC) जैसी प्रभावकारी समितियों के गठन का प्रावधान दीर्घ समय से चला आ रहा है। साथ ही शिविरा पंचांग में भी समस्त संस्था प्रधानों को विद्यालय में समय-समय पर बालसभा एवं उत्सव आयोजन के अवसर पर स्थानीय क्षेत्र के सम्मानित व्यक्तियों, जो उसी विद्यालय से पढ़कर महत्त्वपूर्ण पदों पर आसीन हैं, को आमंत्रित कर विद्यार्थियों को सम्बोधित करवाए जाने बाबत् स्थाई निर्देश प्रदान किए गए हैं।

उपर्युक्त तमाम प्रयासों तथा प्रावधानों के बावजूद भी स्थानीय जन समुदाय का विद्यालयों से जुड़ाव अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं हो पाया है। स्थानीय समुदाय एवं अभिभावकों को विद्यालय से सार्थक एवं व्यक्तिगत रूप से जोड़े जाने हेतु इस सत्र में अध्यापक-अभिभावक परिषद् की बैठकों का आयोजन समुचित प्रचार-प्रसार के साथ भव्यता एवं धूमधाम से किए जाने के निर्देश प्रदान किए गए थे, जिसके परिणाम अत्यंत सुखद एवं सकारात्मक रहे हैं।

राजकीय विद्यालयों में नामांकन वृद्धि के उद्देश्य से आगामी 26 अप्रैल से प्रवेशोत्सव कार्यक्रम प्रारम्भ होने जा रहा है, जिसमें स्थानीय जनसमुदाय एवं अभिभावकों की भागीदारी सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटक है। उक्त कार्यक्रम के प्रथम चरण (अवधि : 26 अप्रैल से 09 मई, 2017) के दौरान दिनांक : 29 अप्रैल, 2017 को स्थानीय परीक्षाओं के परिणाम की घोषणा के साथ ही अध्यापक-अभिभावक परिषद् तथा विद्यालय विकास एवं प्रबंधन समिति (SDMC) की साधारण सभा की संयुक्त बैठक का आयोजन समस्त विद्यालयों में किया जाना है। उक्त बैठक हेतु प्रदत्त विभागीय निर्देशों में समस्त संस्था प्रधानों को विद्यालय के शैक्षिक एवं भौतिक विकास को निरन्तरता प्रदान करने हेतु स्थानीय समुदाय की भागीदारी बढ़ाने के लिए विद्यालय में उक्त बैठक के दौरान 'विद्यालयी पूर्व विद्यार्थी मंच' के विधिवत गठन की कार्यवाही प्रारम्भ करने हेतु आदेशित किया गया है। प्रदत्त निर्देशानुसार उक्त मंच में विद्यालय में अध्ययन कर चुके समस्त पूर्व विद्यार्थियों को सम्मिलित किया जाना है, जिससे कि समाज के विभिन्न क्षेत्रों में नामचीन एवं लब्धप्रतिष्ठ विद्यालय के पूर्व विद्यार्थियों का पता लगाया जाकर उनका भावनात्मक एवं भौतिक जुड़ाव विद्यालय से किया जा सके। उपर्युक्त क्रम में समस्त राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में 'विद्यालयी पूर्व विद्यार्थी मंच' का गठन एवं तदुपरान्त अग्रांकित विवरणानुसार कार्यवाही सम्पादित की जानी सुनिश्चित करावें:-

1. दिनांक : 29 अप्रैल, 2017 को विद्यालय में 'विद्यालयी पूर्व

विद्यार्थी मंच' के विधिवत गठन से पूर्व संस्था प्रधान, स्टाफ, SDMC सदस्यों तथा अभिभावकों के साथ ही स्थानीय क्षेत्र के प्रभावशाली एवं जानकार व्यक्तियों के सहयोग से विद्यालय में अध्ययन कर चुके अधिकाधिक पूर्व छात्रों की जानकारी जुटाते हुए पूर्व छात्रों को 29 अप्रैल को आयोज्य विद्यालय विकास एवं प्रबंधन समिति (SDMC) तथा अध्यापक-अभिभावक परिषद् की संयुक्त बैठक में भाग लेने हेतु आमंत्रित करेंगे। उक्त विद्यालय में पूर्व के वर्षों में अध्ययन कर चुके समस्त व्यक्ति 'विद्यालयी पूर्व विद्यार्थी मंच' के स्थायी सदस्य होंगे। अप्रैल को आयोज्य विद्यालय विद्यालय विकास एवं प्रबंधन समिति (SDMC) तथा अध्यापक-अभिभावक परिषद् की संयुक्त बैठक में आगामी 28-29 अप्रैल, 2017 को अक्षय तृतीया पर विशेषतः ग्रामीण क्षेत्रों में अबूझ विवाह मुहूर्त्त के अवसर पर वैवाहिक समारोह हेतु एकत्रित स्थानीय समूह द्वारा SDMC सदस्यों एवं अभिभावकों के सहयोग से पूर्व छात्रों के सम्बन्ध में उल्लेखनीय एवं प्रभावकारी जानकारी जुटाई जा सकती है।

2. 'विद्यालयी पूर्व विद्यार्थी मंच' की आगामी गतिविधियों के प्रभावी संचालन हेतु दिनांक : 29 अप्रैल, 2017 को उपस्थित पूर्व छात्रों का सम्मान एवं अभिनन्दन करते हुए उक्त मंच हेतु समय दे सकने वाले व्यक्तियों की कार्यकारी समिति (Working Committee) का निर्माण कर लिया जाए, जिसमें अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव, कोषाध्यक्ष के साथ ही आवश्यकतानुसार संख्या में अन्य सदस्यों का मनोनयन पारस्परिक सहमति एवं विचार-विमर्श से कर लिया जाए।

3. 'विद्यालयी पूर्व विद्यार्थी मंच' की कार्यकारी समिति द्वारा विद्यालय स्टाफ, स्थानीय क्षेत्र के उक्त विद्यालय में अध्ययनरत रहे पूर्व छात्रों तथा विद्यालय के छात्र पंजीयन रजिस्टर (S.R. Register) में उपलब्ध रिकॉर्ड की सहायता से विद्यालय के अधिकाधिक पूर्व छात्रों का अभिलेख उनके विद्यालय त्याग के वर्ष के आधार पर तैयार किया जाएगा। संस्था प्रधान द्वारा उक्त कार्य के समय पर निष्पादन हेतु विद्यालय स्टाफ में से एक सक्षम कार्मिक को उक्त कार्य हेतु विद्यालय स्तर पर प्रभारी नियुक्त किया जाकर 'विद्यालयी पूर्व विद्यार्थी मंच' की कार्यकारी समिति का विशिष्ट सदस्य नामित किया जाएगा।

4. विद्यालय के पूर्व में अध्ययनरत रहे छात्रों का उनके विद्यालय त्याग के वर्ष के आधार पर वर्षवार संकलित डाटा में प्राप्त सूचना के अनुरूप विशिष्ट उपलब्धियों एवं विद्यालय में अध्ययनरत वर्षों एवं कक्षा का उल्लेख सम्मिलित किया जाए। ध्यान रहे, इस डाटा संग्रहण में विद्यालय की माध्यमिक/उच्च माध्यमिक स्तर पर क्रमोन्नति से पूर्व प्राथमिक/उच्च प्राथमिक स्तर पर संचालन के समय अध्ययनरत रहे पूर्व छात्रों को भी आवश्यक रूप से शामिल किया जाए। इस प्रकार से सूचीबद्ध किए गए पूर्व छात्रों के वर्तमान स्टेट्स का पता लगाए जाने हेतु हर सम्भव प्रयास के उपरान्त प्राप्त समस्त सूचनाओं का संकलन यथा स्थान संधारित कर लिया जाए।

5. 'विद्यालयी पूर्व विद्यार्थी मंच' के गठन का मूल उद्देश्य समस्त राजकीय विद्यालयों में पूर्व छात्रों की 'एल्युमिनी मीट' की तर्ज पर 'सखा-संगम' कार्यक्रम का आयोजन कर विद्यालय में पूर्व में अध्ययनरत रहे अधिकाधिक छात्रों का भावनात्मक एवं भौतिक जुड़ाव विद्यालय से स्थापित करना है। समस्त विद्यालयों में प्रतिवर्ष 'वार्षिकोत्सव' का आयोजन शिविरा पंचांग में स्थाई निर्देशों के रूप में सम्मिलित है। आगामी शैक्षिक सत्र में समस्त राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में 'सखा-संगम' कार्यक्रम का भव्य आयोजन आवश्यक रुप से किया जाना है। वैकल्पिक तौर पर उक्त कार्यक्रम का आयोजन 'वार्षिकोत्सव' कार्यक्रम, छात्रों के विदाई समारोह (आशीर्वाद एवं अभिवादन समारोह) अथवा अध्यापक-अभिभावक परिषद् की बैठक के साथ किए जाने पर भी विचार किया जा सकता है। उक्त कार्यक्रम में विद्यालय में पूर्व में अध्ययनरत रहे छात्रों को सपरिवार कार्यक्रम में भाग लेने हेतु सम्मानजनक रीति से आमंत्रित कर उनकी अधिकाधिक संख्या में भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी।

6. 'सखा-संगम' कार्यक्रम का आयोजन आगामी शैक्षिक सत्र में समस्त राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों द्वारा पूर्ण उत्साह, उमंग एवं भव्य तरीके से धूमधाम तथा समारोहपूर्वक किया जाएगा। इस हेतु प्रारम्भ में आवश्यक तैयारियों हेतु विद्यालय विकास कोष/ विद्यार्थी कोष से व्यय किया जा सकता है। 'सखा-संगम' कार्यक्रम को भव्यता प्रदान करने हेतु उक्त कार्यक्रम का विस्तार विद्यालय स्टाफ, ' SDMC की कार्यकारिणी समिति' तथा 'विद्यालयी पूर्व विद्यार्थी मंच' के पारस्परिक विमर्श एवं समन्वय से किया जा सकता है, जिसके तहत उक्त कार्यक्रम के अन्तर्गत सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ, पूर्व छात्रों के परिवारजनों, विद्यालय स्टाफ एवं अध्ययनरत विद्यार्थियों के साथ क्षेत्र परिभ्रमण जैसे रचनात्मक एवं पारस्परिक जुड़ाव को बढ़ावा देने वाले क्रियाकलाप को शामिल किया जा सकता है।

7. 'सखा-संगम' कार्यक्रम में शामिल होने वाले पूर्व छात्रों का भावनात्मक जुड़ाव विद्यालय में उपस्थिति मात्र से ही हो जाना स्वाभाविक है, परन्तु इस भावनात्मक जुड़ाव का लाभ भविष्य में विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के हितार्थ प्राप्त करना तथा स्थानीय समुदाय को भी प्रेरित करना संस्था प्रधान एवं विद्यालय स्टाफ की इच्छा शक्ति एवं कौशल पर निर्भर करता है। संस्था प्रधान द्वारा स्टाफ एवं 'विद्यालयी पूर्व विद्यार्थी मंच' के अभिरुचि सम्पन्न सदस्यों के सहयोग से इस कार्यक्रम के आयोजन को कल्पनाशीलता के विशिष्ट आयाम देकर प्रतिभागी पूर्व छात्रों हेतु अविस्मरणीय रूप दिया जा सकता है। बचपन के भूले-बिसरे, बिछुड़े दोस्तों/सहपाठियों से लम्बे अरसे बाद बचपन की विस्मृत खट्ठी-मीठी यादों को संजोते हुए परिवार सहित पुनर्मिलन के ये पल उन्हें ताउम्र विद्यालय से जुड़ाव हेतु प्रेरित कर सकते हैं। दूसरी तरफ इस जुड़ाव का अप्रत्यक्ष लाभ पूर्व छात्रों में से समाज में महत्त्वपूर्ण एवं प्रभावशाली पदों पर आसीन एवं हैसियत सम्पन्न व्यक्तियों के सहयोग के रूप में विद्यालय की आधारभूत संरचना के सुदृढ़ीकरण

एवं भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु भी लिया जा सकता है।

8. 'सखा-संगम' कार्यक्रम में भागीदारी निभाने वाले समस्त व्यक्तियों के समक्ष विद्यालय स्टाफ सदस्यों एवं विद्यार्थियों की व्यक्तिगत एवं सामूहिक उपलब्धियों की चर्चा आवश्यक रूप से की जाए तथा उत्कृष्ट उपलब्धि वाले विद्यार्थियों एवं शिक्षकगणों को सम्मानित किए जाने जैसी गतिविधियों को शामिल किया जा सकता है। इसी प्रकार वर्तमान में समाज में गौरवपूर्ण उपलब्धि अथवा ख्याति अर्जित कर विद्यालय का नाम रोशन करने वाले पूर्व छात्रों के अभिनन्दन का कार्यक्रम भी इसी दौरान रखा जा सकता है।
9. 'सखा-संगम' कार्यक्रम में उपस्थित समस्त प्रभागियों के समक्ष SDMC को प्राप्त सहयोग राशि को आयकर अधिनियम की धारा-80 (G) के तहत आयकर से छूट हेतु विद्यालय द्वारा शासन के निर्देशानुरूप आयकर विभाग में पंजीयन हेतु की गई कार्यवाही से आवश्यक रूप से अवगत करवाया जाकर उक्तानुसार विद्यालय विकास हेतु जनसहयोग जुटाने में सहयोग प्रदान करने हेतु अनुरोध किया जाए।
10. विद्यालय के पूर्व छात्र रहे विद्यार्थियों को विद्यालय की 'नामांकन लक्ष्य प्राप्ति कार्य योजना' से सक्रिय रूप से जोड़ने हेतु प्रतिवर्ष आयोज्य प्रवेशोत्सव कार्यक्रम में उनकी सार्थक भागीदारी हेतु स्वीकृति प्राप्त की जाए तथा स्थानीय विद्यालय परिक्षेत्र में निवास करने वाले उनके परिजनों के बालक-बालिकाओं का प्रवेश विद्यालय में करवाने हेतु प्रेरित करवाएँ।
11. इसी प्रकार विद्यालय विकास हेतु राज्य सरकार की महत्त्वपूर्ण योजना 'मुख्यमंत्री जनसहभागिता विद्यालय विकास योजना' के दिशा-निर्देशों एवं प्रावधानों की विस्तृत जानकारी समस्त उपस्थित प्रतिभागियों को प्रदान करते हुए विद्यालय की आधारभूत संरचना एवं भौतिक आवश्यकताओं के सुदृढ़ीकरण हेतु वांछित आवश्यकता का आकलन प्रस्तुत किया जाए। उक्तानुरूप योजना के प्रावधानानुसार जनसहयोग मद में निर्धारित राशि (कुल लागत का 40%) जुटाने हेतु विकल्प सुझाने अथवा स्थानीय भामाशाहों को प्रेरित करने के सम्बन्ध में विस्तृत चर्चा करते हुए उक्त विषय पर निरन्तर संवाद कायम रखने की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए।

उपर्युक्तानुसार समस्त राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में 'विद्यालयी पूर्व विद्यार्थी मंच' का गठन एवं आगामी शैक्षिक सत्र में 'सखा-संगम' कार्यक्रम का आयोजन प्रदत्त निर्देशानुरूप किए जाने की कार्यवाही समस्त सम्बन्धितों द्वारा सर्वोच्च प्राथमिकता से सम्पादित की जाए।

● **(बी.एल. स्वर्णकार)** आइ.ए.एस. निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकोनर

## 9. कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राज. बीकानेर के समसंख्यक निर्देश पत्र क्रमांक : 87 दिनांक : 12.04.2017 द्वारा प्रदान किए निर्देशों में आंशिक संशोधन।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-माध्य/मा-स/22241/2016-17/89 दिनांक : 18.04.2017● आदेश ● विषय : कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राज. बीकानेर के समसंख्यक निर्देश पत्र क्रमांक : 87 दिनांक : 12.04.2017 द्वारा प्रदान किए निर्देशों में आंशिक संशोधन।

इस कार्यालय के समसंख्यक निर्देश पत्र क्रमांक : 87 दिनांक : 12.04.2017 द्वारा दिनांक : 29 अप्रैल, 2017 को समस्त राजकीय विद्यालयों में स्थानीय परीक्षा परिणाम की घोषणा एवं विद्यालय विकास एवं प्रबंधन समिति (SDMC) की साधारण सभा तथा अध्यापक-अभिभावक परिषद् की संयुक्त बैठक आयोजित किए जाने बाबत निर्देश प्रदान किए गए थे। उक्त निर्देशों में एतद् द्वारा आंशिक संशोधन किया जाता है:-

1. विद्यालय विकास एवं प्रबंधन समिति (SDMC) की साधारण सभा तथा अध्यापक-अभिभावक परिषद् की संयुक्त बैठक का आयोजन दिनांक : 29 अप्रैल, 2017 के स्थान पर दिनांक : 05 मई, 2017 (शुक्रवार) को किया जाए।
2. स्थानीय परीक्षा परिणाम की घोषणा एवं इससे सम्बन्धित कार्यक्रम पूर्व प्रदत्त निर्देशानुसार दिनांक : 29 अप्रैल, 2017 को ही सम्पादित किए जाएंगे। बीकानेर जिले में जिला कलक्टर द्वारा घोषित स्थानीय अवकाश के कारण परीक्षा परिणाम घोषणा दिनांक : 28 अप्रैल, 2017 को की जाएगी।
3. इस कार्यालय के परिपत्र क्रमांक : शिविरा-माध्य/मा-स/22423/सखा-संगम/2017/191, दिनांक : 17.04.2017 द्वारा समस्त राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में 'विद्यालयी पूर्व विद्यार्थी मंच' के गठन एवं 'सखा-संगम' कार्यक्रम के आयोजन के सम्बन्ध में प्रसारित निर्देशों में दिनांक : 29 अप्रैल, 2017 को 'विद्यालयी पूर्व विद्यार्थी मंच' के गठन बाबत सम्पादित की जाने वाली कार्यवाही दिनांक : 05 मई, 2017 (शुक्रवार) को विद्यालय विकास एवं प्रबन्धन समिति (SDMC) की साधारण सभा तथा अध्यापक-अभिभावक परिषद् की संयुक्त बैठक के दौरान की जानी सुनिश्चित करें।

उपर्युक्त संशोधनों के अतिरिक्त शेष निर्देश यथावत रहेंगे।

● **(बी.एल. स्वर्णकार)** आइ.ए.एस. निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

**आवश्यक सूचना**

## रचनाएँ आमंत्रित

**'शिविरा पत्रिका' (मासिक) में शिक्षक दिवस के उलपक्ष्य में प्रकाशनार्थ विविध विषयों व विधाओं पर शिक्षकवृंद व सुधी पाठकों से रचनाएँ आमंत्रित की जाती है। अतः अपने शैक्षिक चिंतन-अनुभव, कहानी, संस्मरण, एकांकी, बाल साहित्य, कविता एवं राजस्थानी साहित्य (गद्य-पद्य) आदि मौलिक रचनाएँ दिनांक 30 जून, 2017 तक 'वरिष्ठ संपादक, शिविरा प्रकाशन, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर' के नाम से प्रेषित करें। रचना के अंत में मौलिकता की घोषणा एवं हस्ताक्षर भी आवश्यक है। निर्धारित तिथि पश्चात प्राप्त रचनाओं पर विचार नहीं किया जा सकेगा। -वरिष्ठ सम्पादक**

## अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस

# खुशहाल जीवन में योग का स्थान

❒ सुभाष चन्द्र कस्वाँ

भारत की प्रशंसा बिना योग के उसी तरह है जिस प्रकार शेक्सपीयर के नाटक 'हेमलेट' में डेनमार्क के राजकुमार को अनदेखा किया जाए। भारतीय दर्शन 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' व पाश्चात्य दर्शन 'सत्य ही सुन्दर है व सुन्दर ही सत्य है' को योग के जरिए भली-भाँति समझा व जाना जा सकता है। व्यक्ति की बाहरी क्रियाएँ उसे नाम व प्रसिद्धि दिला सकती हैं पर आंतरिक सुन्दरता जिसमें शांति, भावना, मानवता, दया, परोपकार, करुणा, समानता व सहयोग जैसे सुन्दर विचार योग से ही विकसित किए जा सकते हैं। योग व्यक्ति को आन्तरिक दुनिया से परिचित करवाता है। अच्छे बनने का सही अनुभव अन्दर झाँकने से ही मिलता है। योग का अर्थ है- 'न ऊपर, न नीचे, न बाहर बल्कि अन्दर।' कृष्ण-अर्जुन को योग के बारे में बताते हुए कहते हैं, 'ऐक्य भाव का ऐसा रूप जिसे ज्ञान, प्यार व कर्म से सींचा जाए, योग की ओर बढ़ना ही तो है।' यद्यपि यह सब ज्ञान व मुक्ति के ही साधन हैं। योग का जन्म काफी पुराना है पर इतिहास जवान है। योग आसन जो प्राचीन भारत में ही हरकत में आ गए थे ने बीसवीं शताब्दी में अन्य देशों में भी अपनी पहचान बनानी शुरू कर दी। हिन्दुत्व व रहस्यमय भारत ने पश्चिमी देशों को अपने अध्यात्म व योग के माध्यम से आकर्षित करना शुरू कर दिया। स्वामी विवेकानन्द व अन्य भारतीय अध्यात्म गुरुओं ने पश्चिम की सीमा पार की व हिन्दुत्व की सही परिभाषा पेश की। पश्चिम की अलसाती उमंग, मरती आशा व मुरझाए चेहरों को हिन्दुत्व व योग में एक आशा की नई किरण नजर आई। ये लोग भारत की तरफ उसी तरह आकर्षित होने लगे जैसे मधुमक्खी खिलते फूल की ओर (Honey bee to blooming flower)। पश्चिमी विचारक, कलाकार व व्यवसायी भारत आने लगे जिनमें एलेन डेनिल, बीट्लस, स्टीव जॉब व यहूदी मेनुहिन प्रमुख थे। रहस्यमय भारत के रहस्यों को जानना, यही उनका प्रमुख ध्येय था। रहस्यमय भारत की

आध्यात्मिक व योग शक्ति के बारे में जितना सुना था उससे भी अधिक यहाँ पर पाया। पर हमारा दुर्भाग्य यह रहा जब पश्चिमी लोगों ने यह घोषणा की- Yoga for far better living (अच्छे जीवन के लिए योग), तब से हमने इसे मन से अपनाना शुरू किया। इससे पहले लोग इतना ही जानते थे कि योग महज संन्यासियों व साधु-सन्तों का ही विषय है। माता-पिता अपने बच्चे को इस ओर ले जाने में भय खाते थे कहीं हमारी संतान सांसारिक वस्तुओं से विरक्त हो विरासत को आहत न कर दे। आज विद्यालयी शिक्षा में योग के महत्व को माता-पिता व छात्र अच्छी तरह से समझने लगे हैं। आज योग को दुनिया का आठवाँ अजूबा कहें तो कोई आश्चर्य की बात नहीं।

जापान में शिशुओं को शिशु मंदिरों में शांति की शिक्षा दी जाती है। शांति की शिक्षा योग से ही संभव है। जब मन व शरीर की शक्ति का संगम हो जाता है तब धनात्मक ऊर्जा अपनी ताकत दिखानी शुरू कर देती है। इस ताकत को योग से ही विकसित किया जा सकता है। योग एक जुड़ाव है। यह लोगों को बाहरी व आंतरिक स्तर पर जोड़ता है। योग दर्शन व विज्ञान का सम्मिश्रण है। योग आस्तिक व नास्तिक दोनों के लिए है। योग के मंत्र व जाप ध्वनि विज्ञान से संबंध रखते हैं। कुछ अनुसंधानों ने यह साबित किया है कि योग व्यक्ति को संतुलित, कर्मशील व सामाजिक बनाता है। हमारी तीव्र इच्छा व प्रार्थना पर योग के गुणों को परख संयुक्त राष्ट्र संघ ने 21 जून 'विश्व योग दिवस' के रूप में मनाने की घोषणा कर दी। 21 जून, 2015 से पहली बार विधिवत रूप से शुरू हुए इस दिवस का श्रेय हमारे प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी को जाता है। 21जून, 2015 को जब पहली बार दुनिया के चौरासी राष्ट्र एक साथ विश्व योग दिवस मनाने हेतु खड़े हुए तब हमारा मस्तक गर्व से ऊँचा हो गया। सारे विश्व ने देखा कि योग किसी देश, उम्र व व्यक्ति विशेष के लिए ही नहीं अपितु सभी उम्र के लोगों के लिए सर्वत्र उपयोगी है।

योग भारतीय संस्कृति की देन है। पतंजलि ने योग को क्रमिक अध्ययन का आधार प्रदान किया। पतंजलि के पश्चात कुछ भारतीय आध्यात्मिक विभूतियों, धर्माचार्यों व योग गुरुओं ने योग के भागों को अपने नए संस्करण के रूप में प्रस्तुत किया जिनमें जैन आचार्य महाप्रज्ञ, बाबा रामदेव, विष्णुदेवनन्दन, के. पट्टाभि जॉइस प्रमुख थे। इनकी कोशिश यह रही कि योग को उसके उत्तम रूप में सामने लाया जाए। लोग कहते हैं कि इन्होंने योग पर अपना लेबल लगा दिया है। यह कोई समस्या वाली बात नहीं है क्योंकि इनके योग में पतंजलि के योग की आत्मा ही वास करती है।

बीसवीं सदी ने लोगों को योग की ओर क्यों खींचा? जिसमें मुख्यतः हम पश्चिमी जगत को लेते है। वजह यह रही कि जब पश्चिम के मुरझाए चेहरे जिनकी जीवनशैली, जलवायु व सामाजिक संरचना भिन्न थी, ने देखा तथा अपने से तुलना करके यह पाया कि भारतीय लोगों के खिलते व चमकते चेहरे, लचीला शरीर व भावों की खूबसूरती का राज योग के ताज की वजह से ही है तब से इन देशों के नेता, अभिनेता, साहित्यकार, गायक व आम लोग योग के दीवाने होने लगे।

योग अभ्यास के लिए किसी विशेष धर्म व

मान्यता की आवश्यकता नहीं है। विभिन्न उपासना पद्धतियाँ भी योग के समानान्तर एक अभ्यास ही है जिसमें मन व शरीर का सामंजस्य बैठाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा घोषित 'विश्व योग दिवस' लोगों में योग के प्रति फैली भ्रांति व गलत अवधारणा को दूर करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा। यदि हम लोग योग को किसी एक धर्म व धरती का मान बैठ प्रचार-प्रसार करते हैं तब योग के दरवाजे को संकरा ही तो कर रहे हैं। यद्यपि इसकी जड़ हिन्दुत्व में है पर इसकी प्रकृति सार्वभौमिक है।

**योग के कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य**

- यदि हम जिम जाना बंद कर देते हैं तब इसके बुरे प्रभाव शरीर पर नजर आने लगते हैं। योग बंद करने से कोई बुरा प्रभाव शरीर पर नहीं पड़ता।
- आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के पास आज कुछ मानसिक व शारीरिक व्याधियों का सम्पूर्ण इलाज व औषधि नहीं है। यही वजह है कि एक योग्य चिकित्सक हमें औषधि के साथ-साथ योगाभ्यास की सलाह भी देता है। योग में औषधीय शक्ति भी है।
- एक सही योग अभ्यास करने वाला व्यक्ति हमेशा शांत स्वभाव में मिलेगा। निषेधात्मक विचारों से अपने आपको मुक्त कर लेगा। घृणित विचारों को गायब करने में योग का बड़ा स्थान है। पतंजलि के सूत्र योग के माध्यम से मानसिक विकार दूर करने में मददगार हैं।
- योग कुछ लेता नहीं है पर देता है बहुत कुछ। आजकल 'पोर्टेबल योग' का महत्त्व बढ़ता जा रहा है। यदि आपके पास समय की कमी है तब आप बस, कार, कुर्सी व बिस्तर पर भी योग अभ्यास कर सकते हैं।

योग सम्भवतया भारत का विश्व को सबसे बड़ा निर्यात व खुबसूरत उपहार है। योग ज्ञान की गहराई तक पहुँच उसे वैश्विक बना देता है। योग हमारी संस्कृति का उभरा रूप है। इसे 'लिट्मस टेस्ट' की आवश्यकता नहीं है। ठीक अभी से योग से मित्रता शुरू करें जिससे खुशहाल जीवन की शुरूआत हो सके।

प्राध्यापक
राजकीय फूलचन्द जालान आदर्श उ.मा.विद्यालय
नूँआ (झुंझुनूं) राज.-333041
**मो: 9460841575**

## मातृत्व दिवस

# एक माँ का पत्र

**❐ डॉ. रेणुका व्यास 'नीलम'**

प्यारी गुड़िया,

बहुत दिनों से कागज तथा कलम के माध्यम से तुमसे बात करने की तीव्र इच्छा हो रही थी। आज अवकाश तथा अवसर दोनों उपलब्ध हैं तो आओ! कुछ देर तक माँ-बेटी साथ-साथ बैठें ताकि तुम मेरे मन की बात जान सको। एक माँ, एक औरत के रूप में मेरे डर को समझ सको।

बेटा! वर्ष 2016 हमारे परिवार के जीवन में सदैव अविस्मरणीय रहेगा क्योंकि इस वर्ष तुमने ईश्वर की कृपा तथा अपनी मेहनत से एम.बी.बी.एस. में प्रवेश की विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त की है। ईश्वर सदैव तुम पर कृपावान रहे और मेहनत और सफलता सदैव तुम्हारी संगिनियाँ बनी रहें।

बेटा! जीवन में सफलता कभी अकेले नहीं आती, वह अपने साथ हमेशा कुछ जिम्मेदारियाँ लाती है। तुम्हारी सफलता भी तुम्हारे लिए कई जिम्मेदारियाँ उपहार स्वरूप लाई है। सबसे बड़ी जिम्मेदारी है परिवार से दूर नए शहर, नए परिवेश, नए लोगों के साथ रह कर, अपने जीवन को सही और सार्थक दिशा देने की जिम्मेदारी।

''अब अपने सही और गलत हर कदम, हर कर्म का दायित्व स्वयं तुम पर है'' ऐसा समझ पाने की जिम्मेदारी। साधारण से लगने वाले लोग, साधारण सी लगने वाली बातों और साधारण से लगने वाले कर्मों का महत्त्व समझ पाने की जिम्मेदारी।

मुझे प्रसन्नता है कि जीवन ने मेरी बेटी को अपना जीवन खुद निर्मित करने की जिम्मेदारी सौंपी है। जीवन सशक्त कंधों को ही जिम्मेदारी सौंपता है। मैं जानती हूँ तुम्हारे कंधे दिखने में भले ही कमजोर हैं पर इनके हौसले बहुत बुलन्द हैं। बेटा! अब तुम्हें अपनी जिन्दगी के छोटे-छोटे फैसले खुद लेने सीखने हैं ताकि समय आने पर बड़े फैसले लेने योग्य बन सको।

अब मेहनत से, विवेक से हर अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों में अपने लिए रास्ता बनाना है। जो तुम्हें सही लगे उसे कार्यरूप में परिणत करना है।

मेडिकल की किताबों के साथ अब तुम्हें इंसानों को भी परखना, पहिचानना सीखना है। भीड़ में से दोस्त और सहयोगी चुनने की कला सीखनी है। मैं चाहती हूँ कि मेरी बेटी एक सम्पूर्ण इन्सान बने जिसके पास पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ जीवन का भी व्यावहारिक ज्ञान हो। मस्तिष्क के विकास के साथ-साथ जिसके हृदय का भी विकास हो। विचारों के विकास के साथ-साथ जिसकी आत्मा का भी विकास हो। मैं जानती हूँ कि तुम इन सारी जिम्मेदारियों को अच्छे से निभा पाओगी क्योंकि तुम्हारे पास एक गहरी समझ और अन्तर्दृष्टि है।

बेटा! जीवन बहुत विशाल और गहरी परतों वाला है। जैसे-जैसे हम जीवन में आगे बढ़ते हैं, जीवन में गहरे उतरते हैं, जीवन अपने नए-नए रंग-रूप, नए-नए अर्थ हमारे सामने खोलता जाता है, पर जीवन का ऐसा विस्मय विमुग्ध कर देने वाला रूप हर व्यक्ति थोड़े ही देख पाता है, यह तोहफा तो खुद जीवन उन्हीं इंसानों को देता है जिन इंसानों के हृदय खुले होते हैं और जिनकी नजरें गहरी होती है। अगर सही तरीके से इंसान जीवन जीए तो जीवन का आत्यंतिक सुख-संतुष्टि वह इसी जीवन में अनुभव कर सकता है। इसलिए हमारा पूरा प्रयास होना चाहिए कि जीवन के प्रति हमारा दृष्टिकोण सकारात्मक हो। यही सकारात्मक नजरिया हमें तब मिलता है जब हम अपने जीवन

में हर कर्म को करते समय समझ को, होश को अपना मार्गदर्शक बनाए रखें तथा कर्म का उत्तरदायित्व स्वयं पर लें। जब हम अपना हर काम, समझ तथा होश के साथ करते हैं तो हम अपने हर कार्य का मूल्यांकन भी साथ-साथ कर पाते हैं और समय रहते हम अपनी कमी, अपनी गलती भी सुधार पाते हैं। तब हमारी सफलता हमारे दिमाग को खराब नहीं करती और हमारी असफलता हमारे पैर नहीं डगमगाती। हमेशा याद रखना! जिद्द, क्रोध और अहंकार हमारी समझ को संकुचित कर देते हैं, इसलिए अपनी समझ को कभी सिकुड़ने मत देना।

बेटा! गलती करना गलत नहीं है, पर समय रहते गलती न सुधारना, गलती न समझ पाना अवश्य गलत है। अगर समय रहते गलती समझ आ जाए और सुधर जाए तो वह गलती रहती ही नहीं। वह तो सफलता के महल की सीढ़ी बन जाती है।

तुम्हें पता होना चाहिए कि जैसे अनगढ़ पत्थर को सुन्दर मूर्ति में बदल देने वाला मूर्तिकार होता है वैसे ही अपनी गलती को सफलता के महल की सीढ़ी बना लेने वाला भी 'जीवन का कलाकार' होता है। जीवन उस पर अपनी सारी नैमतें बरसा देता है। दुनिया उसे 'सफल व्यक्ति' के रूप में जानती है और मानती है।

हम जीवन के कलाकार बन पाएँ, हमारे इस काम में हमारा साथ देते हैं-हमारे माता-पिता, हमारे आध्यात्मिक गुरु, हमारे शिक्षक, हमारा जीवन साथी और हमारे प्यारे मित्र। किसी भी सफल और महान व्यक्ति की जीवन और आत्मकथा उठा कर देख लेना, उसके जीवन पर तुम्हें इनमें से ही किसी के हस्ताक्षर अंकित मिलेंगे। माता-पिता और आध्यात्मिक गुरु हमें प्रकृति देती है, पर अपने शिक्षक, जीवन साथी और अपने मित्र हम स्वयं चुन सकते हैं। इसलिए जब भी जीवन, तुम्हें इनमें से किसी को भी चुनने का अवसर दे तो पूर्ण सजगता, समझदारी, होश और ईमानदारी बरतना, क्योंकि इनका गलत चुनाव जीवन नष्ट भी कर सकता है।

बेटा! जीवन में 'हाँ' कहने का और 'ना' का, दोनों का महत्त्व है। किसी के समक्ष आपका 'हाँ' कहना आपकी हृदय की विशालता का परिचायक होता है। 'हाँ' कहने के लिए जीवन के प्रति गहरी सकारात्मकता की आवश्यकता होती है और पक्की 'ना' कहने के लिए गहरी वैचारिक स्पष्टता तथा हृदय की दृढ़ता की जरूरत होती है। इसलिए बेटा! जीवन में 'हाँ' या 'ना' कुछ भी कहने से पहले इंसान को परखना, पहिचानना, साथ ही अपने आप को पहिचानना और परखना। बहुत बार हमारे सारे जीवन का दारोमदार हमारी एक 'हाँ' और 'ना' पर टिका होता है। नन्हें से दिखने वाले ये शब्द हमारे जीवन में विशाल परिवर्तन ले आते हैं।

याद रखना! जीवन हमेशा संकेतों में बात करता है। जीवन के संकेत हम समझ पाएँ, ऐसी समझ भी हमें जीवन ही देता है। जिन्हें जीवन में सभी कुछ जल्दी-जल्दी मिल जाए समझ लो जीवन उनसे कुछ अलग-विशेष करवाना चाहता है। यह वैसा ही है जैसे फिल्म डायरेक्टर फिल्म के प्रारंभिक भाग के कुछ हिस्से को जल्दी-जल्दी बयान करता है क्योंकि उसकी असली फिल्म आगे पूरे संदेश के साथ आने वाली है। इसलिए तुम्हें भी अपने को शारीरिक, मानसिक तथा वैचारिक रूप से इतना सशक्त बनाना है कि तुम जीवन की आगे आने वाली चुनौतियों का अच्छे तरीके से सामना कर पाओ।

बेटा! घर से दूर रह कर निश्चित ही तुम्हें कभी-कभी लगेगा कि अब तुम स्वतंत्र हो। स्वतंत्र होना और स्वतंत्रता का एहसास होना बहुत शानदार है। पर एक बात जो मैं माँ होने के नाते तुमसे कहना चाहूँगी वह यह कि ''स्वतंत्रता अस्तित्व का एक असीम आयाम है।'' पर स्वतंत्रता का उपभोग करने से पहले स्वतंत्रता को समझना बहुत जरूरी है। विशेषकर हमारे समाज में औरत के लिए। स्वतंत्रता बहुत नाजुक भी होती है और बहुत खतरनाक भी। अगर सलीके से स्वतंत्रता के साथ बर्ताव नहीं किया गया तो स्वतंत्रता व्यक्ति को नष्ट भी कर डालती है। स्वतंत्रता का उपयोग अगर समझ के साथ नहीं किया जाए तो उसे स्वछंदता बनते देर नहीं लगती। स्वतंत्रता हमेशा प्रशंसनीय तथा पाने योग्य है पर स्वछंदता सदैव निंदनीय।

एक सभ्य समाज में अपनी पसंद के पहनावे, भोजन तथा अपनी धार्मिक मान्यता के लिए हर मनुष्य पूरी तरह स्वतंत्र है, तुम भी। यह हर व्यक्ति की व्यक्तिगत स्वतंत्रता है पर इस तरह की स्वतंत्रता के साथ मैं सदैव चाहूँगी कि तुम अपनी समझ का भी उपयोग करो। कपड़े पहनते समय तुम्हें अवसर, स्थान, अदब, गरिमा की समझ तो रखनी ही होगी तभी तुम सुसंस्कृत कहलाओगी।

हमेशा याद रखना कि जहाँ भी तुम खड़ी हो वहाँ तुम अपने व्यवहार, भाषा, विचारों तथा कर्मों के द्वारा एक पूरी सभ्य परम्परा का प्रतिनिधित्व कर रही होओगी, इसलिए तुम्हारे व्यवहार, भाषा, विचार, कर्म सदैव गरिमापूर्ण होने चाहिए क्योंकि किसी की भी स्वतंत्रता कभी भी एकांगी नहीं हो सकती, वह तो सदैव पूरे अस्तित्व के परिवेश में ही सार्थक हो सकती है। तुम्हारी स्वतंत्रता सदैव तुम्हें एक जिम्मेदार इंसान और जिम्मेदार डॉक्टर बनाए, ऐसा मैं चाहूँगी।

तुमने डॉक्टरी के जिस पेशे को चुना है वह दुनिया के गरिमामय पेशों में से एक है जो बहुत धैर्य, मेहनत, ज्ञान तथा समर्पण की मांग करता है। समर्पण पेशे के प्रति, समर्पण मानवता के प्रति। इसलिए बेटा! पढ़ाई के इन वर्षों में अपने व्यावसायिक ज्ञान के साथ-साथ अपने हृदय की संवेदनशीलता को भी बढ़ाना ताकि तुम एक डॉक्टर के रूप में जरूरतमंद की कराहट को सुन कर उसके लिए अपने ज्ञान को, अपनी करुणा को उपलब्ध करा पाओ। औरत तो बहुत अच्छी डॉक्टर हो सकती है क्योंकि वह 'मानवता की माँ' जो होती है।

मैं जानती हूँ तुम्हें साहित्यिक किताबें पढ़ने और संगीत का बहुत शौक है। इन दोनों का साथ जीवन में कभी मत छोड़ना। ऐसा समझना होगा कि जीवन के संग्राम में तुम्हें राहत और सुकून देने के लिए मैंने दो करिश्माई छड़ियाँ तुम्हें सौंपी हैं। इसलिए जब भी समय मिले कुछ सार्थक पढ़ना। आज के सामयिक लेखकों के अलावा जहाँ और भी है। इसलिए पढ़ने में आगे की यात्रा जारी रखना। अभी मैं कल ही पढ़ रही थी ''एक अच्छी पुस्तक सौ दोस्तों से बढ़ कर है और एक अच्छा दोस्त सौ पुस्तकालयों से बढ़ कर है।'' तुम्हें दोनों का महत्त्व समझना है। अच्छी किताबें पढ़ कर इंसान वैचारिक और भावनात्मक रूप से परिपक्व होता है। संगीत भी तुम्हें जीवन में बहुत राहत देगा। इसे तुम्हें अपने लिए रखना है। संगीत को सदैव अपनी साँसों में गूँजने देना। ये दोनों (पुस्तकें और संगीत) जीवन के उतार-चढ़ावों में तुम्हारे सच्चे साथी साबित होंगे। जीवन का अर्थ ही है उतार-चढ़ाव। जीवन में समस्याएँ हैं तो समाधान भी है। सदैव याद रखना कि जीवन में कोई समस्या ऐसी नहीं है जिसका समाधान नहीं हो। जीवन से बड़ा कुछ

नहीं हो सकता। बेटा! जीवन अमूल्य है। ईश्वर का उपहार है। कभी हार मत मानना। तुम्हारा परिवार सदैव तुम्हारे साथ है। सबसे बड़ी बात है कि ईश्वर तुम्हारे प्रति बहुत आशावान है। तभी तो उसने तुम्हें इंसान बनाया।

पिछले कई दिनों में मुझे यह जान कर बेहद खुशी हुई कि मेरी बेटी अब जीवन के प्रति खुलने लगी है। खुद से प्यार करने लगी है। जो खुद से प्यार करते हैं वे ही दूसरों से प्यार कर पाते हैं। दूसरों का महत्त्व समझ पाते हैं। अपने को समझो। अपनी अच्छाइयों को देखना सीखो, पहिचानना सीखो और उन्हें इतना विस्तृत करो कि तुम्हारी कमियाँ बौनी हो जाएँ, नदारद हो जाएँ। वैसे कुछ कमियाँ पड़ी भी रहें तो क्या गम है-आखिर ये कमियाँ ही तो हमें इंसान बनाती है। इंसान बने रहना ही अच्छा है, वरना देवता बनना तो कितना नीरस है ना!

मैं जानती हूँ कि तुम भी आजकल के बच्चों की तरह सोशल साइट्स पर सक्रिय हो। चलो! समय के साथ, सबके साथ होना अच्छा है, पर सबके साथ चलते-चलते हम भेड़ न बन जाएँ यह भी हमें ध्यान रखना है। सोशल साइट्स का जगत एक मकड़जाल है, बच्चों के लिए, लड़कियों के लिए इसमें फँसने की बहुत संभावनाएँ हैं। इस 'आभासी जगत' पर बहुत भरोसा करना सही नहीं है। इस बात को जितना जल्दी समझ सको, अच्छा है।

एक विशेष बात जो मैं तुमसे कहना चाहती हूँ वह है प्रतिदिन प्रार्थना करना! तुम्हें प्रतिदिन कुछ समय प्रार्थना के लिए तय करना चाहिए। चाहे सुबह, चाहे रात को सोने से पहले कुछ समय 'मौन' जरूर बैठो। तुम बहुत सरल और सहज हो, प्रार्थना तुम्हारे लिए निश्चय ही Spontaneous होगी। जो कुछ भी अस्तित्व ने हमें दिया है उसका धन्यवाद करने के लिए अपने आपसे जुड़ने के लिए, अस्तित्व से जुड़ने के लिए अपना समय, अपना तरीका स्वयं तय करो। प्रार्थना बहुत व्यक्तिगत घटना है। अगर माँ के रूप में मैं भी तुम्हें प्रार्थना के संस्कार दे पायी तो मेरा काम पूरा हुआ है।

हम फिर मिलते रहेंगे कलम के माध्यम से। बहुत सारी शुभकामनाओं के साथ,

तुम्हारी माँ!

व्याख्याता
रा.बा.उ.मा.वि. लक्ष्मीनाथ घाटी, बीकानेर
**मो : 09414035688**

## साहित्यिक चिंतन

# नागार्जुन की यथार्थ चेतना एवं लोक दृष्टि

❒ **हेमन्त गुप्ता 'पंकज'**

हिन्दी के प्रगतिवादी कवियों में नागार्जुन का विशिष्ट स्थान है। आपका वास्तविक नाम वैद्यनाथ मिश्र है। आप दरभंगा जिले के निवासी हैं। पहले आप 'यात्री' नाम से काव्य रचना करते थे। बाद में आपने बौद्ध धर्म अंगीकार कर अपना नाम नागार्जुन रख लिया। कालान्तर में इसी नाम से काव्य रचना करने लगे। नागार्जुन के व्यक्तित्व पर सर्वाधिक प्रभाव राहुल सांकृत्यायन एवं निराला जी का पड़ा। राजनीतिक रूप में नागार्जुन साम्यवादी विचारधारा के पोषक रहे हैं। इसीलिए नागार्जुन की कविताओं में सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्रित हुआ है। आपकी कविताओं में निराला जी जैसी सहजता, आक्रोश, व्यंग्य, अक्खड़ता, हुंकार एवं ललकार है। शोषण के विरुद्ध आवाज उठाकर शोषितों के प्रति सहानुभूति दिखाकर तथा अन्याय और अत्याचार का विरोध करने वाली कविताओं की रचना करके आपने प्रगतिवादी विचारधारा का पोषण किया। पीड़ित मानवता को स्वर प्रदान कर नागार्जुन ने कवि के उत्तरदायित्व को भली-भाँति निभाया है।

नागार्जुन का कृतित्व प्रगतिशील चेतना का वाहक है। उनकी काव्यकृतियों और कथाकृतियों-दोनों में यही प्रगतिशीलता विविध कोणों से उभरी है। उन्होंने जो कुछ लिखा है, उसके चित्र विशेषकर मध्यम वर्गीय जीवन और मजदूर वर्ग की जिन्दगी के बहीखाते से लिए गए हैं। यही कारण है कि गुणा-भाग में बँटी जिन्दगी पूरी असलियत के साथ अभिव्यक्त हुई है। इनके काव्य की प्रधानतः तीन धाराएँ हैं - पहली धारा में वे कविताएँ आती है जो रागात्मक संवेदना को उजागर करती हैं। ये कविताएँ सौन्दर्यानुभूति की अभिव्यक्ति भी करती हैं। दूसरी धारा की कविताओं में सामाजिक विषमता और विसंगतियों के साथ-साथ राजनैतिक अव्यवस्था और धार्मिक अंधविश्वासों में बँधी जिन्दगी के यथार्थ और साफ-सुथरे ग्राफ प्रस्तुत करती है। तीसरे वर्ग में वे रचनाएँ है जो उद्‌बोधनात्मक तथा प्रचारात्मक है। यहाँ उनकी



यथार्थ चेतना और भव्य लोकदृष्टि को मुखरित किया गया है।

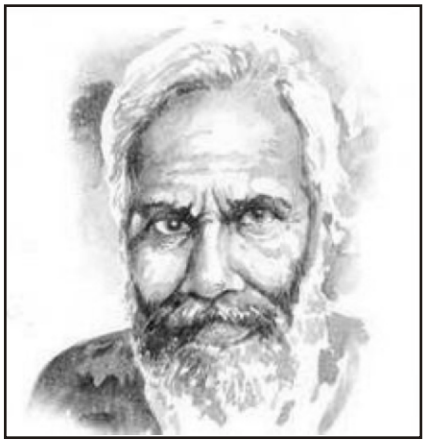

नागार्जुन सत्ता, व्यवस्था एवं पूँजीवाद के प्रति आक्रोश व्यक्त करने में निरन्तर अग्रणी रहे हैं। उनकी कविता में राष्ट्र-प्रेम कूट-कूट कर भरा है। इनकी कविता में आजादी के बाद के भारत की यथार्थ तस्वीर है

देश हमारा भूखा नंगा घायल है बेकारी से।
मिले न रोटी रोजी भटके दर-दर बने भिखारी से।

कवि नागार्जुन ने अपने युगीन यथार्थ एवं समसामयिक चेतना को काव्य का विषय बनाया है। वे यह देख रहे थे कि शोषित वर्ग अभाव की चक्की में पिस रहा है। कृषक अनेक समस्याओं से जूझ रहा है। श्रमिक भरपेट भोजन भी नहीं जुटा पा रहे है। ऐसे में उच्च वर्ग भोग विलास में पानी की तरह धन बहा रहा है। लोग मुखौटा लगाए हुए दोहरी जिन्दगी जी रहे हैं।

बाहर से खद्दरदारी है, पर भीतर से कसाई है
जमींदार हैं, साहूकार हैं, बनिया हैं, व्यापारी हैं।
अन्दर-अन्दर विकट कसाई बाहर खद्दर धारी हैं।

सामाजिक विषमता की बढ़ती हुई खाई कवि को दुःखी करती है। ऐसे में उसकी अन्तर्रात्मा चीत्कार कर उठती है और वह अपनी पीड़ा इन शब्दों में व्यक्त कर उठता है-

खादी ने मलमल से अपनी सांठ-गांठ कर डाली है।
बिड़ला टाटा डालमिया की तीसों दिन दीवाली है।।

यहाँ स्पष्ट ही खादी का प्रतीकार्थ

राजनीतिज्ञों तथा मलमल का प्रतीकार्थ धनिक वर्ग से है। राजनीतिज्ञों के साथ धनवान, उद्योगपतियों की सांठ-गांठ है तथा दोनों मिलकर गरीबों को लूट रहे हैं।

कवि को अपने देश के खेत-खलिहानों से प्रेम है। इसलिए वह कहता है-

खेत हमारे भूमि हमारी सारा देश हमारा है।
इसीलिए तो हमको इसका चप्पा-चप्पा प्यारा है।।

चीन के आक्रमण के समय स्वदेशानुराग में डूबा कवि हृदय पुकार उठाः

आज तो मैं दुश्मन हूँ तुम्हारा,
पुत्र हूँ भारत माता का
और कुछ नहीं हिन्दुस्तानी हूँ महज
प्राणों से भी प्यारे हैं मुझे अपने लोग
प्राणों से भी प्यारी है मुझे अपनी भूमि।।

नागार्जुन की प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं- युगधारा (1956 ई.), सतरंगे पंखों वाली (1959 ई.) प्यासी पथराई आँखें (1962 ई.) और भस्मांकुर। इनके अतिरिक्त उनकी कुछ लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित हुई है। जिनके नाम हैं खून और शोले, प्रेत का बयान, चना जोर गरम, 'अब तो बन्द करो हे देवि यह चुनाव का प्रहसन'।

नागार्जुन की कविताओं में जन जीवन की आशा-आकांक्षा व्याप्त है तथा वह सामाजिक चेतना से भी परिपूर्ण हैं। उन्होंने अभावों से ग्रस्त, पीड़ित एवं शोषित सर्वहारा वर्ग की वेदना को अनुभव किया और उसे कविता में वाणी प्रदान की। डॉ. प्रकाश चन्द्र गुप्त का यह कथन नागार्जुन के कृतित्व की सही व्याख्या करता है ''नागार्जुन ऐसे साहित्यकार हैं, जो अभावों में ही जन्मे हैं। पीड़ित वर्ग के कष्टों को उन्होंने स्वयं झेला है। निःसंदेह ऐसा ही व्यक्ति भारत की निम्नवर्गीय जनता का सच्चा सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व कर सकता हैं।''

नागार्जुन के काव्य में यथार्थ का चित्रण अपनी पूरी स्पष्टता एवं सच्चाई के साथ है। उन्होंने कुछ भी छिपाने का प्रयास नहीं किया। कवि जानता है कि हमारे वर्तमान समय में सत्य बोलना पाप है और चापलूसी करना, झूठ बोलना युगधर्म बन गया है

सपने में भी सच न बोलना,
वरना पकड़े जाओगे?
भैय्या लखनऊ दिल्ली पहुँचो
मेवा मिसरी पाओगे।
मेवा मिलेगा रेत सको यदि
गला मजूर किसानों का।
हम मरभुक्खों से क्या होगा,
चरण गहो श्रीमानों का।।

कवि ने अपनी व्यंग्य रचना 'चना जोर गरम' में भ्रष्टाचारी, स्वार्थी अवसरवादी लोगों की पोल खोलते हुए तीखा व्यंग्य किया है।

चना है बना मसालेदार
खाइए भी तो यह सरकार
मिलेगा परमिट बारम्बार
मिलेंगे सौदे सभी उधार
नया हो जावेगा घर बार
कि लदलद कर आवेगी कार।

नेता लोग किस प्रकार गाँधी के नाम पर वोट बटोरकर गाँधी जी के सिद्धान्तों को तिलांजलि दे रहे हैं, इसका यथार्थ चित्रण इन पंक्तियों में हैं-

बेच बेचकर गाँधी जी का नाम बटोरो वोट
बैंक बैलेन्स बढ़ाओ

राजघाट पर बापू की वेदी के आगे अश्रु बहाओ।

भारत भर में व्याप्त भ्रष्टाचार को देखकर कवि का हृदय पीड़ा से रो उठता है और अपना आक्रोश इन शब्दों में व्यक्त करता है-

रामराज में अबकी रावण नंगा होकर नाचा है।
सूरत शकल वही है भैया बदला केवल ढाँचा है।।

निष्कर्ष यह है कि कवि ने मजदूर, किसान, व्यापारी, नेता, जमींदार, सब पर दृष्टिपात करते हुए उनका यथार्थ चित्रण अपने काव्य में किया है। उसे सामाजिक विषमता पर आक्रोश है। वैयक्तिक अभावों से पीड़ित जनता से उसे सहानुभूति है। साथ ही शोषकों के वैभव एवं विलास पर वह खुलकर व्यंग्य करता है। देश की वर्तमान दशा से वह दुःखी है और यह चाहता है कि महापुरुषों के व्यक्तित्व को प्रान्तीयता की कैद से मुक्ति दी जाए। सुभाष केवल बंगाल के ही नहीं, अपितु भारत के 'हीरो' हैं। तिलक महाराष्ट्र के ही नहीं, अपितु भारत के गौरव हैं।

***राष्ट्रभक्ति का मूल्य प्राण है,***
***देखें कौन चुकाता है।***
***कौन सुमन शय्या को तजकर***
***कंटक पथ अपनाता है।।***

गाँधीजी गुजरात के नहीं, अपितु पूरे भारत के 'बापू' हैं। देश में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं योजनाओं की विफलता के यथार्थ चित्र भी नागार्जुन की कविता में मिलते हैं।

पाँच वर्ष की बनी योजना एक नहीं दो तीन।
कागज के फूलों ने ले ली सबकी खुशबू छीन।।

नागार्जुन को जन कवि कहना भी समीचीन है। वे जन कवि हैं, जनता के चारण हैं। उनकी लोक दृष्टि अत्यन्त व्यापक हैं। वे गाँव, गली की बात करते हैं और उस भाषा में कहते हैं, जिससे सब परिचित हैं। बिना किसी लाग लपेट के अपनी बात को कहने वाले कवि के रूप में नागार्जुन सर्वाधिक लोकप्रिय हैं। 'अकाल और उसके बाद' शीर्षक कविता में वे 'भूख' का चित्रण इन शब्दों में करते है-

बहुत दिनों तक चूल्हा रोया चक्की रही उदास।
बहुत दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास।।

इसी प्रकार 'प्रेत बयान' नामक कविता में वे भूख के कारण मरे अध्यापक की दशा का चित्रण इन शब्दों में करते है-

ओ रे प्रेत -
कड़क के बोले नरक के मालिक यमराज
सच सच बतला।
कैसे मरा तू?
भूख से अकाल से?
बुखार कालाजार से?

उनकी बात का उत्तर देता हुआ वह कहता है-

सुनिए महाराज
तनिक भी पीर नहीं
दुःख नहीं दुविधा नहीं
सरलतापूर्वक निकले थे प्राण
सह न सकी आंत जब पेचिश का हमला
सुनकर दहाड़ स्वाधीन भारत के
भुखमरे स्वाभिमानी सुशिक्षित प्रेत की
रह गए निरुत्तर महामहिम नरकेश्वर।

नागार्जुन कहीं राजनीति और राजनीतिक नेताओं पर व्यंग्य करते हैं तो कही पूँजीपतियों की लोलुपता एवं स्वार्थपरता को अपना काव्य विषय बनाते हैं। निश्चय ही उनकी लोकदृष्टि व्यापक है। उनकी यथार्थ चेतना सर्वकालिक है।

A-101, जयश्री विहार,
थेगड़ा पुलिया के पास,
कैथून रोड, कोटा-324003
**मो : 9351529969**

## जीने की कला

# दिव्य विचार शिक्षकों के लिए ध्यान

❒ तरुण कुमार सोलंकी

एक शिक्षक को अपने मन, बुद्धि व कर्म पर विचार अवश्य करना चाहिए। शिक्षक के मन में स्वच्छता या दिव्यता होती है तो बुद्धि उस कर्म का सही निर्णय करती है। जब बुद्धि सही निर्णय करती है तो कर्म अपने आप श्रेष्ठ, सुखदायी और परोपकारी होता है परन्तु जब भाव दिव्य नहीं होकर मलीनता लिए होता है तो मन में उठने वाले प्रत्येक विचार स्वच्छता की बजाय मलीनता और गलत चीजों के सन्दर्भ में ज्यादा प्रभावशाली होता है। उस वक्त मानव बुद्धि निर्णय देते समय मलीनता के सामने झुक जाती है, और जो कर्म होता है वह गलत, दुखदायी और अनिष्टकारी होता है। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है कि हे अर्जुन! मन की मलीनता मनुष्य को सही, पुण्य और दैवी (अच्छे) संस्कारों से दूर ले जाती है।

ये अनिष्टकारी कर्मों से बनने वाले संस्कार आत्मा व मन पर हावी व प्रभावी होते हैं। जिस मनुष्य की सोच, विचार व कर्म आसुरी या खराब प्रवृत्ति की श्रेणी वाला होता है। जो दूसरों को कष्ट देकर स्वयं को उच्च समझते हुए अभिमान से भर जाता है। शिक्षक को इस प्रकार की सोच से बचना चाहिए। शिक्षक अपने दिव्य विचारों, स्वच्छता व सकारात्मक सोच से अपने विद्यार्थियों के मन, बुद्धि व कर्म में स्वच्छता लाने का प्रयास सदैव कर सकता है। ऐसे विद्यार्थी राष्ट्र व देश के लिए बहुउद्देशीय एवं उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

**समझें, सही और गलत में भेद–** एक शिक्षक को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह अपने विद्यार्थियों में इस गुण का विकास कैसे करे कि बालक स्वयं ही सही व गलत तथ्य में भेद कर सके। मन एवं बुद्धि में सही सकारात्मक सोच के साथ स्वच्छता और विचारों में दिव्यता आए। स्वच्छता व दिव्यता आने पर कर्म स्वयं ही श्रेष्ठ व सुखदायी होंगे। शिक्षक द्वारा दिखाया गया यही सकारात्मक सोच का मार्ग विद्यार्थियों को उच्च व उज्ज्वल भविष्य की रोशनी और सही रास्ता दिखाने का आधार होता है। मानव जीवन और राष्ट्र का यही उद्देश्य है कि उसे उच्च कोटि की बौद्धिक क्षमता व दिव्य विचारों से युक्त भावी पीढ़ी मिले।

आज के युग में शिक्षक के सामने सबसे बड़ी चुनौती है इस मलीनता वाले सुनामी वातावरण में खुद को व बालकों को कैसे विचारवान बनाये रखे; क्योंकि आज के युग में हवा से लेकर पानी और वातावरण चारों तरफ अन्य कारकों से प्रभावित है। मानव सन्मार्ग पर और स्वच्छता के मार्ग पर चलना चाहते हुए भी अपने आपको असहाय व असमर्थ पाता है। जीवन के रास्ते में आने वाली अड़चनों और मुश्किलों का सामना करते हुए भी डटकर मुकाबला करने वाले ऐसे पथिकों की संख्या कम ही है।

**ध्यान जीवन का आवश्यक अंग है–** मानव मन को एक बिन्दु या आलम्बन पर स्थिर करना अथवा मन, वचन और शरीर की प्रकृति का निरोध करना ध्यान है। ध्यान की परिभाषा सरल जरूर है परन्तु प्रायोगिक रूप उतना ही जटिल प्रतीत होता है। इस ध्यान की प्रक्रिया की मूल बात है–व्यक्ति का सहज संतुलन। बिना संतुलन के ध्यान प्रक्रिया का शुभारंभ नहीं माना जा सकता है।

ध्यान एक ऐसी शक्ति है जिसके बिना व्यक्ति न तो अपने व्यक्तित्व की पहिचान बना पाता है, और न ही साधना (उपासना) का रहस्य जान पाता है। मानव जीवन का आध्यात्मिक दृष्टि से विश्लेषण कर चिंतन किया जाए तो ध्यान जीवन का आवश्यक अंग है।

इसी क्रम में एक शिक्षक अपने विद्यार्थियों को ध्यान (मन) से अध्ययन करने के लिये कहता है। माता-पिता अपने बच्चों को ध्यान से कार्य करने, वाहन आदि चलाने का आदेश देते देखे जा सकते हैं। मानव द्वारा ध्यान से व एकाग्रचित्त होकर किया गया कार्य सदैव अच्छा, लाभकारी एवं स्वयं को सुखद परिणाम देने वाला होता है। असावधानी व बिना ध्यान से, बिना एकाग्रचित्त हुए किया गया कार्य सही सफल व सुखद परिणाम नहीं देता है। आज के इस दूषित वातावरण में विशेष रूप से विद्यार्थियों के मन, विचार को दूषित होने तथा प्रभावित होने से कैसे बचाया जाए? यदि मानव सन्मार्ग और स्वच्छता के मार्ग पर चलते हुए भी अपने आपको परिस्थितियों के सामने असमर्थ पाता है।

गलत तरीकों से पैसा कमाने वाले लोगों को भ्रम हो जाता है कि आखिर यह मार्ग सही है या गलत है; क्योंकि बुराइयों और मलीनता के बहाव में बहने वाला हर व्यक्ति अपने को सही और बेहतर बताने के लिए पूर्ण प्रयास करने में लगा रहता हैं। ध्यान प्रक्रिया के द्वारा मानव या शिक्षक इस मलीनता की बुराई से बचने का प्रयास कर सकता है।

**ध्यान से खुशी और सुख–** एक बहाव में बहते-बहते हमने खुद को एक मशीन बना लिया है। मूर्च्छित अवस्था में दौड़े चले जा रहे हैं। कार्य कुछ कर रहे होते हैं परन्तु हमारा मन हम से दूर कहीं और ही यात्राएँ कर रहा होता है। उसी दृष्टिकोण को बदल कर स्वयं पर टिकता है तो हर पल, हर साँस हम होशपूर्वक जीने लगते हैं। यही वर्तमान में जीना है। हम चाहे भविष्य की योजना बनाएँ तथा भूतकाल की घटनाओं का विश्लेषण करें; परन्तु सब होशपूर्वक करें; पूर्ण सजगता व सावधानी से करें। यही वर्तमान में जीने का अर्थ है। वर्तमान में जीना एक कला है। इसलिए भगवान महावीर व बुद्ध ने 'ध्यान' से इस जीने की कला को हासिल करने का मार्ग दिखाया है।

जब व्यक्ति सजगता से जीवन जीना आरम्भ करता है तो उसका भटकाव स्वयं ही निषिद्ध हो जाता है। वह ध्यान की प्रक्रिया से क्रोध, लोभ, अहंकार, मोह, माया आदि प्रवृत्तियों तथा समस्त राग-द्वेषों से धीरे-धीरे मुक्त होता हुआ सच्चे आनन्द की ओर बढ़ता चला जाता है। इसी से मानव को खुशी व सुख मिलता है। उस आन्तरिक खुशी व सुख को शब्दों में नहीं बाँधा जा सकता है केवल महसूस किया जा सकता है।

**मानव मन को समझना–** शिक्षा में हम विद्यार्थियों को तकनीकी और शरीर विकास की बात, शरीर रचना की बात सिखाते हैं। मानव बुद्धि को तेज करना सिखाते हैं परन्तु मन की बात कोई नहीं करता, अध्यात्म में आत्मा की बात तो बहुत दूर की बात है। मानव जीवन चलता किससे है? मन से चलता है। आप पढ़ रहे हैं क्योंकि कि आपके मन में एक इच्छा है। अगर इच्छा या चाह नहीं होती तो आप पढ़ने नहीं जाते। जब मन में इच्छा नहीं होती तो बुद्धि काम नहीं करेगी, बुद्धि के काम नहीं करने से शरीर भी काम नहीं करेगा। अतः बुद्धि व शरीर दोनों साधन हैं– उस इच्छा को पूरी करने के।

मन को सारे दुख–सुख महसूस होते है, अच्छा है या बुरा है यह भी मन को महसूस होता है। प्रेम, दया, करुणा, स्नेह, वात्सल्य ये सारे विषय मन से जुड़े हुए हैं। अगर मानव मन को नहीं समझता तो उसने अपने जीवन को नहीं समझा, फिर चाहे व्यक्ति कितना ही बुद्धिमान, बड़े पद पर आसीन व धनाढ्य हो।

**बुद्धि से कैसे पकड़ते हैं मन को–** बिना किसी शब्द के, बिना किसी भाषा के मन अपने आपको बिम्बित करता है और जिसका मन जहाँ जुड़ा हुआ है वो बात को समझ जाता है। शिक्षक यह प्रयास करता है कि विद्यार्थी (बालक) कक्षा में विषय अध्ययन के लिए मन से जुड़े क्योंकि मन से ही शुद्ध और श्रेष्ठ संकल्पों का विचार प्रवाह होने लगता है। बालक विषय समझकर सम्पूर्ण विषयवस्तु को याद रखने का प्रयास करता है।

अच्छे कर्मों से हम सुखी होंगे तो निश्चित ही समाज, राष्ट्र को इसका लाभ मिलेगा। मन की स्वच्छता प्रत्येक बालक के लिए होना उसकी मन व आत्मा के शाश्वत मूल्यों के लिए आवश्यक है। अतः प्रत्येक माता–पिता व शिक्षक इसकी तलाश करने में बालकों का पूर्ण मार्गदर्शन कर व सही राह दिखाने में सहयोग करते हैं। बालक चाहे कैसे भी खराब परिवेश में रहता हो परन्तु स्वच्छता (मन, शरीर, आत्मा व सोच की) उसे पसन्द आती है। इसलिए शिक्षक व माता–पिता, अभिभावकों को अपने कर्म व कर्त्तव्य–संकल्पों पर अवश्य ध्यान देना चाहिए।

श्री पंचमुखी हनुमान मंदिर के पास,
रानी बाजार, बीकानेर–334001
**मो. 9530019024**

## छन्द परिचय

# दोहा छंद एवं उसके प्रकार

❐ **मुहम्मद कुरैशी 'निर्मल'**

दोहा तो उत्तरी भारत की विधा होने के समानान्तर राजस्थान की प्राचीनतम लोक पद्य विधा है। इसका जन्म कहाँ से और कैसे हुआ यह तो शोध का विषय बना हुआ है। कुछ लोगों की धारणा है कि यह विधा तो तब से प्रचलित है जबकि कागज का अस्तित्व ही नहीं था। लोग उसे पीढ़ी दर पीढ़ी कंठस्थ कर लिया करते थे।

दोहा जन साधारण की कविता है। इसलिए सामान्य जन इसका प्रयोग अपने हर्ष, विषाद, आशाओं, अपेक्षाओं आदि की अभिव्यक्ति में करते रहे हैं। इसमें व्यक्ति की भावाभिव्यक्ति हेतु सीधी–सादी कविता कहने की विधि है। आज तो; क्या हिन्दी और क्या उर्दू दोहा, खूब प्रचलित है।

साधारणतः दोहा संस्कृत के ह्रास, अपभ्रंश के उछाल तथा खड़ी बोली के प्रारम्भ में अपनाई गई विधा है। ये उस काल से प्रचलित है जब कि हिन्दी या उर्दू का व्याकरण भी निर्धारित नहीं था। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि दोहे के आरम्भ को लेकर विद्वानों में मतभेद हैं। श्री शिवनन्दन प्रसाद ने अपनी पुस्तक 'मात्रिक छन्दों का विकास' में इस विधा का चरम उत्कर्ष चौदहवीं शताब्दी को माना है। कुछ विद्वान इसे नवीं शताब्दी की देन मानते हैं, कुछ 'विद्यांक' को दोहे का जनक मानते हैं जो आठवीं शताब्दी की बात है। परन्तु अधिकतर विद्वानों का विचार है कि दोहा संस्कृत के 'दुग्धक' से व्युत्पन्न है।

दोहा अपनी यात्रा में समय–समय और स्थान–स्थान पर भिन्न–भिन्न नामों से जाना जाता है। कुछ ने इसे 'दोहरा', 'दुपदास' और ऐसे ही मिलते–जुलते नाम 'दोही', 'दूहा' दिए है। कुछेक विद्वानों ने इसके नाम 'दोहक', 'दोहरा', 'दोहड़ा', 'दोह' भी लिखा है। इसके कुछ नाम भिन्न–भिन्न दौर में 'अपदोहक', 'दोहरा', 'संदोहक', 'दोहके' आदि भी रहे हैं। कुछेक हिन्दी के विद्वानों का विचार है कि सर्वप्रथम संस्कृत में कालीदास ने इसका प्रयोग किया। परन्तु कुछ विद्वान संस्कृत में इसका प्रयोग सामान्यतया नहीं मानते।

कुछ लोगों का मत है कि पता नहीं यह अपभ्रंश की अपनी खोज है या किसी विदेशी भाषा अरबी फारसी की देन है, क्योंकि दोहा गजल के 'मतला' (गजल का प्रथम शेर) जैसा है। परन्तु इसके प्रचलन व इसकी जड़ों की निराई करें तो यह जनसामान्य में कण्ठों से कण्ठों द्वारा चला आता है।

राजस्थान में तो ठेठ गाँवों और ढाणियों में भी विशेष अवसरों पर ग्रामीण बड़ी संख्या में नाचते–गाते दोहों का प्रयोग करते हैं। अपनी समस्या को सम्बोधित करते ग्रामीण दोहा (साखी) गाता है–

डूंगर ऊपर डूंगरी, डूंगर माथै केर।
ब्याण जी मूण्डे बोलो, रुपयों रो कर दूँ ढेर।।

इसी तरह की साखियाँ विशेष रूप से खुशियों के अवसर पर गायी जाती हैं। अतः अब तो यह स्वयं सिद्ध है कि दोहा जनसामान्य के दिमाग की उपज है और इसके उद्‌गम तक पहुँचना बड़ा दुष्कर है। सदियों से प्रचलन में आई बात के आदि तक पहुँचना कठिन है। हाँ, कुछ विद्वान आज भी इस मत के हैं कि यह गंवारू विधा है। किन्तु इसका प्रचलन इक्कीसवीं सदी की राह का राही बन चुका है।

एक और तथ्य स्पष्ट रूप से प्रगट हो रहा है कि ये जो दोहे के विविध नाम (दोहरा, दुपदास, दोही, विदूहा, दोहक, दोह, अपदोहक, सन्दोहक, दोहिके आदि) हैं सब दोहे हैं; बात सही नहीं है। वस्तुतः ये सब भिन्न क्रम में हैं। एक उर्दू विद्वान जहीर ग़ाज़ी पुरी इन्हें भिन्न–भिन्न विधाएँ मानते हैं तथा इनको अलग–अलग मात्राओं वाले छन्द बताते हैं।

उनके कथनानुसार–

दोहे की मात्रा 13+11=24 हैं

दोहरा 12+11= 23 हैं
दोही 15+11= 26 हैं।
दोहक 14+12 = 26 हैं।

दोहे भी छब्बीस मात्राओं के होते हैं परन्तु इसके दोनों चरणों की मात्राएँ समान है। 13+13=26 हैं। हाँ सोरठा 24 मात्राओं वाला मात्रिक छन्द हैं, परन्तु यह दोहे के उलट मात्राओं वाली विधा है अर्थात् इसकी मात्राएँ 11+13 होती हैं।

प्रोफेसर गोपीचंद नारंग के अनुसार-

''दोहा अपभ्रंश का सर्वमान्य छन्द है।''

'हिन्दी साहित्य का छन्द विवेचन' में डॉक्टर गौरीशंकर मिश्रा ने स्पष्ट रूप में लिखा है कि दोहा पहले दोहक और द्वीपथिक के नाम से जाना जाता था और उसकी मात्राएँ 14+12=26 समझी जाती थी जबकि उसमें भी वही 13+11= 24 मात्राओं वाली बात मिलती है। अतः उसे दोहक न कह कर दोहा कहा गया। इसलिए सामान्यतः समझा जाना चाहिए कि दोहे के दो चरण होते हैं तथा प्रथम चरण के पश्चात् थोड़ा रुककर दूसरा चरण होता है। यहाँ प्रथम और तृतीय चरण को विषम तथा दूसरे और चौथे चरण को सम चरण कहा गया है। विषम चरण में 13 और सम में 11 मात्राएँ होती हैं। उदाहरण-

साँच बराबर तप नहीं
ऽ।।ऽ।।।।।ऽ = 13
विषम चरण 13 मात्राएँ, विश्राम।
झूठ बराबर पाप = 11
ऽ।।ऽ।।ऽ। समचरण 11 मात्राएँ

दोहे की परिभाषा के ज्ञानार्थ श्रीमान फनाज हामिदी का यह दोहा याद रखना उपयुक्त होगा।

तेरा ग्यारह मात्रा
बीच बीच विश्राम।
दो मिसरों की शायरी
दोहा जिसका नाम।।

क्योंकि दोहा बोलचाल की सामान्य भाषा में कहा जाता था इसलिए लोग इसे चरवाहों व दरवेशों के गीत के रूप में ही देखते थे। यद्यपि यह एक संकुचित दृष्टिकोण था परन्तु जब भारत में सूफी संतों का दौर आरम्भ हुआ और संकुचित दृष्टिकोण के विरुद्ध दोहे में मानवीयता की भावना एवं राम-रहीम की मिली-जुली भक्ति भावना में सांस्कृतिक दर्शन सूफी संतों ने स्थापित किया, अपने दर्शन का प्रचार-प्रसार किया और दोहे को कविता की नई मिसाल साबित किया। तब इसका प्राचीन पारम्परिक ढाँचा साहित्यिक रंग में परिवर्तित हो गया। इस संत परम्परा में ही भक्तिकाल का एक साहित्यिक काल प्रारम्भ हुआ। जिसमें बड़े-बड़े संत कवि पैदा हुए परन्तु संतों की इस ग्राह्यता से दोहा उर्दू साहित्य से भिन्न (अरबी व फारसी कसौटी) पर खरा रहा और इसे उर्दू से दूरियाँ मिली। उर्दू हिन्दी के आदि कवि माने जाने वाले अमीर खुसरो ने दोहे को नई ऊँचाइयों से दो चार किया। फिर तो भक्ति काल के कवियों की एक लम्बी पंक्ति उभरी जिसमें कबीर, रहीम, बिहारी, रैदास, बांकीदास, नीमा, दादूदयाल आदि कई भक्त कवि हुए और दोहा गंवारू विधा की संज्ञा से हटकर जनसामान्य को शिक्षा देने का एक सशक्त माध्यम हो गया। दोहों में उच्च कोटि की साहित्यिकता उदाहरणार्थ प्रस्तुत है-

चित्रकूट के घाट पर भई संतन की भीर।
तुलसीदास चँदन घिसे तिलक करे रघुवीर।।

**तुलसीदास**

गौरी सोवै सेज पर- मुख पर डारे केस।
चल खुसरो घर आपने-साँझ भई चहुँ देस।।

**अमीर खुसरो**

अच्युत चरण तरंगिणी, शिव सिर मालति माल।
हरि न बनायो सुरसरि, कीजै इन्दव भाल।।

**रहीम**

चिरजीवो जोरी जुरे, क्यों न सनेह गंभीर।
इतते ये वृष भानुजा, वे हलधर के बीर।।

**बिहारी**

दादू दुनियाँ बावरी, सोच करै आ गैली।
रोटी देसी राम जी, दिन ऊग्याँ पैली।।

**दादूदयाल**

आज दोहा जन साधारण में सबसे अधिक गायी और समझी जाने वाली विधा का रूप ले चुका है और बड़े-बड़े साहित्यकार इस विधा में कविता कर दोहे को परवान चढ़ा रहे हैं।

30-31 अलीनगर, नून्द्री
ब्यावर, अजमेर-305901
**मो : 9351007345**

## पाठ्यपुस्तक समीक्षार्थ कार्यशालाएँ

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर द्वारा सत्र 2015-16 में कक्षा 1 से 8 तक की हिन्दी, अंग्रेजी, गणित कक्षा 6 से 8 की संस्कृत, विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान तथा कक्षा 3 से 5 तक की पर्यावरण अध्ययन के पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों का निर्माण किया गया साथ ही सत्र 2016-17 में कक्षा 1 से 8 की गणित, कक्षा 6 से 8 की विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान तथा कक्षा 3 से 5 की पर्यावरण अध्ययन पाठ्यपुस्तकों का अंग्रेजी अनुवाद भी किया गया। इन हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम की पाठ्यपुस्तकों की समीक्षा कार्यशालाएँ माह मई 2017 से जुलाई 2017 के मध्य प्रस्तावित की गई है।

अतः प्रदेश के समस्त सरकारी, गैर सरकारी, मान्यता प्राप्त संस्थाओं, विद्यालयों शिक्षकों, अभिभावकों एवं विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि उक्त पाठ्यपुस्तकें राजकीय विद्यालयों/राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल, जयपुर की वेबसाइट (www.rstbraj.in) पर ऑनलाइन उपलब्ध है। उक्त पाठ्यपुस्तकों से संबंधित यदि किसी प्रकार की सम्भावित त्रुटियों या समीक्षा किये जाने योग्य या सुधारे जाने योग्य बिन्दु/विषयवस्तु हो तो वे जुलाई 2017 के प्रथम सप्ताह **(07 जुलाई 2017) तक अनिवार्यतः** संस्थान के ई-मेलआईडी director.siert@rajasthan.gov.in पर भिजवा देवें जिससे तत्संबंधी आवश्यक त्रुटि सुधार प्रस्तावित की गई समीक्षा कार्यशाला में चर्चा के लिए रखे जा सकें एवं आवश्यक त्रुटि सुधार पाठ्यपुस्तक के आगामी संस्करणों में प्रकाशन हेतु समय पर सचिव, राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल, जयपुर को भेजे जा सकें एवं सुधार करवाया जा सके।

● निदेशक राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर
● क्रमांक : राराशैअप्रसं-उदय/वि-9/प्र.1/फा.-8001-समीक्षा/16
दिनांक 25.4.17

स्काउट गाइड विशेष

# जम्बूरी में हुआ महाकुंभ सा अहसास

❒ राकेश टांक

भारत स्काउट व गाइड राष्ट्रीय मुख्यालय नई दिल्ली के तत्वावधान में प्रत्येक चार वर्ष के बाद राष्ट्रीय स्तर पर स्काउट गाइड जम्बूरी आयोजित की जाती है। भारत के विभिन्न राज्यों के स्काउट गाइड इस जम्बूरी में भाग लेते हैं वहीं सार्क सहित अन्य देशों की भी सहभागिता रहती है। जम्बूरी स्काउट गाइड जगत का राष्ट्रीय स्तर का एक मेला अथवा एक प्रकार का महाकुंभ है।

राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड राज्य मुख्यालय जयपुर ने जम्बूरी पूर्व तैयारी शिविर दिनांक 20 से 24 दिसम्बर 2016 तक राज्य प्रशिक्षण शिविर केन्द्र जगतपुरा जयपुर में आयोजित किया। इस जम्बूरी में भाग लेने के लिए राजसमंद जिले के रा.आ.उ.मा.वि. कुंचौली (कुम्भलगढ़) जिला- राजसमंद से स्काउट दल स्काउटर राकेश टांक के मार्गदर्शन में 20 दिसम्बर 16 को प्रातः 08:00 बजे जगतपुरा जयपुर पहुँचा। 20 से 24 दिसम्बर तक विभिन्न प्रतियोगिताओं का पूर्वाभ्यास कराया गया। मुझे राजस्थान के स्काउट मार्च पास्ट दल का प्रभारी बनाया गया। मैंने इस कार्य का निर्वहन पूर्ण मनोयोग से किया व राष्ट्रीय स्तर पर ए ग्रेड दिलाने में सफलता हासिल की।

24 दिसम्बर 2016 को उदयपुर मण्डल के उप दल नेता सुरेन्द्र कुमार पाण्डे के दिशा निर्देश में खातीपुरा रेल्वे स्टेशन पर पहुँचे, वहाँ से सायं 06:00 बजे स्काउट गाइड की विशेष रेलगाड़ी को स्टेट चीफ कमिश्नर जे.सी. महान्ति ने हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। यह रेलगाड़ी गुजरात, महाराष्ट्र होती हुई 27 दिसम्बर को प्रातः 2.30 बजे मैसूर स्टेशन पहुँची, वहाँ से राजस्थान अपनी परम्परा के अनुरूप एक बड़े दल के रूप में स्टेट कमिश्नर कार्यक्रम क्रियान्वयन रघुवीरसिंह शेखावत के निर्देशन में जम्बूरी स्थल पर बसों द्वारा पहुँचा। 27 की शाम होते-होते राजस्थान ने बसासट कर अपने झण्डे जम्बूरी मैदान पर गाड़ दिए। 28 दिसम्बर को हमने उद्घाटन समारोह का पूर्वाभ्यास किया।

राष्ट्रीय जम्बूरी का यह आयोजन अपने आप में स्काउट आन्दोलन से जुड़े हर व्यक्ति के लिए अद्भुत अनुभव है। देश-विदेश के हजारों स्काउट्स गाइड्स का यह अनोखा मेला अपने आप में इसलिए भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि ऐसा आपसी मैत्री भाव से ओत प्रोत इतनी संख्या में एक साथ स्काउट्स गाइड का संगम महाकुम्भ के रूप में अन्यत्र नहीं होता है।

ऐसा ही महाकुम्भ का दृश्य जम्बूरी स्थल पर साक्षात हो रहा था, जिधर नजर दौड़ाओ विशाल भाग में तम्बूओं से सजा यह जम्बूरी नगर बसा था। चारों तरफ पोशाक धारित किए नन्हे-नन्हे स्काउट गाइड अपनी ही मौज मस्ती में बसावट में लगे थे। मानो पूरा का पूरा भारत देश मैसूर मैदान पर उतर आया हो। भाषा, धर्म, संस्कृति, खान-पान, पहनावा चाहे अलग-अलग हो पर 'हम सब एक हैं' का नजारा यहाँ देखने को मिल रहा था। 'टुगेदर फॉर बेटर टूमारो' के लिए एकत्रित हुई बाल शक्ति के माध्यम से राष्ट्र शक्ति जागृत करना प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है।

29 दिसम्बर को वो पल भी आ गया जब हमारे देश के महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने जम्बूरी का उद्घाटन किया। इस अवसर पर एक ही गाने पर सभी प्रदेशों के लोकनृत्य, शारीरिक व्यायाम, मलखम्भ, लेजिम, पिरामिड्स का प्रदर्शन एक साथ होना ऐसा लग रहा था कि पूरा भारत हमारे सामने हो। उद्घाटन के साथ ही शुरू हुई विभिन्न प्रतियोगिताएँ जैसे-मार्चपास्ट, कलर पार्टी, बैण्ड, युवा चर्चा, झाँकी प्रदर्शन, स्किल ओ रामा, प्रैटोल-इन-कोन्सिल, लोक नृत्य, शारीरिक व्यायाम, शिविर कला, राज्य गेट निर्माण, पायनियरिंग प्रोजेक्ट, राज्य दिवस, प्रदर्शनी, फूड प्लाजा, भारत दर्शन, रूट मार्च ट्रेनर्स मीट, हिमालय वुड बैज-री-यूनियन में स्काउटर गाइडर ने सहभागिता की व विभिन्न राज्यों के स्काउट गाइडों ने स्पर्द्धात्मक प्रदर्शन कर अपनी-अपनी क्षमता का परिचय दिया।

मैसूर जम्बूरी में राजस्थान दल की पहचान हरा, पीला, फिरोजी, गुलाबी, ग्रे, नीला व केसरिया कलर के गेजेट्स व रंग-बिरंगे झण्डों से सिमटा 'रंगीलों राजस्थान' मानो यहीं उतर आया हो, से होती है। यह जम्बूरी इसलिए भी अपने आप में खास स्थान रखती है क्योंकि यहाँ अलग-अलग प्रान्तों से विभिन्न विचारधाराओं, रंग, वेशभूषा, खानपान, संस्कृति, रीति-रिवाज, बोलचाल, तौर-तरीके होते हुए भी यहाँ जम्बूरी नगर में मैत्री भाव से साथ रहते हैं। विचार एवं भावनाओं में मंथन एवं आदान-प्रदान के साथ सात दिन बिना किसी मतभेद व झगड़े से खुशी-खुशी जीवन भर की यादों को मन में संजो गुजार देते हैं। यहाँ बच्चों में राष्ट्रीय एकता, मैत्री भावना, पारस्परिक समझदारी के भावों का विकास के साथ सभी धर्मों के लोगों के साथ मिलजुलकर रहने का अवसर प्राप्त होता है। 31 दिसम्बर 2016 की मध्य रात्रि को नववर्ष की वेला को हमने पूरे भारत व पड़ौसी देशों से आए इतनी बड़ी तादाद में स्काउट गाइड के साथ 'हैप्पी न्यू ईयर' के रूप में मनाया। नए वर्ष के सूर्योदय के साथ ही हम मैसूर भ्रमण के लिए गए। वहाँ का चिड़ियाघर, मैसूर राजमहल व वृन्दावनगार्डन को देखकर बच्चों ने शैक्षणिक ज्ञानार्जन किया।

| जम्बूरी | वर्ष | स्थान | राज्य |
|---|---|---|---|
| पहली | 1953 | हैदराबाद | आंध्रप्रदेश |
| दूसरी | 1956 | जयपुर | राजस्थान |
| तीसरी | 1960 | बैंगलोर | मैसूर (कर्नाटक) |
| चौथी | 1964 | इलाहाबाद | उत्तर प्रदेश |
| पाँचवीं | 1967 | कल्याणी (कलकत्ता) | पश्चिम बंगाल |
| छठी | 1970 | बम्बई | महाराष्ट्र |
| सातवीं | 1974 | फरीदाबाद | हरियाणा |
| आठवीं | 1979 | मराई मलाई (मद्रास) | तमिलनाडु |
| नवीं | 1982 | बोधगया | बिहार |
| दसवीं | 1986 | बैंगलोर | कर्नाटक |
| (एशिया पेसिफिक विशेष) | 1987 | हैदराबाद | आन्ध्रप्रदेश |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ग्यारहवीं | 1990 | भोपाल | मध्यप्रदेश |
| बारहवीं | 1994 | पालघाट | केरल |
| तेरहवीं (मय तीसरी सार्क) | 1998 | खुर्दारोड (भुवनेश्वर) | उड़ीसा |
| स्वर्ण जयन्ती जम्बूरी विशेष | 2000 | चैन्नई | तमिलनाडु |
| चौदहवीं | 2002 | रायपुर | छत्तीसगढ़ |
| पन्द्रहवीं | 2005 | हरिद्वार | उत्तरांचल |
| स्पेशल शताब्दी वर्ष प्रारम्भ | जनवरी 2007 | कोलकाता | पश्चिम बंगाल |
| शताब्दी वर्ष समापन | दिसम्बर 2007 | बुराड़ी | दिल्ली |
| स्पेशल जम्बूरी | 2009 | अहमदाबाद | गुजरात |
| सोलहवीं | 2011 | हैदराबाद | आन्ध्रप्रदेश |
| सत्रहवीं | 2017 | मैसूर | कर्नाटक |

13 वीं एवं तीसरी सार्क जम्बूरी उड़ीसा से उच्च स्तरीय प्रदर्शन वाले राज्य संगठन को चीफ कमिश्नर शील्ड (स्काउट व गाइड विभाग) एवं सम्पूर्ण श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए नेशनल कमिश्नर फ्लेग दिए जाने का प्रावधान रखा गया, तब से निरन्तर राजस्थान प्रदेश को उच्च स्तरीय प्रदर्शन के लिए नवाजे जाने का गौरव प्राप्त हो रहा है। यह हमारे लिए बड़े ही सम्मान की बात है। इस प्रकार मैसूर जम्बूरी में राजस्थान दल पुनः अपना परचम फहराकर विशेष रेलगाड़ी से 04 जनवरी 2017 को रवाना हुआ व 5 जनवरी को प्रातः रेणी गुट्टा आन्ध्रप्रदेश पहुँचा। वहाँ से बसों द्वारा हमारा दल तिरुपति बालाजी के दर्शन हेतु पहुँचा। तिरुपति की छटा ही निराली थी, वहाँ के दर्शन कर हम बड़े ही प्रफुल्लित हुए। पुनः रेणी गुट्टा आकर ट्रेन से आन्ध्रप्रदेश, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश होते हुए जम्बूरी की खट्टी-मीठी यादें साथ लेकर हमारे विद्यालयों की तरफ रवाना हुए। इस जम्बूरी की यादों को मैं व मेरे स्काउट जीवन भर नहीं भुला सकते।

शा.शिक्षक, प्री.ए.एल.टी. (स्काउट)
रा.आ.उ.मा.वि. कुंचौली कुंभलगढ़, (राजसमंद)

**स्पट**

## स्मार्ट क्लास

# डिजिटल एज्यूकेशन की दिशा में बढ़ता कदम

❒ अमित शर्मा

राजस्थान के शैक्षिक इतिहास में एक नया अध्याय तब जुड़ गया जब अजमेर नगर के 30 राजकीय विद्यालयों में निर्मित स्मार्ट कक्षा-कक्षों का लोकार्पण केन्द्रीय वित्त राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री अर्जुनराम मेघवाल तथा राज्य के शिक्षा एवं पंचायतीराज राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री वासुदेव देवनानी द्वारा किया गया। अजमेर नगर के 30 राजकीय (माध्यमिक, उच्च माध्यमिक, उच्च प्राथमिक) विद्यालयों में श्रेष्ठतम आधारभूत सुविधाएँ उपलब्ध करवाने का जो संकल्प माननीय शिक्षा राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) वासुदेव देवनानी ने लिया है उसे स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर की सहायता से सामाजिक सरोकार योजना के अन्तर्गत 30 स्मार्ट कक्षा-कक्षों का निर्माण उक्त राजकीय विद्यालयों में करवाकर पूरा किया गया है।

लोकार्पण सम्बन्धित कार्यक्रम अजमेर नगर के राजकीय मोइनिया इस्लामिया उच्च माध्यमिक विद्यालय में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में केन्द्रीय वित्त राज्यमंत्री श्री अर्जुनराम मेघवाल, राज्य के शिक्षा एवं पंचायतराज राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री वासुदेव देवनानी, सांसद एवं किसान आयोग अध्यक्ष श्री सांवरलाल जाट, संसदीय सचिव श्री सुरेश रावत, जिला कलेक्टर श्री गौरव गोयल, मुख्य महाप्रबंधक स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर श्री विजयरंजन तथा दिवाकर मोहन्ती, अजमेर शहर मेयर श्री धर्मेन्द्र गहलोत, अजमेर विकास प्राधिकरण अध्यक्ष श्री शिवशंकर हेड़ा, जिला प्रमुख सुश्री वंदना नोगिया, शहर भाजपा अध्यक्ष श्री अरविन्द यादव एवं उपनिदेशक माध्यमिक शिक्षा श्री जीवराज जाट उपस्थित थे। उक्त कार्यक्रम स्थल पर आगमन से पूर्व समस्त अतिथियों द्वारा राजकीय सावित्री बाउमावि. अजमेर में स्मार्ट कक्षा-कक्ष का उद्घाटन कर संचालित कक्षाओं का निरीक्षण किया गया। कार्यक्रम स्थल राजकीय मोइनिया इस्लामिया उमावि. में निर्मित स्मार्ट कक्षा-कक्ष के लोकार्पण के दौरान स्वयं वित्त राज्यमंत्री भारत सरकार श्री अर्जुनराम मेघवाल, राज्य के शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री वासुदेव देवनानी, मुख्य महाप्रबंधक स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर श्री विजयरंजन एवं जिला कलेक्टर श्री गौरव गोयल उक्त कक्ष में संचालित गतिविधियों से परिचित हुए। समस्त 30 स्मार्ट कक्षा-कक्षों की लोकार्पण पट्टिका का अनावरण एक साथ एक ही स्थान पर राजकीय मोइनिया इस्लामिया पर समस्त अतिथियों द्वारा किया गया। शिक्षा राज्यमंत्री ने कार्यक्रम में स्वयं के उद्बोधन के दौरान स्मार्ट कक्षा-कक्ष के लाभों से विद्यार्थियों और कार्यक्रम में पधारे समस्त अतिथियों को परिचित करवाया। उक्त स्मार्ट कक्षा-कक्ष बनाने का उद्देश्य राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में उस भावना का विकास करना हैं जो निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों में होती है। उक्त कक्षा-कक्ष के माध्यम से विद्यार्थियों को विश्व में शैक्षिक दृष्टि से हो रहे नवाचारों एवं प्रगति से परिचित करवाते हुए उन्हें सम्बन्धित विषय में अद्यतन ज्ञान प्रदान करना है, जिससे वे डिजिटल तकनीक का प्रयोग कर स्वयं की रचनात्मक एवं सृजनात्मक क्षमता का विकास कर सकें। इसमें विद्यालयों में नयापन के साथ-साथ नामांकन में भी बढ़ोतरी होगी।

इन कक्षा-कक्षों में विद्यार्थियों को NCERT, SIERT एवं राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड E- gyan portal इत्यादि पर उपलब्ध शैक्षिक सामग्री एवं दक्ष अध्यापकों के ज्ञान से तार्किक एवं बौद्धिक क्षमता बढ़ाने में सहयोग मिलेगा। अब विद्यार्थियों को पेन-पेन्सिल की जगह कम्प्यूटर, अध्यापक चाक की जगह डिवाइस एवं ब्लेक बोर्ड की जगह प्रोजेक्टर का उपयोग कर सकेंगे। यह प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के डिजिटल इंडिया एवं अजमेर शहर के स्मार्ट सिटी की घोषणा का अभिनव अंग साबित होगा। कार्यक्रम की इस शृंखला में वित्त राज्यमंत्री ने शिक्षा जगत में हो रहे नवाचारों की सराहना की तथा शिक्षा विभाग के डिजिटलाइजेशन की दिशा में बढ़ते कदम की

मंच से प्रशंसा की। अपने व्याख्यान में उन्होंने स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर के भामाशाह के रूप में आगे जाकर स्मार्ट कक्ष बनाने का एक श्रेष्ठतम कदम बताया। आपका कहना था कि ये ऐसा नवाचार है जो राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी को निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों से शैक्षिक प्रतिस्पर्द्धा में आगे ले जाएगा जिसके दूरगामी स्वस्थ परिणाम होंगे जो देश को डिजिटल इंडिया बनाने में सहयोग देंगे। स्मार्ट कक्षा-कक्ष समन्वयक एवं शैक्षिक प्रकोष्ठ अधिकारी कार्यालय उपनिदेशक माध्यमिक शिक्षा अजमेर मंडल अजमेर श्री अमित शर्मा के अनुसार उक्त कक्षा-कक्ष में प्रोजेक्टर, इनवर्टर, कम्प्यूटर प्रिण्टर, स्केनर, 4 G नेटवर्क सुविधा, सेमिनार कुर्सियाँ, सेन्टर टेबल, कम्प्यूटर टेबल, म्यूजिक सिस्टम एवं स्वस्थ वातावरण हेतु कक्षा-कक्ष के आकार अनुसार एअर-कण्डीशनर उपलब्ध करवाया गया है। इन कक्षों में टूट-फूट, प्लास्टर, मरम्मत, रंग-रोगन, टाइल्स, कारपेट, फाल्ससिलिंग एवं LED लाइटें लगा कर उसे सुसज्जित किया गया है। कार्यक्रम में उक्त कक्षा-कक्षों के निर्माण हेतु स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर को शिक्षा विभाग की ओर से शील्ड एवं अभिनन्दन पत्र से सम्मानित किया गया। इस अभिनन्दन पत्र का वाचन अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी अजमेर श्रीमती दर्शना शर्मा द्वारा किया गया। कार्यक्रम के समापन पर उपस्थित अतिथियों एवं आगुन्तकों को जिला शिक्षा अधिकारी श्री कैलाशचन्द्र झंवर द्वारा धन्यवाद दिया गया।

**स्मार्ट कक्षा-कक्ष निर्मित विद्यालयों की सूची**

**क्र. सं. विद्यालय का नाम**

1. राजकीय सावित्री बा.उ.मा.वि., अजमेर
2. रा. केन्द्रीय बा.उ.मा.वि. पुरानी मण्डी, अजमेर
3. रा. मॉडल बा.उ.मा.वि. सुन्दर विलास, अजमेर
4. रा.उ.मा.वि. पुलिस लाइन, अजमेर
5. रा. मोइनिया इस्लामिया उ.मा.वि. स्टेशन रोड, अजमेर
6. रा.उ.मा.वि. माकड़वाली, अजमेर
7. रा. जवाहर उ.मा.वि., अजमेर
8. रा. ओसवाल जैन उ.मा.वि. अजमेर
9. रा.उ.मा.वि. फॉयसागर रोड, अजमेर
10. रा.उ.मा.वि. सिन्धी देहली गेट, अजमेर
11. रा.उ.मा.वि. सिन्धी खारी कुई, अजमेर
12. रा.उ.मा.वि. रामनगर, अजमेर
13. रा.उ.मा.वि. वैशाली नगर, अजमेर
14. रा.उ.मा.वि. हाथी खेड़ा, अजमेर
15. रा.उ.मा.वि. अजयसर, अजमेर
16. रा.बा.उ.मा.वि. कृष्णगंज, अजमेर
17. रा.उ.मा.वि. सोमलपुर, अजमेर
18. रा.बा.उ.मा.वि. सराधना अजमेर
19. रा.बा.उ.मा.वि. आदर्श नगर, अजमेर
20. रा.बा.उ.मा.वि. गुलाबबाड़ी, अजमेर
21. रा.बा.मा.वि. लोहाखान, अजमेर
22. रा.मा.वि. मंगलचन्द सकलेचा मीरशाहअली, अजमेर
23. रा.मा.वि. चौरसियावास, अजमेर
24. रा.मा.वि. कोटड़ा, अजमेर
25. रा. सुभाष मा.वि. गंज, अजमेर
26. रा.बा.मा.वि. लोहागल अजमेर
27. रा.उ.प्रा.वि. बौराज, अजमेर
28. रा.उ.प्रा.वि. खरेकड़ी, अजमेर
29. रा.उ.प्रा.वि. पंचशील, अजमेर
30. रा.उ.प्रा.वि. दातानगर, अजमेर

शैक्षिक प्रकोष्ठ अधिकारी
कार्या. उपनिदेशक माध्यमिक शिक्षा
अजमेर मण्डल, अजमेर
**मो: 9251037377**

**बोधकथा**

# 'यशोदा-माँ' का सम्मान

घटना उस समय की है जब गुरुदास बंदोपाध्याय कोलकाता उच्च न्यायालय में न्यायाधीश थे। इसके अतिरिक्त वे कोलकाता विश्वविद्यालय के कुलपति भी थे। इतने उच्च पदों पर रहते हुए भी वे सरल व सौम्य स्वभाव के व्यक्ति थे। उच्च न्यायालय और विश्वविद्यालय की जिम्मेदारी वे बखूबी निभा रहे थे। न्यायालय में नीर-क्षीर विवेकपूर्ण ऐतिहासिक फैसले और विश्वविद्यालय में प्रशासकीय कुशलता का परिचय देते हुए शिक्षण के अनुकूल वातावरण बनवाने में उनका अनूठा योगदान रहा। इन सबके लिए उनकी सर्वत्र प्रशंसा होती थी। कोलकाता में गुरुदास बंदोपाध्याय की बड़ी प्रतिष्ठा थी।

तभी दरवाजे पर तनिक हलचल हुई, गुरुदास को लगा जैसे कोई अन्दर आना चाह रहा है। जबकि वहाँ पर तैनात चपरासी उसको नहीं आने दे रहा था। सामान्यतया वहाँ ऐसा रोज ही होता रहता है। तभी तो उस कर्मचारी को वहाँ तैनात किया हुआ था। मगर उन्होंने देखा कि आने का प्रयास करने वाली एक वृद्ध, अशक्त महिला है। वह महिला अति सामान्य व गरीब घर की स्त्री नजर आ रही थी।

गुरुदास ने उस महिला को गौर से देखा। वे उसे पहचान गये। वह वृद्ध महिला उनका पालन-पोषण करने वाली धाय थी। उसने गुरुदास को बाल्यावस्था में अपना दूध पिलाया था। अंगुली पकड़ कर चलना सिखाया था। तभी तो धाय का स्थान माँ के समान होता है। वे उसे हमेशा 'यशोदा माँ' कहकर पुकारते थे।

वह कई वर्षों बाद अपने गाँव से गंगा स्नान के लिए कोलकाता आई थी। गंगा स्नान के बाद उसे विचार आया कि गुरुदास को देखे हुए लंबा समय हो गया है। अतः उससे मिलकर हालचाल पूछ लिए जाएँ। वह जैसे-तैसे उच्च न्यायालय तक आ पहुँची थी। वहाँ उनके न्यायालय तक पहुँचकर वह चपरासी से अनुनय-विनय कर रही थी कि वह उसे गुरुदास से मिल लेने दे। लेकिन चपरासी उसके गँवईपन और साधारण पहनावे को देखकर इतने बड़े व्यक्ति से मिलने की अनुमति नहीं दे रहा था। संयोग से गुरुदास जी की नजर द्वार पर पड़ गई और वे महिला को पहचान गये। यह देख, क्षमा याचना सहित निजी कारण से उन्होंने पूरे दिन के लिए न्यायालय की कार्यवाही स्थगित कर दी। वे तत्काल अपनी कुर्सी से उठ खड़े हुए और तुरंत दरवाजे की ओर लपके, जहाँ चपरासी ने उनकी 'यशोदा-माँ' को रोक रखा था।

उन्होंने वृद्धा के चरणों में झुककर प्रणाम किया। वृद्धा ने अश्रुपूर्ण नेत्रों से गुरुदास को उठाकर गले से लगा लिया। वह उन्हें स्नेह-दुलार करने लगी। अपराध बोध से ग्रस्त बेचारा चपरासी यह सब देख रहा था। लोग इस दृश्य को देखकर विस्मित थे। उनकी आँखों में यह जानने की उत्सुकता थी कि वह वृद्ध महिला कौन है और न्यायाधीश महोदय से उसका क्या सम्बन्ध है। तब गुरुदास बंदोपाध्याय स्वयं बोले- 'ये मेरी धाय यानि कि ''यशोदा-माँ'' है। इन्होंने मुझे अपना दूध पिलाया है। इनकी कृपा से ही मैं आज इस योग्य बना हूँ। लोग दंग रह गए कि उन्होंने अपनी धाय को माँ कहा। उसे यशोदा सदृश बताया। बाद में गुरुदास उन्हें पूरे सम्मान सहित घर ले गये। वहाँ दोनों पति-पत्नी ने उनका पूर्ण आदर-सत्कार व सेवा सुश्रुषा की।

संकलन : **प्रदीप कौशिक**
व.अ. अंग्रेजी, रा.मा.वि. गालाबेरी, बाड़मेर **मो. 9461976500**

## अवलोकन वृतान्त

### कार्यालय उप निदेशक माध्यमिक, बीकानेर मण्डल

# जिसने हर किसी का मन मोह लिया

❒ प्रकाश चन्द्र जाटोलिया

इस समय मैं शिक्षा, पर्यावरण और ज्ञान के एक अद्‌भुत संगम स्थल पर खड़ा हूँ। यहाँ की दीवारें ज्ञान से सटी हैं तो परिसर का चप्पा-चप्पा हरियाली से परिपूर्ण है। जमीं तो हरी है ही, बरामदे और सीढ़ियाँ भी गमलों से आच्छादित है। यहाँ तक कि उपवन व प्रतीक्षालय की दीवारें भी हरे रंग से रंगी हुई है। सब हरा और सकारात्मक ऊर्जा देने वाला। पक्षियों के चुग्गे, पानी के लिए अत्यन्त सुन्दर और स्वच्छ पाळसिये और परातें लगी हैं तो आगन्तुकों के बैठने के लिए रोशनी एवं हवादार आवश्यक सुविधाओं से मुक्त प्रतीक्षालय बना है। प्रतीक्षालय है तो निर्मल-शीतल जल की भी व्यवस्था है। यह देखिए, दाईं ओर बड़ी क्षमता का वाटर कूलर लगा हुआ है। अजी भाई साहब! आप अपने मोबाइल को चार्ज करने के लिए बिजली का थ्री-पिन ढूँढ़ रहे हैं क्या! यह लीजिए बाईं तरफ चार्ज करने के लिए पूरा जाल लगा है। आप खाना साथ लाए हैं तो आराम से यहाँ बैठकर भोजन कर खाली डिब्बा डालने के लिए सामने लगे डस्टबिन का उपयोग कीजिए। सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान के प्रहरी हैं जो आप! आपको कुछ लिखना है तो टेबिल भी है और हाँ यदि आप फुरसत मे हैं तो अखबार एवं पत्रिकाएँ भी पढ़ सकते हैं। वैसे तो कलम और कागज आप साथ में लाए ही होंगे, पर यदि उनकी भी आपको जरूरत लगे तो बाजार की तरफ भागने की जरूरत नहीं है। आप कागज, कार्बन, कलम, स्केल, रबड़, पेंसिल, शार्पनर सब यहाँ प्राप्त कर सकते हैं। प्राथमिक चिकित्सार्थ एक फर्स्ट-एड बॉक्स भी यहाँ लगा है।

आपकी जिज्ञासा को शांत करते हुए मैं बताना चाहूँगा कि यह उप निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, बीकानेर मण्डल, बीकानेर का कार्यालय है जिसमें आने वाले शिक्षकों की सुविधा के लिए एक अद्‌भुत प्रतीक्षालय बनाकर उसमें तमाम आवश्यक सुविधाएँ मुहैया करवाई गई है। आइए, शिक्षक प्रतीक्षालय की बात करते है जिसका श्री गणेश हाल ही में 23 अप्रैल 2017 से हुआ है।

दिवंगत शिक्षिका श्रीमती मंजू खत्री की स्मृति में पति विजय खत्री एवं उनके परिवार द्वारा बनाए गए इस भव्य प्रतीक्षालय का उद्‌घाटन करने पधारे माननीय केन्द्रीय वित्त राज्य मंत्री श्री अर्जुनराम मेघवाल इसे देखकर भाव विभोर हो गए। उनकी सहज अभिव्यक्ति थी, ''किसी सरकारी कार्यालय में प्रतीक्षालय देखने का मेरा यह पहला अवसर है।'' उनका ही नहीं यहाँ उद्‌घाटन अवसर पर उपस्थित हर किसी व्यक्ति का यही कहना है। सरकारी दफ्तर में प्रतीक्षालय और उसमें भी आवश्यक सभी सुविधाओं की समुपलब्धता! कार्यक्रम अध्यक्ष संभागीय आयुक्त श्री सुवालाल जी का प्रसन्न होना तो स्वाभाविक ही था। आखिर वे हमारे विभागाध्यक्ष जो रहे हैं। वे शिक्षा विभाग के कार्यालय का यह रूप देखकर अपनी प्रसन्नता उपस्थित लोगों के बीच अभिव्यक्त कर रहे थे।

लीजिए, अब मैं आ गया हूँ बी.जी.एच. पार्क में जो शिक्षक प्रतीक्षालय के ठीक सामने बना है। बीच में सुन्दर बहुरंगी सड़क सीमेंट के ब्लॉक से बनी है। बी.जी.एच. नामकरण पर हमारी जिज्ञासा को शांत करते हुए इसके प्रभारी बद्री पुरोहित बताते हैं कि हमारे उप निदेशक महोदय बहुत भावुक एवं साहित्य मनीषी हैं। वे ईंट-भाटों की आवाज भी सुन सकते हैं। उन्होंने बीकानेर (बी) श्रीगंगानगर (जी) हनुमानगढ़ (एच) तीनों जिलों से मिट्‌टी मंगवाकर नवरात्रि स्थापना के दिन बाकायदा माटी पूजन करवाकर बी.जी.एच. पार्क की स्थापना की है ताकि तीनों जिलों से आने वाले शिक्षक इसमें अपना आत्मीय रिश्ता महसूस कर सकें। वे कहते हैं कि इस पार्क में बाहर से आने वाला कोई भी शिक्षक पौधा अपने साथ में लाकर यहाँ लगा सकता है। पार्क की सड़क के साथ एवं बरामदे में 30 गमलों में भी सुन्दर पौधे लगे हुए हैं। ऐसा मनमोहक दृश्य है जैसे पौधे उन्हें निहारने वालों को पर्यावरण का वरदान दे रहे हो। वे कदाचित आगन्तुकों से बात करना चाह रहे हो। दीवार पर तीन बहुत ही सुन्दर स्टेण्ड लगाकर उन पर पानी एवं चुग्गे के पात्र लगाए गए हैं। यहाँ सुबह-सुबह पक्षियों की चहक बीमार आदमी के लिए भी दवाई का काम करती है। इस दृश्य को शब्दों में अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता। बस, इसका आनंद तो इसे देखकर ही मिल सकता है।

इनकी संभाल करने वाले सहायक कर्मचारी सर्वश्री युगल नारायण रंगा एवं सीताराम बताते हैं कि पानी में गंगाजल डालकर इन पौधों का अभिषेक किया गया है। बी.जी.एच. पार्क एवं शिक्षक प्रतीक्षालय से होकर अब मैं मुख्य भवन में प्रवेश कर रहा हूँ। दाईं ओर पुस्तकालय-वाचनालय लिखा है। आइये, पहले इसी को देखते हैं। बहुत सुन्दर पक्के सफेद रंग से रंगा यह कमरा प्रेरणादायक सद्‌वाक्यों से सज्जित है। पुस्तकालय में रखी दो काँच वाली आलमारियों में झाँककर देखते हैं।

पीले कवर की बहुतेरी किताबों की तरफ इशारा करते हुए उप निदेशक श्री ओमप्रकाश सारस्वत बताते हैं कि आचार्य तुलसी सम्पूर्ण वाङमय की 108 पुस्तकों का यह सैट आचार्य तुलसी फाउण्डेशन द्वारा भेंट में मिला है जिसका मूल्य 32,000 रुपये है। दोनों आलमारियाँ ज्ञान फाउण्डेशन की साहित्यकार उषा किरण सोनी ने अपनी पुस्तकों के साथ उपलब्ध करवाई है। इसके अलावा विजय खत्री एवं श्रीगंगानगर के श्री नानक चन्द जैन ने भी पुस्तकें भेंट की हैं। उप निदेशक महोदय स्वयं बड़े लेखक साहित्यकार एवं सम्पादक हैं। वे जहाँ मुखिया होंगे साहित्यिक अनुष्ठान तो होंगे ही। वे शिविरा के वरिष्ठ सम्पादक रहे हैं। आज भी हमारे मार्गदर्शक बड़े भाई हैं। एक प्रशासनिक कार्यालय में पुस्तकालय-वाचनालय और वह भी शुद्ध जन सहभागिता से देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई।

इस पुस्तकालय-वाचनालय के ठीक सामने हैं DLSR (Digital Learning Solution Rooms) इसकी स्थापना भले ही शासन ने की है लेकिन अन्दर दर्शनीय स्थानों की फोटो फ्रेमिंग, घड़ी आदि लगाकर इसे बहुत सुन्दर बना दिया है। DLSR एवं पुस्तकालय के साथ की लॉबी में लगी 92 महापुरुषों की तस्वीरें, उन पर नामांकन तथा एक-एक महापुरुष का परिचय लिखवाकर 'महान विभूतियाँ' शीर्षक से एक रजिस्टर संधारित करना सब अद्‌भुत है। महापुरुषों को निहारते समय आप यदि किसी के बारे में जानना चाहें तो कहीं जाना नहीं है। बस यह रजिस्टर कुंजी (Key) की तरह उपलब्ध है। देखिए, पढ़िए और आगे बढ़िए। यहाँ सालासर बाबा एवं देशनोक माताजी के सुन्दर फोटो लगे हैं। एक बहुत सुन्दर नोटिस बोर्ड भी लगा है जिस पर आवश्यक सूचनाएँ टंगी हैं।

सामने ज्ञान दीर्घा का बहुत सुन्दर बहुरंगी साइन बोर्ड लगा है। यह शीशे का बना और बॉक्सनुमा है जिसमें ट्यूब लाइट लगी है। जग-मग कर रहा है। गीता के चौथे अध्याय के 38वें श्लोक 'न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते' को यहाँ उद्‌धृत किया गया है। यह श्लोक 'शिविरा' का भी ध्येय वाक्य है और यह भी संयोग है कि इस 'ध्येय' वाक्य की शिविरा में शुरुआत उप निदेशक श्री ओमप्रकाश सारस्वत के सम्पादन काल में हुई थी।

सामने दीवार पर लिखा है 'ज्ञान का पिलर।' 'ज्ञान के पिलर' पर एक घड़ी, महात्मा गाँधी की फोटो एवं एक बड़ा दर्पण लगा है। 'ज्ञान के पिलर' की व्याख्या करते हुए उप निदेशक बताते हैं कि महात्मा गाँधी के इस चित्र में लटकती घड़ी समय पर आने, हाथ में गीता की किताब कर्तव्य पालन करने तथा दूसरे हाथ में रही लाठी समय पर आने तथा दिनभर काम करने की आदत डालकर किसी भी प्रकार के दण्ड से बचने की परिचायक है। नीचे लगा बड़ा दर्पण यों तो आपकी शक्ल देखने के काम आता है लेकिन इसका आशय स्पष्ट करते हुए उप निदेशक महोदय कहते हैं कि यह स्वयं के भीतर में झांकने और समय-समय पर स्वयं की समीक्षा करने का भी संदेश देता है। 'ज्ञान का पिलर' वाकई ज्ञान का संदेश दे रहा है। हमें इसके आशय को समझना चाहिए। ज्ञान दीर्घा में 60 फोटो फ्रेमिंग लगे है जिनमें विशेष कर बीकानेर के रियासतकालीन परिदृश्य को समझाने का प्रयास किया गया है। विक्रम संवत 1545 में वैशाख सुदी बीज के दिन बीकानेर की स्थापना हुई थी। उस समय का प्रसिद्ध दोहा यहाँ अंकित है, जो इस प्रकार है -

पन्द्रह सौ पैंताळवे, सुद वैशाख सुमेर।
थावर बीज थरपियो, बीके बीकानेर ।।

महाराजा गंगासिंह जी के विविध फोटोग्राफ यहाँ लगे हैं जिनमें उनका 07 वर्ष की उम्र का फोटो आकर्षण का केन्द्र बना है। इस अवस्था में उन्होंने राज गद्‌दी पर कार्यग्रहण किया था। उनके द्वारा नगर सेठ लिखमीनाथ (लक्ष्मीनाथ) जी के मंदिर की सीढ़ियों पर चढ़ते, मंदिर में चँवर ढुलाते, तुला दान करते, शिकार करते, राज दरबार लगाते, 1937 में भव्य गोल्डन जुबली समारोह, वायसराय माउण्ट बेटन की यात्रा के समय लगा दरबार, गंगा गोल्डन जुबली, म्युजियम के उद्‌घाटन, महाराजा कर्ण सिंह द्वारा नाव तोड़कर 'जय जंगल धर बादशाह' का खिताब लेना, औरंगजेब द्वारा अपने रुमाल से बीकानेर के राजा के कपड़ों पर लगी रेत झाड़ना, रसिक शिरोमणि मंदिर, करणी माता का मंदिर, कोलायत झील, गजनेर पैलेस, महाराजा डूँगर सिंह की संगमरमर की प्रतिमा, पब्लिक पार्क में स्थित शहीद टावर, राजकुमारों के फोटो, 1930 में गोलमेज कॉन्फ्रेंस में जाने के समय महाराजा गंगासिंह का फोटो, बीकानेर की सेनाओं के फोटो, वीर योद्धाओं के फोटो आदि अनेक अद्‌भुत फोटो यहाँ संजोए हुए हैं। सन् 1921 में प्रिंस ऑफ वेल्स की बीकानेर यात्रा के समय के फोटो एवं रिपोर्ट के साथ 1912 में पब्लिक पार्क के उद्‌घाटन के अवसर पर महाराजा गंगासिंह द्वारा दिए गए भाषण का अविकल प्रारूप यहाँ ज्ञान-कक्ष पुस्तकालय में संजोया हुआ है।

कार्यालय की हर दीवार और कमरों में जगह-जगह ज्ञान तो संजोया गया है ही, बरामदों एवं कमरों में सुन्दर फोटोग्राफ एवं मनमोहक पौधों के गमले भी कार्यालय की शोभा में चार चाँद लगा रहे हैं। कार्यालय भवन की साफ-सफाई मन मोहने वाली है। कहीं भी पान की पीक अथवा जाला अथवा कचरा आपको नहीं मिलेगा। कार्यालय भवन का प्रति तीन दिन से डिटेल निरीक्षण किया जाता है। इसका लेखा-जोखा रखने का चार्ट बहुत सुन्दर तरीके से दीवार पर लगा रखा है। कार्यालय के सभी कार्मिक एक टीम के रूप में काम करते हुए अथक परिश्रम करते हैं। उनके लिए शिक्षक कार्यालय का सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति है और वे उनके कार्य करने के लिए हर समय आतुर रहते हैं। उपनिदेशक महोदय के कथनानुसार इस कार्यालय में शिक्षकों के सेवा संबंधी कोई भी कार्य बकाया नहीं है। मिशन मेरिट, टारगेट शत प्रतिशत, शिक्षक डायरी का संधारण, गृह कार्य देने की विशिष्ट व्यवस्था, विद्यालय भवनों के संधारण के निर्देश, नियोजन एवं समीक्षा बैठकें, परिवादों का निस्तारण, शिक्षकों की गोष्ठियाँ, शिक्षकों एवं कर्मचारियों का सम्मान, विद्यालयों का वृहद स्तर पर निरीक्षण एवं सम्बलन, ये सब उप निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, बीकानेर मण्डल बीकानेर कार्यालय की विशेषताएँ हैं। इस कार्यालय में स्थापित ज्ञान दीर्घा का अवलोकन करने के लिए शिक्षकों के अलावा विद्यार्थी एवं उनके अभिभावक तथा आम नागरिक भी कार्यालय में आते रहते हैं। संक्षेप में इस कार्यालय का अवलोकन करके मैं अभिभूत हूँ। इस प्रकार बिना सरकारी सहायता के जनसहयोग से सपनों को साकार करने की कर्मस्थली के नेतृत्वकर्त्ता व उनकी टीम को धन्यवाद देते हुए यहाँ से प्रस्थान करता हूँ। मुझे आशा है कि शिक्षा विभाग के सभी कार्यालय व विद्यालय इस प्रकार के अनुकरणीय प्रयास करेंगे।

वरिष्ठ सम्पादक
शिविरा, मा.शि. राजस्थान, बीकानेर
**मो. 9413926806**

# पुस्तक समीक्षा

## दो फाड़

**कवि** : बी.के. व्यास 'सागर' **प्रकाशक** : मण्डल प्रकाशन, मेड़ता, नागौर **पृष्ठ** : 96 **मूल्य** : ₹ 200
**प्रकाशन वर्ष** : 2013

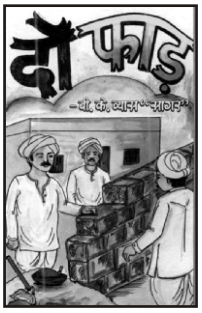


42 कवितावां रौ संग्रै 'दो फाड़' राजस्थानी पद्य री सांतरी कृति है। मायड़ भासा राजस्थानी रै मान्यता आन्दोलन नै मजबूती देवण सारू कविता संग्रै मायड़ रा हेतूळावां नै निजर करै। सागर राजस्थानी फिल्मां रै सागै हिन्दी अर मराठी फिल्मां में भी आपरै अभिनय री धाक जमायी है। इण रै अलावा संवाद लेखन, वृत्तचित्र अर पत्रकारिता में भी सांगोपांग काम करियौ है। आपरी रचनावां चावी-ठावी पत्र-पत्रिकावां मांय छपती रैयी है। मिळनसार, सरल चित्त, शांत सुभाव अर कोयल कंठा रा धणी सागर राजस्थान भासा रा लूंठा हिमायती है।

इण संग्रै री कवितावां आसै-पासै रै समाज, राजनीति अर घटनावां नै सेंवटता थकां शब्दां रै मंडाण रै मारग आगै बधै। सागर री कवितावां में आखै जियाजूण री अबखायां रो दीठाव है तो साथै ही मानखै रै घर परवार, पास-पड़ौस, गाँव-गुवाड़ी, देस-दिसावर आद सगळा पखां रौ सांतरौ बरणाव इण कवितावां में मिळै। 'दो फाड़' कविता संग्रै अेक कांनी संयुक्त पिरवार, संस्कार, तीज-तिंवार, संस्कृति, खांण-पीण, रिस्ता-नाता आद नै उकेरै तो बीजै कांनी देसभगती, पर्यावरण संरक्षण, अकाळ सरोगेसी, दहेज, आत्महत्या, साम्प्रदायिक सद्भाव सरीखी लाखीणी कवितावां री पोटळी सी लखावै।

आज रौ मानखौ गोडा माथै घड़ै अर भांगै। घणकरां जोध-जुवान 'मसाणिया बैराग' री गत ईज आपरी मंजळ तय करै पण पूरौ कदेई कोनी। 'मसाणिया बैराग' कविता मानखै रै क्षणिक विचारां माथै सखरी टीप है जिकी ठौड़-ठाया माथै उपजण आळा विचारां रौ ठौड़ सूं नीसरिया पछै अेकदम मिट जावै। यूं लखावै' क बै विचार कदेई उणां रा हा ईज नीं।

'जै जवान-जै किसान' नारा नै पोखता थकां इण संग्रै में कवितावां सामळ हुयी है। 'मां री लाज' कविता में मां आपरै पूत नै केवै'क म्है तो थारी मां हूं पण भारत मां आखै देस री मां है। इण खातर तूं आपरी जिनगाणी सगळा री मां सारू निछरावळ कर दै अर म्हारै दूध री लाज राख लै। बेटा/म्है तो फकत/थारीज माँ हूँ/पण थनै/

'सांतरी मौत' कविता अेक फौजी रै शहीद रौ जीवंत-चितरांम है। जिको मिनख नै सखरी अर सांतरी मौत मिळण रौ मान-मरजाद बतावै। तो 'ताबीज' कविता में कवि आपणै देस रै मंगळ सारू अैड़ो ताबीज चावै जिण सूं आखौ भारत सुख, शांति, समृद्धि अर सुकून सूं जी सकै। 'तिंवार', 'काळ' अर 'उडीक' कवितावां किसानां री माड़ी गत-हालत नै चौवड़े करै। मरुधरा में बरखा री उडीक हरमेस रैयी है। किसान बधतै करजै ने चुकावण री आस अबकै बरस रै जमानै सूं राखै पण आ आस भगवान पूरै कोनी। राजस्थान में तीज-तिंवार रौ महतब न्यारौ-निरवाळौ हुवै। पण जद लगोलग काळ माथै काळ पड़ै तद तिंवारा रौ फीकोपणौ अर लूखोपणौ साम्ही आवै। पण काळ रा थपेड़ा रै आगै तिंवार आपरौ वजूद सोधता सा लागै।

खाली होयोड़ा खौज्या
भूलाय दीन्हा अठै
तिंवारा रो मतळब।

साम्प्रदायिक सद्भाव नै पोखता थकां कवि लिखै'क हिन्दू-मुसळमानां में आपसरी रो हेत, सनेव, भेळप अर भाईचारै ने कुण 'टोकार' लगायसी।

रंग अर गुलाल सूं/होळी खेळण वाळा/लोई सूं हाथ/रंग लीना/कुण जाणै/ म्हारा गांव नै/किण री टोकार/लागगी?

कवि 'खातमौ' कविता में आपघात करणिया मिनख नै चेतावै अर उणरी भूमिका कांई है, उण रै मरणै पछे पिरवार माथै कांई आफत रा पहाड़ टूटैला, आद नै साम्ही राखै अर उणां नै चेतै करावण री ठावकी आफळ करै। कांई हुसी माँ-बाप, भाई-भावज, बैनड़-लुगाई रौ जिकौ थारै सूं चावै सुनहरा सुपणा रौ संसार, बै पाळी है रंगीन जिनगाणी री आस।

मां-बापां रै/सुपणा रा कै होसी/जिका देख्यां/औलाद रे जलम सूं।

'पिणघट' कविता जनसंख्या नियंत्रण सूं हुवण आळा नफा-नुकसाण री विगत बतावै। सांनी करै टाबरां री सुख-सुविधावां सारू नानौ पिरवार-हीज पूज आ सकै, मोटो पिरवार नीं। तो 'थूं कुण' कविता डॉक्टरां री गलती माथै झपीड़-सपीड़ मेळै। जिण डाक्टरां नै लोग भगवान मानै आज बै रूपली रै रंग मांय रंगीजता जावै है।

जीवतां अर/मरियोड़ा री/ओळख नीं/ कुण बणायौ तने डाक्टर।

'नोटो' कविता ईवीएम मशीन मांय नूवै खटकै री बात करै। जिणसूं बोटर सगळा उम्मीदवारां नै छोड़ कर वोट री ताकत री पिछांण साम्ही ला सकै। औ बदळाव बोटर नै नूंवी हूंस देवै।

दायजो अर बाळ-ब्याव आपां रै देस-प्रदेस री लूंठी अबखायां मांय गिणीजै। कवि 'नूंवी बिनणी' कविता में दायजै सारू हत्या ने आपघात रौ रूप देवणियां मिनखां सूं सीधोसट सवाळ करै'क बिनणी रै सागै सास क्यूं नीं बळै, भावज रै सागे नणदल बैरा में क्यूं नीं कूदै। कवि री आ पड़ूतर सैली पाठकां रै हियै ढूकै अर नूंवी सोच सारू मजबूर करै। बिनणी अर बेटी दोनूवां नै बराबर मानण री सीख देवै।

पण-/या बात/केदैई/नीं तो पढ़ण में
आयी/अर/
नीं इ सुणण में/कै/बीनणी रै सागै/
रोटियां पोवती/सासू बळ'र/सुरगा सिधारगी।

बाळ ब्याव सैं सूं बैसी हुवै-आखातीज नै। आज रौ जमानौ इण ब्याव ने अपराध मानै पण जद घणकरां लोग राज सूं छानै-छुरकै धीगाणै हीज बाळ-ब्याव कर देवै। तो जुल्म रौ घर हुवै। जद अै बिन्द-बिनणी पढ़-लिख'र बालिग हुवै तद वां नै इण रौ अणूंतौ पिछतावौ हुवै। कवि रै शब्दां में-

मोटा व्हीया बे/दोन्यू'इ कोसे/उण घड़ी ने/अर मायता नै/जिण घड़ी फेरा लिया/अर ब्याव मंड्यौ।

'गैली' कविता मानसिक विमंदित मिनखाजूण रौ चित्रात्मक बरणाव है। इण कविता में कवि गैला लोगां रौ जीवंत चितराम उकेरियो

है जिको मानखै रै अंतस नै सपरस करै। मानवीय संवेदना नै फंफेड़ता थकां कवि लिखै–

पैला तो उमर मुजब/भाजती–नाटती/हाथां में
लियौड़ा भाटा/लारला बरसां/बिगड़ियौड़ी
गाय/भेंटी मार दीनी/अर/तोड़ दियौ उणरौ–
चूळयौ/अबै/पगां नीं चालै/फकत ठीड़ीजै।

संयुक्त पिरवार रै टूटण नै कवि लिखै–'दो फाड़'/आं कविता सगळी ठौड़ हुय रैया दोय फांटा री बात करै। चाहै पिरवार ही, समाज हो, धर्म हो, राजनीति हो कै बीणी बात, साव साम्ही दीखै दो फाड़ है।

'सूरज', 'बारणा' अर 'बूढ़ो बड़लो' संयुक्त पिरवार टूटण रौ दरद माण्डै। तो 'बगत' कहाणियां रो बगत' संस्कृति री बात करै। 'बदळाव' बखत रै बायरै रौ झोलो देवै तो 'सीख' कविता बेटी री जिनगाणी रौ तमासौ नीं बणावण री सीख देवै।

कवि आपरी कवितावां में लयात्मकता माथै खास ध्यान दीनौ–जियां देखतां–देखतां/ डब्बौ राख व्हैग्यो/अर/डब्बा रै मांय/ बैठयोड़ा मिनखां रो/जीवतां ई/दाग व्हैग्यो।

कवि री भासा आम बोलचाल री हुवण सूं हरेक पाठक तांई सावसोरी पूगै। भासा में कूड़ो बणावटीपणो नीं है अर नीं ही कूड़ी पिण्डताई निगै आवै। सरल, सरस भासा इण संग्रै नै चावौ बणावै। आ काव्यकृति कला पख अर भाव पख दोनूवां नै ठावी ठौड़ देवै। कवि 'माँ' रै भाव नै प्रगटै तो मुहावरां कैवता अर सटीक शब्दां रो चयन भी सांतरौ करै। कवि रौ देसी शब्दां रै सागै आंचलिक प्रभाव सूं मुगत नीं हुवणौ थोड़ोक अखरै पण खटकै कोनी। आज राजस्थानी कवि आंचलिकता नै पौखे है तो कोई अणूंती बात कोनी लागै। पण भासा री मानकता सारू मान्यता नै झाडी–माती करण री बात आवै तद–आंचलिकता सूं आंतरै जायर अेक रूपता रौ दीठाव जरूरी लखावै। इण भांत 'दो फाड़' काव्य संग्रै विविध विषयां नै परोटता थकां मानखै री पीड़ नै अंतस री गैराई सूं समझ'र ठावका शब्दां में पिरोवै है।

समीक्षक : **डॉ. रामरतन लटियाल**
प्राध्यापक
रा.आ.उ.मा.वि. बालवा (नागौर)–341001
**मो :9783603087**

## वक्त की ठण्डी रेत पर

**कवयित्री** : डॉ. कृष्णा आचार्य, **प्रकाशक** : कलासन प्रकाशन, बीकानेर **संस्करण** : 2016
**पृष्ठ संख्या** : 80 **मूल्य** : ₹ 200

यह एक तरह से अच्छा ही है कि साहित्य में कविता की कोई एक मानक परिभाषा नहीं है। शास्त्रीय काव्य शिल्प के इतर यदि नई कविता की नाप जोख के लिए भी पैमाने तय कर दिए जाते तो शायद आज नई कविता वैचारिक, बौद्धिक और संख्यात्मक रूप से इतनी समृद्ध नहीं होती। छन्द मुक्त कविता का वितान इसीलिए इतना विस्तृत है कि यहाँ प्राथमिकता अभिव्यक्ति को है, शिल्प को नहीं। डॉ. कृष्णा आचार्य के सद्य प्रकाशित कविता संग्रह 'वक्त की ठण्डी रेत पर' से गुजरते हुए पाठक भावुक कविता का रसास्वादन करते हुए ऐसी अनेक बातों और सवालों से भी गुजरता है। डॉ. आचार्य के कविता सृजन की समीक्षा यहाँ से आरम्भ होती है कि वे अपने लेखन के प्रति पूर्णरूपेण ईमानदार लेखिका है। अपने स्तर पर ईमानदार रहने की कोशिश आपके रचे हुए को समकालीन परिवेश के लिए अर्थपूर्ण बनाती है, इसलिए 'वक्त की ठण्डी रेत पर' संग्रह की कविताएँ अर्थपूर्ण होने के कारण समकालीन परिवेश के लिए अत्यन्त उपयोगी हैं।

जीवन और संसार को देखने की एक विशिष्ट मौलिक दृष्टि रखने वाला लेखक ही सृजक के रूप में कविता–कहानी जैसी विधाओं में लिखने का साहस जुटा सकता हैं।

'वक्त की ठण्डी रेत पर' के पृष्ठ दर पृष्ठ पलटने पर ज्ञात होता है कि डॉ. कृष्णा आचार्य का काव्य आकाश व्यापक और विस्तृत है। उनकी काव्य चेतना स्व से प्रारम्भ होकर असीम विस्तार लेते हुए सम्पूर्ण सृष्टि की चिन्ताओं को अपने भीतर ग्रहण कर लेती है। संग्रह की पहली कविता वे माँ के नाम लिखते हुए कहती हैं – 'आँचल बना अनमोल देवालय/लोरी मंगल गीत सुनाती/संस्कृति का पाठ पढ़ाती/जीवन को देती मुस्कान आसमान से रंग उड़ाती/ अनुभव से एहसास कराती आशा की बगिया महकाती/कुदरत का सुन्दर उपहार/ प्यारी मेरी माँ–मेरी माँ।' माँ के प्रति इन कृतज्ञ होने के भावों के साथ संग्रह की काव्य यात्रा आरम्भ होकर वेदनाओं–संवेदनाओं, विचारों और कई तरह के जीवनीय स्पन्दनों के पड़ावों पर ठहरते, उन्हें पार करते हुए आगे बढ़ती है। इस काव्य यात्रा के साथ–साथ चलने की सुखदानुभूति पाठक को यह होती है कि कवयित्री का दृष्टिकोण जीवन के प्रति अत्यन्त सकारात्मक है। 'वसन्त गीत गाएँ' कविता में वे कहती हैं–'आओ वसन्त गीत गाएं। पिता पर्जन्य अमृतबरसा माता धरती बून्दों संग नया आख्यान जगाएं। आओ वसन्त गीत गाएँ जीर्ण शीर्ण वृक्ष झर/नवल शृंगार करें/फलों के संग/भौंरों की गुंजन कली–कली महकाएँ आओ वसन्त गीत गाएँ।

डॉ. कृष्णा आचार्य अपने दैनिक जीवन के व्यवहार में जितनी सहज और सरल हैं उतनी ही सहज–सरल वे एक कवयित्री के रूप में भी हैं। जिस तरह कविता के शिल्प को लेकर उनके मन में कोई आग्रह–पूर्वाग्रह नहीं है, ठीक उस तरह उनकी कविताओं में शब्दों का पूर्व नियोजित आडम्बर भी देखने को नहीं मिलता है। कविता लिखने का उनका प्रयोजन अपने मन की बात कहना है, वह अभिव्यक्ति स्वाभाविक रूप से जिन शब्दों में हो रही है, उसमें वे जबरदस्ती के क्लिष्ट शब्द ठूँसकर कृत्रिमता नहीं आने देती। अभिव्यक्ति की सहजता के उदाहरण के रूप में ये पंक्तियाँ उद्धृत की जा सकती हैः–'भ्रष्ट आचरण डसता जीवन/साँच आँच में पलता जीवन/देश चमन को जलने से/रोक सको तो रोक लो/चोर बाजारी सीना ताने/खुले घूमते आतंक मचाने/जहर उगलते नागों को/रोक सको तो रोक लो।'

उपर्युक्त पंक्तियों के उदाहरण से काव्य भाषा की सहजता के साथ ही यह भी स्पष्ट होता है कि एक रचनाकार अपने रचना कर्म में अपने समय की चिन्ताओं से जूझता है। वह रचनात्मक होता ही इसीलिए है कि उसकी चिन्ताओं का दायरा बहुत ही व्यापक और विस्तृत होता है। एक आम आदमी के चिन्तन के केन्द्र में जहाँ उसका घर–परिवार, संतति, सम्बन्धी और उसका व्यक्तिगत जीवन ही रहता है, वहीं रचनाकार की चिंताओं के केन्द्र में उसके समय की विसंगतियाँ, विकृतियाँ शामिल रहती हैं। वह भी अपने परिवार का चिन्तन करता है लेकिन

उसका परिवार यह सम्पूर्ण धरती होती है। 'वसुधैव कुटुम्बकम' का भाव प्रत्येक रचनाकार के चेतन-अवचेतन में कहीं न अवस्थित रहता ही है। डॉ. कृष्णा आचार्य भी इसकी अपवाद नहीं है। इस कथन की पुष्टि उनकी कविता 'धरती का ऋण' में होती है-'सकल विश्व करोड़ों हाथ स्वयं उखाड़े अपने पाँव/ कैसे बने धरा स्वर्ग जब/अपने विष फैलाए आज जो कवयित्री सम्पूर्ण धरती पर तेजी से फैल रहे आतंकवाद रूपी विष से व्यथित है, वे अपने देश की अव्यवस्थाओं से भला किस तरह आक्रोशित-आन्दोलित नहीं होगी। 'कैसी ये आजादी' कविता में वे पूरी निर्भीकता के साथ अपनी आवाज बुलन्द करती हैं-'कैसी ये आजादी है/जो खोई शान्त अंधियारों में/ प्रतिशोध डोलता गलियारों में/ भ्रष्ट आचरण सेहरा बाँधे/ अपने ही अपनों को मारे/ अखण्ड भारत के टुकड़े करने/अन्दर गहरी साजिश है/ नहीं ये आजादी नहीं/खामोशी है गहरी/ परत चढ़ाए मिट्टी/संग पहचान पुरानी।'

डॉ. कृष्णा आचार्य की कविताओं में नारी विमर्श एक महत्त्वपूर्ण पक्ष के रूप में सामने आता है। उनकी सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि वे पुरुष समाज की खिलाफत नहीं करती लेकिन नारी की अस्मिता और बेटियों के संरक्षण संवर्द्धन के लिए प्रतिपल सजग दिखती हैं, एक बेटी को कवयित्री जिस नर्म भावुकता के साथ अनुभूत करती है वह पाठक को गहरे तक छू लेता है-'जब कभी उदास बैठती हूँ/मेरी नन्ही बेटी, कोमल हाथों से सहलाती/धीरे से पूछती-माँ क्या हुआ/स्पर्श कोमल फूलों सा बदल देता अश्रुधारा में/उमड़ पड़ता हृदय गले लगाने/ देख व्याकुलता उसकी/अहसास होता अपने होने का/अपनी नन्ही जान में। इन पंक्तियों में कवयित्री ने मातृत्व के सुकून को तो शब्द प्रदान किए ही हैं साथ ही यह भी उद्घाटित किया है कि बेटी चाहे छोटी हो या बड़ी उसमें संवेदनाओं का स्तर कितना ऊँचा होता है।

डॉ. कृष्णा आचार्य की कविताएँ जीवन का एक ऐसा रंग-बिरंगा कोलाज रचती हैं जिसमें मानव मन के महीन जज्बात हैं, रिश्तों की गर्माहट है, युगीन चिन्ताएँ हैं, प्रेमिल मन के छुए-अनछुए भाव हैं, रेत की सौंधी-सौंधी खुशबू है, परम्पराओं के टूटने के दर्द हैं, भारतीयता के प्रति गहरा अनुराग है, प्रकृति सा पौरुष लिए हुए पिता है, सृष्टि का आगाज बनने वाली माँ है, आँगन महकाती बेटियाँ हैं, माँ के आँचल में लिपटा हुआ निश्छल बचपन है, बन्द कमरों में रेज़ा-रेज़ा बिखरते अपने वजूद को संभालती बूढ़ी आँखें हैं और हर पतझड़ के बाद पूरे असर के साथ हर बार लौटकर आने वाला वसन्त है। यानी पूरे दावे के साथ कहा जा सकता है कि रचनाकार होने की सभी मूलभूत कसौटियों पर डॉ. कृष्णा आचार्य पूरी तरह खरा उतरती हैं। एक वास्तविक सृजनधर्मी में यह विशेषता होती है कि वह अपनी दो आँखों से इतनी बड़ी दुनिया के ज़र्रे-ज़र्रे को देख लेता है। इस संग्रह की कवयित्री भी अपनी निरपेक्ष दृष्टि से वह सब कुछ देख पाती है, जिसका किसी न किसी रूप में जीवन से परोक्ष-अपरोक्ष सरोकार है। अतः इस बहुआयामी काव्यकर्म के लिए डॉ. कृष्णा आचार्य साधुवाद की हकदार हैं।

'वक्त की ठण्डी रेत पर' काव्य कृति पठनीय व संग्रहणीय पुस्तक है किन्तु इसका प्रस्तुतिकरण थोड़ा और बेहतर हो सकता था। जहाँ तक कविताओं के शिल्प का प्रश्न है तो उसमें कहीं-कहीं कवयित्री असमंजस की स्थिति में दिखती है। कहीं कहीं कविताएँ छन्द में होने का एहसास दिलाती है तो कहीं पूर्ण रूपेण छन्द मुक्त नजर आती है। इस पाठक की मान्यता है कि एक संग्रह में एक ही तरह के शिल्प की कविताएँ हो तो बेहतर रहता है। डॉ. कृष्णा आचार्य की कविताएँ सुन्दर भावों वाली हैं वे पाठक के मन को गहरे तक स्पर्श करती हैं।

समीक्षक : **संजय आचार्य 'वरुण'**
उस्तों की बारी के बाहर,
महालक्ष्मी मंदिर के सामने, बीकानेर
**मो: 9982611866**

## सेल्फियाए हैं सब

**लेखक** : प्रमोद कुमार चमोली **प्रकाशक** : विकास प्रकाशन, बीकानेर **संस्करण** : 2017
**पृष्ठ** : 96 **मूल्य** : ₹ 200

साहित्य का मूल देखने पर अवलम्बित है। यह देखना साधारण आँखों से किया गया अवलोकन भर नहीं है बल्कि रचनाकार की आँखें वस्तु, व्यक्ति व परिदृश्य के रूप-स्वरूप तथा उसके निहितार्थों को गहराई से जान-समझ लेती है। व्यंग्य विधा में रचनाकार देखते हुए देश-दुनिया के साथ मानव मन के ओनों-कोनो की टोह ले लेता है। पंडितराज जगन्नाथ जब रमणीय अर्थ से युक्त शब्द को काव्य कहते हैं तब निश्चय ही उनके ध्यान में व्यंग्य सदृश कोई विधा रही होगी। व्यंग्यकार का समूचा रचना-विधान अपने इर्द-गिर्द व्याप्त विसंगतियों-विद्रूपताओं को उजागर कर उनमें सुधार-संशोधन की संभावनाओं को टटोलता है। व्यंग्य वह रचना है जो जग-जीवन की खामियों व विडम्बनाओं का दिग्दर्शन करवाते हुए भी सालती नहीं है बल्कि अपने चुटीलेपन से बेचैन कर देती है। उसकी तीखी धार सीधे अंतस में उतर जाती है। ये बेचैनी व्यक्ति को चिंतन-मनन के लिए विवश करती है जो कालांतर में बदलाव की भूमिका रचती है।

'यथास्मै रोचते विश्वम तथैदं परिवर्तते।' यानी कवि को जैसे रुचता है वैसे ही संसार को परिवर्तित कर देता है। यह उक्ति व्यंग्य विधा पर सोलह आना खरी उतरती है।

आज दुनिया जिस मुकाम पर खड़ी है वहाँ तीखी धार के व्यंग्यों की अधिक दरकार है। आज के अर्थप्रमुख समाज में दरकते जीवन मूल्य, मानवीय व्यवहार का दोगलापन, शिक्षा के प्रसार के बावजूद बढ़ते अंधविश्वास, सामाजिक ताने-बाने में बदलाव, परम्परागत जीवन शैली से मोहभंग, तकनीकी क्रांति, नौकरशाही के रंग-ढंग, सिकुड़ते सामाजिक सरोकार, टीआरपी के लिए मीडिया का भटकाव, कैरियर के लिए भागदौड़, भोग व

दिखावे की प्रवृत्ति, युवा वर्ग का अंतर्द्वंद्व जैसे अनगिनत विषय व्यंग्यकारों की कलम की प्रतीक्षा कर रहे हैं। प्रसंगवश यह भी कहना उचित होगा कि व्यंग्य विधा की आलोचना का पक्ष कमजोर रहा है। लम्बा अरसा नहीं हुआ जब व्यंग्य को विधा मानने पर भी सवाल उठते थे। कौन जाने व्यंग्य को सुधी आलोचक नहीं मिल पाए अथवा आलोचकों को स्तरीय व्यंग्य, मगर इतना तय है कि कविता-कहानी की तरह व्यंग्य विधा की सम्यक आलोचना नहीं हो पाई है। आलोचक अंकुश के अभाव में व्यंग्य विधा बिना बाड़ का खेत हो गई। जिसने जो चाहा, व्यंग्य के नाम पर परोस दिया।

ऐसे दौर में प्रमोद कुमार चमेली की पहली किताब के रूप में व्यंग्य संग्रह 'सेल्फियाए हैं सब' का आना सुकून देने वाला है। अठारह व्यंग्यों में पसरा किताब का कलेवर इसकी साख भी भरता है।

'सेल्फियाए हैं सब' व्यंग्य पुस्तक में आज के समय-समाज की धड़कन को स्पष्ट तौर पर सुना जा सकता है। बहुधा हम अपने इर्द-गिर्द मौजूद विसंगतियों को देखने से चूक जाते हैं। लेखक ने रोजमर्रा की जिंदगी का मौलिक दृष्टि से पर्यवेक्षण कर टटके व्यंग्य निकाले हैं। उनका परिवेश हमारा जाना-पहचाना है। विषयगत विविधता किताब का दूसरा सबल पक्ष है। तकनीक का बढ़ता दायरा, सामाजिक परम्पराएँ, चर्चा में रहने की चाह, बुद्धिजीवी तबके के चौंचले, बाजार की कार्यशैली, बिन मांगे सलाह देने की प्रवृत्ति के साथ लेखकीय जीवन के प्रसंग भी व्यंग्यकार की नजर से बच नहीं पाए हैं। देखा-भोगा कथ्य किसी व्यंग्य को मारक बना सकता है। किताब में संकलित व्यंग्य अनुभूत संवेदना व अन्वेषण का परिणाम है जो लेखक की बड़ी सफलता है।

आज के युग को अगर सेल्फी युग कहा जाए तो बेजा नहीं होगा। जिसे देखो वही सेल्फी लेने में मशगूल है। यह प्रवृत्ति एक महामारी का रूप धारण कर चुकी है। पहले लोग सुरम्य स्थानों पर घूमने जाते थे मगर अब सेल्फी लेने जाते हैं। हालात इतने भयावह हो चुके हैं कि लोग अंत्येष्टि के लिए जाते हैं और शव के साथ सेल्फी लेने से नहीं चूकते। शीर्षक व्यंग्य 'सेल्फियाए हुए हैं सब' में व्यंग्यकार ने 'सेल्फी' को परिभाषित करने का प्रयास किया है- ''हमने सेल्फी के गहन अध्ययन व लुप्तप्राय चिंतन जैसा भारी भरकम कार्य करते हुए, सेल्फी की नई परिभाषा गढ़ी है- सेल्फी स्वयं के द्वारा स्वयं का वह चित्र है जो इस मिथ्या जगत को विस्मृत करते हुए अपनी स्वमोह की ग्रंथी को शांत करने के लिए किया जाता है।'' (पृष्ठ 28)

तकनीक ने निश्चय ही हमारे जीवन को सुविधाजनक बनाने में अप्रतिम योगदान दिया है। मोबाइल, टीवी, कम्प्यूटर, इंटरनेट आदि ने अल्प समय में हमारे रोजमर्रा के जीवन में बड़ा बदलाव ला दिया है। इसकी लत एक बीमारी का रूप ले चुकी है। एक व्यंग्यकार की पैनी नजर इसकी अनदेखी कैसे कर सकती है। शीर्षक निबंध के साथ कविता में शामिल 'इस व्हाट्स एप्प के चक्कर में, फेसबुकिया बन गए हम तो, गूगलमय सब जग जानी व्यंग्यों में तकनीक के साइड इफैक्ट को कलात्मक ढंग से उभारा गया है।

'दुनिया में जीना है तो विवाद कर प्यारे' व 'कुछ भी करेगा हम तो' जैसे-तैसे चर्चा में बने रहने वालों की खबर ली गई है। कुछ लोगों की तो दुकानदारी ही विवादों के बलबूते चलती है। चमोली लिखते हैं, ''आपने अगर बाल की खाल निकालने का गुर सीख लिया तो आप में विवाद पैदा करने का गुण स्वतः विकसित हो जाएगा। इसके लिए आपको ज्यादा कुछ नहीं करना है बस हर बात की अपने ढंग से व्याख्या कर नकारात्मकता का छमका लगा कर निंदा करनी है। ऐसा करके बहुत से लोग 'ख्याति की वैतरणी' में तैर रहे हैं।'' (पृ. 52)

'इन लिफाफों के चक्कर में' विवाह व अन्य मौकों पर दिए जाने वाले लिफाफों की परम्परा की व्यंग्य की आँख से पड़ताल की गई है। व्यंग्यकार से ही सुनिए-''हमारे एक मित्र ने हमें एक अलग तरह का अनुभव दिया। लिफाफे में कितने रुपये देने हैं, इस बारे में उनका अलग ही दर्शन है। उन्हें जब भी किसी समारोह में जाना होता है पूरे परिवार को लेकर जाते हैं। पहले वहाँ खाना खाते हैं फिर अपनी धर्मपत्नी के साथ बैठकर तय करते हैं कि कितने रुपये लिफाफे में डाले जाने चाहिए।'' (पृ. 91)

व्यंग्य लेखक की यह जिम्मेवारी बनती है कि दुनिया को जाँचने से पहले अपनी बिरादरी की खोज-खबर ले। 'लो हम बन गए बुद्धिजीवी, लिखारे युग में वे पत्रवाचन व्यंग्यों में लिखने-पढ़ने वाले लोगों के जीवन की गहन पड़ताल की गई है। पढ़ने की संस्कृति कमजोर पड़ने का कारण तलाशते हुए लेखक जिस निष्कर्ष पर पहुँचता है वह जानने लायक है, ''आजकल अखबार की हैडलाइन भी जो पढ़ रहा है, तो समझ लो वह बहुत पिछड़ा हुआ है। आज अफसर फाइल में नोट भी नहीं पढ़ना चाहते। विद्यार्थी बिना पढ़े ही पास होना चाहते हैं। इस देश में बिल पास हो जाते हैं और कोई भी नहीं पढ़ता। माननीयों के भाषण भी पढ़े हुए मान लिए जाते हैं। अखबार में लिखने वाले भी केवल लिखते हैं।'' (पृ. 46) 'पत्रवाचन' निबंध में विमोचन समारोहों में पत्रवाचकों के शोषण को व्यंग्य का विषय बनाया गया है।

संग्रह के अन्य व्यंग्य आम आदमी की नाक, बोर हो गए यार, सॉफ्ट टारगेट, संजय शक्ति, ये बिल न होता बेचारा, होलसेल व छूट-लूट सके तो लूट, काश किसी की सलाह न मानते, हर मर्ज की एक दवा भी पठनीय हैं जिनमें विषय की गहराई व मौलिक दृष्टि स्थाई छाप छोड़ती है। इस संग्रह के माध्यम से लेखक ने अनोखेलाल नामक ऐसे पात्र से पाठकों को रूबरू करवाया है जो व्यंग्य यात्रा का सारथी प्रतीत होता है। भाषा की सहजता व्यंग्यों के सम्प्रेषण को सफल बनाती है। रोजमर्रा की बोलचाल में शामिल अंग्रेजी शब्दों का बेहिचक प्रयोग भाषा के प्रवाह को गति प्रदान करता है। कहना न होगा, इस संग्रह के आत्मीयतापूर्ण पाठ से प्रमोद कुमार चमोली हिंदी व्यंग्य विधा में बड़ी संभावनाएँ जगाते हैं। उम्मीद की जा सकती है कि नूतन विषयों, कथ्य की सूक्ष्मता व भाषाई कौशल को साधकर वे आगामी समय में व्यंग्य विधा को उत्कृष्ट रचनाओं से समृद्ध करेंगे।

पहली किताब होने के बावजूद यह संग्रह समकालीन व्यंग्य लेखन में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करवाने में सफल रहा है। मुझे भरोसा है कि सुधी पाठक इसके तन्मयतापूर्ण पाठ से आनंद की अनुभूति करेंगे।

समीक्षकः **डॉ. मदन गोपाल लढ़ा**
प्राध्यापक
144, लढ़ा निवास, महाजन, बीकानेर
**मोः 9982502969**

## चूरू

**रा.उ.मा.वि., रतनादेसर** को सर्व श्री दातार सिंह, मोहन सिंह, प्रेमदास, रेंवतराम, हेमसिंह, महेन्द्र सिंह, भगवान सिंह, नानूराम, देवीदत्त, उम्मेद सिंह, ओंकारमल, दुर्जन सिंह, गोपाला राम, हरि सिंह, पृथ्वी सिंह, दशरथ सिंह, नरेन्द्र (व.अ.), नगराज (व.अ.) असलम खान, रामगोपाल, कानसिंह, अमरदास, नेमीसिंह तथा श्रीमती प्रमिला प्रत्येक से 1-1 फर्नीचर मिला, प्रत्येक की लागत 1,100 रुपये। **सेठ जुहारमल सेठिया रा.उ.मा.वि., चाड़वास** में श्री खूमाराम गोदारा द्वारा एक कमरे का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 11,00,000 रुपये तथा शिक्षण व्यवस्था हेतु 1,40,000 रुपये विद्यालय को दिए, श्री प्रकाश चन्द्र भागूराम रायल द्वारा शिक्षण व्यवस्था हेतु 21,000 रुपये तथा 10 कुर्सी प्रदान की जिसकी लागत 15,000 रुपये, श्री हनुमान मल परताराम होदकासिया ने शिक्षण व्यवस्था हेतु 16,000 रुपये प्रदान किए, श्रीमती रतनी देवी मानमल बच्छावत से 6 लेक्चर स्टेण्ड प्राप्त हुए जिसकी लागत 17,000 रुपये, श्री प्रकाश कुमार लुणिया से दो कम्प्यूटर सेट प्राप्त हुए जिसकी लागत 51,000 रुपये। **रा.मा.वि. खारिया कनिराम तह. सुजानगढ़** को श्री भंवर लाल मीना (अध्यापक) ने अपने स्व. पिता की याद में विद्यालय को एक अलमारी सप्रेम भेंट की, जिसकी लागत 7,500 रुपये। **रा.मा.वि., गाजसर** को गीता मित्तल फाउण्डेशन द्वारा 20 जोड़ी लोहे की लम्बी डेस्क एवं बेंचें विद्यालय को सप्रेम भेंट, जिसकी लागत 30,000 रुपये। **रा.मा.वि.रेडा तह. बीदासर** में श्री सुरेश चन्द्र छरंग द्वारा पानी की टंकी का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 34,000 रुपये। सर्व श्री सुरेश छरंग, शिवलाल शर्मा, भंवर सिंह बिदावत (पूर्व सरपंच) मांगीलाल छरंग व महेन्द्र सिंह ने मिलकर एक कम्प्यूटर विद्यालय को भेंट किया जिसकी लागत 28,300 रुपये, श्री कुशाल सिंह, श्री हनुमान राम आंवला, श्री किशनाराम मेघवाल ने मिलकर एक प्रिन्टर विद्यालय को भेंट किया जिसकी लागत 12,000 रुपये, श्री जेठाराम आंवला द्वारा एक रेम्प निर्माण करवाया गया, सर्व श्री सुगनाराम जाट, श्री ओमप्रकाश शर्मा व श्री पृथ्वीराज छरंग ने मिलकर विद्यालय में बिजली फिटिंग रिपेयर करवायी तथा श्री तिलोका राम मेघवाल द्वारा शाला पर नाम लेखन का खर्च वहन किया। ग्राम के अन्य समाजसेवियों द्वारा पन्द्रह छत पंखे लगवाए, लागत 1,500 रुपये प्रति पंखा। **रा.मा.वि., महाराणा प्रताप चौक, सादुलपुर** को श्री मंजीत चौधरी द्वारा एक लाख पच्चीस हजार रुपये के दो बड़े इन्वेटर तथा 7 ट्यूबलर बेटरी विद्यालय को सप्रेम भेंट, श्री अब्बास कुरैशी से गरीब विद्यार्थियों को ड्रेस तथा एक लाख रुपये की लागत से C.C.T.V. कैमरे व LCD T.V., श्री कैलाश चन्द्र मोदी से 25 फर्नीचर सेट प्राप्त हुए, श्री छतरमल कोचर द्वारा विद्यालय को 50 फर्नीचर सेट व 15 अगस्त के पर्व पर समस्त इनाम व मिठाई, श्री दुगड़ परिवार से 25 फर्नीचर सेट विद्यालय को श्री राजकुमार धन्धावत से 11,000 रुपये नकद विद्यालय को पंखे हेतु भेंट, श्री मनोज कुमार (एडवोकेट) से 5,100 रुपये फर्नीचर हेतु प्राप्त हुए, श्री पूनमचन्द बोथरा से कक्षा में प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्र/छात्रा को 21,000 रुपये नकद। **रा.उ.प्रा.वि. हरियासर जाटान (सरदारशहर)** को श्री मनफूल सिंह सारण द्वारा 11,000 रुपये की लागत से विद्यालय के मुख्यद्वार का निर्माण करवाया गया। **रा.मा.वि., डाबला** को श्री भंवरलाल कस्वां व श्री शशिकान्त कस्वां (व.अ.) की प्रेरणा से ग्रामवासियों से फर्नीचर निर्माण हेतु 60,000 रुपये नकद प्राप्त हुए।

## जयपुर

**रा.उ.मा.वि., बापूगाँव (चाकसू)** में श्री रामधन मीणा एवं बन्धुजन द्वारा विद्यालय भवन के चार कक्षा-कक्षों में C.C.T.V कैमरे 4, उनकी फिटिंग एवं D.V.R. चैनल सहित 16,850 रुपये कीमत का कार्य करवाया गया है तथा गणतंत्र दिवस समारोह-2017 में विद्यालय के कक्षा-10 में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण 17 (सत्रह) छात्र-छात्राओं को लगभग 22,000 रुपये की राशि सहित डिक्शनरी व मोमेंटो पुरस्कार स्वरूप प्रदान किए गए है। श्री मुश्ताक खाँ (पूर्व प्रधान) से विद्यालय को 15,000 रुपये के स्टील फर्नीचर विद्यालय को सप्रेम भेंट। **रा.बा.उ.मा.वि., बस्सी** में श्री ओमप्रकाश डंगायच द्वारा इस विद्यालय में सात कमरों एवं छः शौचालयों का निर्माण करवाया जिसकी लागत 25,00,000 रुपये तथा इस विंग का निर्माण करवाने में श्री दामोदर प्रसाद डंगायच ने प्रेरक का काम किया। **रा.उ.प्रा.वि. मण्ढ़ा पं.सं. विराटनगर** में श्री शिवप्रसाद छापोला ने अपने माता-पिता की पुण्य स्मृति में (58×7 फीट का एक बरामदा का निर्माण करवाया जिसकी लागत 1,21,000 रुपये।)

## जैसलमेर

**रा. आदर्श उ.मा.वि., लाठी** को श्रीमती सवागी देवी चाण्डक ने अपने पति स्व. अमृत लाल चाण्डक (भूतपूर्व सरपंच) की याद में इस विद्यालय को वोल्टास वाटर कूलर 150 लीटर जिसकी लागत 45,000 रुपये, पानी की मोटर लागत 3,000 रुपये व 500 लीटर पानी की टंकी लागत 2,500 रुपये, फिटिंग विथ नल लागत 10,000 रुपये, पुराना कमरानुमा प्याऊ में चौकी का निर्माण, बिजली फिटिंग, पानी के नलों के नीचे संगमरमर की चौकी लागत 1,10,000 रुपये।

## जालोर

**रा. आदर्श उ.मा.वि., मड़गाँव** में श्री केसर सिंह द्वारा भव्य प्रवेश द्वार का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 5,00,000 रुपये तथा पोषाहार कक्ष का भी निर्माण करवाया जिसकी लागत 2,00,000 रुपये, श्री भोलाराम द्वारा प्याऊ का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 2,50,000 रुपये तथा विद्युत मोटर एवं अन्य सम्बन्धित सामग्री हेतु खर्चा- 6,000 रुपये, श्री लक्ष्मण सिंह द्वारा विद्यालय भवन में विद्युत फिटिंग लागत 1,00,000 रुपये साथ ही 100 विद्यार्थियों हेतु गणवेश एवं चरण पादुकाएँ लागत 80,000 रुपये, श्री विक्रम सिंह से सम्पूर्ण कम्प्यूटर सेट मय प्रिण्टर, टेबल आदि लागत 50,000 रुपये, श्री जोगसिंह से 50 विद्यार्थियों हेतु चरण पादुकाएँ लागत 18,000 रुपये, श्री दीपाराम से 200 थालियाँ, लैटर पैड, तस्वीरें, गार्गी पुरस्कार लागत 15,000 रुपये, श्री चन्दनसिंह से एक स्पीच स्टेण्ड लागत 5,000 रुपये, श्री जोगाराम से एक बड़ी अलमारी लागत 5,000 रुपये। **आदर्श रा.उ.मा.वि., बावरला** में श्रीनारायण सिंह सोलंकी एवं पृथ्वी सिंह सोलंकी द्वारा 2 कक्षा-कक्ष मय बरामदा तथा पेयजल व्यवस्था हेतु एक प्याऊ निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 15,00,000 रुपये। **आदर्श रा.उ.मा.वि. सरवाना पं.स. सांचोर** में अपने पति की पुण्य स्मृति में धर्म पत्नि श्रीमती पारुबेन, सुपुत्र हस्तीमल, चम्पालाल, मांगी लाल द्वारा 10,00,000 रुपये की लागत से विद्यालय में टीन शैड बनवाया।

शेष अगले अंक में.....

संकलन- रमेश कुमार व्यास

## हमारे भामाशाह

भामाशाहों के अवदान का वर्णन प्रतिमाह इस कॉलम में कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें। **-वरिष्ठ संपादक**



शिविरा पत्रिका (मासिक) : मई-जून, 2017 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। © वरिष्ठ सम्पादक : प्रकाश चन्द जाटोलिया, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

# चित्र वीथिका-मई-जून, 2017

माननीय केन्द्रीय कार्पोरेट एवं वित्त राज्य मंत्री श्री अर्जुनराम मेघवाल अजमेर में स्मार्ट कक्षा–कक्षों के लोकार्पण समारोह को संबोधित करते हुए, साथ हैं माननीय शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) राजस्थान सरकार प्रो. वासुदेव देवनानी, अतिथिगण एवं विद्यार्थीगण।

निदेशालय माध्य. शिक्षा राजस्थान, बीकानेर परिसर में दिनांक 17 अप्रैल 2017 को माध्यमिक शिक्षा निदेशक श्री बी.एल. स्वर्णकार आइ.ए.एस., अतिरिक्त शिक्षा निदेशक (मा.) श्री भवानी सिंह शेखावत, संयुक्त निदेशक (कार्मिक) श्री विजयशंकर आचार्य, अन्य शिक्षाधिकारी एवं कार्मिक वन विभाग के सहयोग से पक्षियों के लिए परिण्डे लगाते हुए तथा निदेशक महोदय कार्मिकों को पर्यावरण रक्षा संवर्धन की शपथ दिलाते हुए।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कोटड़ा (जवाजा) अजमेर को राष्ट्रीय स्तर पर 'विप्रो earthian' पुरस्कार प्रदान करते हुए विप्रो के अजीम प्रेम जी एवं सीईओ. श्री अनुराग बहर।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय नेवा की ढाणी, बाप, जोधपुर में व्याख्याता श्री बलवंतसिंह एवं अन्य कार्मिकों का सम्मान करते हुए ग्रामीण एवं शाला परिवार।

राज. चौपड़ा उच्च माध्य. विद्यालय, गंगाशहर, बीकानेर में कम्प्यूटर लैब, प्रधानाचार्य कक्ष एवं स्टाफ रूम के उद्घाटन अवसर पर माध्य. शिक्षा निदेशक श्री बी.एल. स्वर्णकार आइ.ए.एस., संयुक्त निदेशक श्री विजयशंकर आचार्य एवं उपनिदेशक बीकानेर मण्डल श्री ओमप्रकाश सारस्वत।

राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय भूपालपुरा उदयपुर में कक्षा–कक्ष का उद्घाटन करते हुए उदयपुर नगर निगम महापौर श्री चन्द्र सिंह कोठारी, यूआइटी. अध्यक्ष श्री रविन्द्र श्रीमाली, भामाशाह अध्यापिका एवं संस्था प्रधान।

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/417/2017-19 शिविरा पत्रिका (मासिक) ● मई-जून, 2017 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2 मई, 2017 पृष्ठ 52 ● प्रेषण : माह की 5-6 तारीख

# वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप

## श्रीश्यामनारायण पाण्डेय के खण्डकाव्य 'हल्दी घाटी' से साभार

गणपति के पावन पाँव पूज,
वाणी-पद को कर नमस्कार।
उस चण्डी को, उस दुर्गा को,
काली-पद को कर नमस्कार॥

मनभर लोहे का कवच पहन,
कर एकलिंग को नमस्कार।
चल पड़ा वीर, चल पड़ी साथ,
जो कुछ सेना थी लघु-अपार॥

घन-घन-घन-घन-घन गरज उठे,
रण-वाद्य सूरमा के आगे।
जागे पुश्तैनी साहस-बल,
वीरत्व वीर-उर के जागे॥

सैनिक राणा के रण जागे,
राणा प्रताप के प्रण जागे।
जौहर के पावन क्षण जागे,
मेवाड़-देश के व्रण जागे॥

जागे शिशोदिया के सपूत,
बापा के वीर-बबर जागे।
बरछे जागे, भाले जागे,
खन-खन तलवार तबर जागे॥

जब एक-एक जन को समझा,
जननी-पद पर मिटने वाला।
गम्भीर भाव से बोल उठा,
वह वीर उठा अपना भाला॥

पद पर जग-वैभव लोट रहा,
वह राजभोग सुख-साज शपथ।
जगमग जगमग मणि रत्न जटित,
अब से मुझको यह ताज शपथ॥

जब तक स्वतन्त्र यह देश नहीं,
है कट सकता नख केश नहीं।
मरने कटने का क्लेश नहीं,
कम हो सकता आवेश नहीं॥

विष-बीज न मैं बोने दूँगा,
अरि को न कभी सोने दूँगा।
पर दूध कलंकित माता का
मैं कभी नहीं होने दूँगा॥

रंग गया रक्त की प्राची-पट,
शोणित का सागर लहर उठा।
पीने के लिए मुगल-शोणित
भाला राणा का हहर उठा॥

कुम्भलगढ़ से चलकर राणा
हल्दीघाटी पर ठहर गया।
गिरी अरावली की चोटी पर
केसरिया-झंडा फहर गया॥

राणा प्रताप की जय बोलें,
अपने नरेश की जय बोलें।
भारत-माता की जय बोलें,
मेवाड़-देश की जय बोलें॥

संकलन: गोमाराम जीनगर, सहायक निदेशक, मा.शि.राज.बीकानेर मो.-9413658894

पत्रिका अवितरित होने की स्थिति में इस पते पर भेजें : वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा प्रकाशन, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर-334011